मण्डी का मैप

मण्डयाली और उसका लोक-साहित्य

2/6

@tankrilipi parul arora mandi

डॉ० कांत कात्यायन

प्रकाशक :-
कुमारसन्ज़, सोलन
[हिमाचल प्रदेश]

PARU

मण्डयाली
और
उसका लोक-साहित्य

@tankrilipi parul arora mandi

हे० कांत कात्यायन

प्रकाशक :-
कुमारसन्ज़, सोलन
[हिमाचल प्रदेश]

RRRLF

3549

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : दस रुपये * प्रथम संस्करण 1974 * लेखक : हे० कांत कात्यायन
Printed at KUMAR PRINTING PRESS, The Mall, SOLAN (Simla Hills)

इस पुस्तक का कोई भी अंश बिना लिखित अनुमति के किसी भी रूप में उद्धृत नहीं किया जा सकता।

@tankrilipi parul arora mandi

समर्पित

उन अज्ञात साहित्यकारों
को
जिन्होंने लोक-साहित्य सम्बन्धी
रचनात्मक कार्य कर इस भू-भाग
की 'कला एवम् संस्कृति' को
जीवित रखा।

॥ आमुख ॥

"मण्डयाली और उसका लोक-साहित्य" नामक इस पुस्तक को आज आपके सामने प्रस्तुत करते हुए अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

मण्डयाली लोक-साहित्य पर प्रकाशित होने वाली यह सर्वप्रथम पुस्तक है, जिस में मण्डयाली भाषा और उसके साहित्य को नये ढग से प्रस्तुत किया है। यहां के लोक-साहित्य में लोकगीतों में छींजों और छिजोटियों का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। इधर नये वर्ष का नया महीना आरम्भ होता है और उधर महिलाएं धूप की मीठी-मीठी तपस लेनी आरम्भ करती हैं। चारों ओर मन्द-मन्द हवा लहराने लगती है और पीपल, अंबुआ, बट्ट आदि वृक्षों की शाखाओं पर झूले पड़ने लगते हैं। चने भिगोये जाने लगते हैं और चरखे की घूं-घूं के साथ स्वर मिला कर समूहगान के रूप में इन अत्याधिक लोकप्रिय गीतों को गाना आरम्भ कर देती हैं :—

आया ओ महीना चैत, कि चिंता मोरे मन बसे,
कि हरी मोरे नाम की.........

फिर, सारा महीना इन्हीं स्वर लहरियों में गूंजता रहता है। इन्हीं गीतों में कहीं तो भातृत्व की झलक दिखाई पड़ती है

@tankrilipi parul arora mahdi

तो कहीं सास-ससुर, जेठ-जेठानी, देवर-देवरानी ग्रौर ननद की। कहीं प्रियतमा घूंघट उठा-उठा कर ग्रपने प्रियतम को निहार रही है तो कहीं प्रियवर नौकरी जाने के लिए ग्रपनी प्रियतमा से विदा ले रहा है। दूर गये प्रियतम को प्रेयसी काले काका द्वारा बुलावा दे रही है। इसी उधेड़-बुन में चैत्र मास बीत जाता है लेकिन उफ पिया नहीं ग्राये। विरह भावनाग्रों से दुखित, ग्रांसुग्रों की बरसात में वह गा उठती है :—

चल्यो महीना चैत कि ग्रज भी नी घर ग्रौंदे,
कि हरी मोरे मन के.........

ग्रर्थात् बसन्त का ग्रारम्भिक महीना चैत्र भी बीत गया पर मेरे मन के हरी, मेरे प्रियवर इस सुखद, सुहावनी ऋतु में भी नहीं ग्राये।

ग्रौर छिंजोटियां यहां के ऐसे गीत हैं जिन्हें यहां की महिलाएं बारह मास गाती रहती हैं। मुख्य रूप से इन लोक-गीतों में यहां के प्रेमी-प्रेमिकाग्रों के प्रणय सम्बंधी कहानियां वर्णित हैं :—

@tankhilipi parul arora mandi

जेठ माह की कड़ी दोपहरी में जब पंडित दूर गांव से वापिस ग्रा रहा होता है तो गांव की एक बाला धूप से बचने के लिए उसे छाता देती है। इसी दृश्य को यहां के ग्रज्ञात कवि ने निम्न ढंग से प्रस्तुत किया है :—

ग्रो घोघरा री धारा,
ग्रो मेरे बामणुए जो धूपा जे लगदा,
करी लैणी छतरू री छांव.........

ग्रर्थात् घोघर। एक उच्चा पहाड़ की पगडंडियों में से जाते हुए मेरे प्रियवर ब्राह्मण को जेठ की कड़ी धूप में झुलसना पड़ रहा है। मेरा जी चाहता है कि छाते से उन्हें छांव कर दूं। ताकि उनका यह ग्रसहनीय कष्ट टल जाए।

प्रकीर्ण साहित्य के ग्रन्तर्गत यहां की जनप्रसिद्ध कहावतों, ढकोसलों, पहेलियों, विचारों ग्रादि को संग्रहित किया गया है ग्रौर ग्रन्तिम भाग में मण्डयाली शब्दावली दी है। इस शब्दावली में स्थानीय ५०० ऐसे शब्दों को ग्रर्थ सहित दिया गया है, जो ग्रपने में एक विशेष उपलब्धी कही जा सकती है। यद्यपि मण्डयाली पर संस्कृत, राजस्थानी, हिन्दी तथा लहंदा का प्रभाव पड़ा हुग्रा प्रतीत होता है फिर भी कुछ ऐसे शब्द भी यहां बन गये हैं जिन्होंने ग्रपना स्थानीय रूप धारण कर लिया है। उदाहरण-स्वरूप "निंबल" शब्द को ही लीजिए इस शब्द से भले ही निर्मल (स०वि०) शब्द का बोध होता हो ग्रौर निर्मल का विकृत रूप भी हो लेकिन, यहां यह शब्द निर्मल ग्राकाश के लिए प्रयुक्त होता है। निंबल कह देने से ग्राकाश बादल रहित है का पूरा भाव व्यक्त हो जाता है। इसी तरह के ग्रौर भी बहुत से शब्द इस भाषा में हैं। ग्रतः ग्रन्त में मण्डयाली के शब्दों की एक सूचि भी तैयार कर दी है ताकि मण्डयाली सीखने वाले इच्छुकों को यथा सम्भवः सहायता मिल सके। इसके ग्रलावा, मण्डयाली के कठिन शब्दों के ग्रर्थ भी हिन्दी में दे दिये गये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के बारे में मुझे एक बात ग्रौर कहनी है कि जितना ग्रासान इस कार्य को समझा गया है यह उतना सुलभ नहीं है। मैंने क्रियात्मक रूप से देखा है कि इस कार्य में कितनी ही बाधाएं उपस्थित होती हैं। कहना न होगा कि यह पुस्तक

सम्भवत: बहुत पहले प्रकाशित हो गई होती यदि इस कार्य में बाधाएं न आई होतीं। यहां जितनी भी सामग्री दी गई है सभी कुछ दूर-दूर दुर्गम जगहों पर जा-जा कर इकट्ठी की हुई है। इस बीच कोई तो यह कह कर टाल देता कि हमें कुछ भी मालूम नहीं और जो कुछ बताता भी वह भी अधूरा। छींज और छिंजोटियों को इकट्ठे करते हुए भी कई ऐसे ही अनुभव हुए। कई गायिकाएं तो यह कह कर टाल देतीं कि यह छींजों का मौसम नहीं है और अधिक आग्रह करने पर यदि कोई गाने भी लगती तो बस अपनी ही धुन में और ऐसे में लिखना मेरे लिए कठिन हो जाता। एक तो शब्दों का ध्यान रखना पड़ता दूसरे इस बात का कि कोई पंक्ति छूट न जाए।

एक बार की घटना है कि मैं एक गायिका के घर पहुंचा। पहले तो कोई आस-पड़ोस का आदमी नहीं दिखाई दिया और न गायिका के घर का कोई आदमी। आखिर पूछताछ की जाये तो किस से? खैर, किसी तरह भी एक आदमी से भेंट हो ही गई। शायद उन्होंने मुझे अन्यमनस्क सा खड़े हुए देखा होगा। मेरे पास आ कर बोले, "आप यहां किसे देख रहे हैं?" मैंने नमस्कार करते हुए पूछा, "वैद्य जी किधर हैं? (गायिका के पति पेशे से वैद्य हैं, इस लिए मैंने उन से मिलना ही उचित समझा) उत्तर मिला—"इस समय तो उनके परिवार का कोई भी सदस्य आपको नहीं मिल सकता। वे तो कहीं विवाह पर चले गये हैं"। उस दिन मैं हताश हो कर वापिस घर आ गया। दूसरी बार जब उनके घर गया तो गायिका साहिबा घर के बाहर खुले प्रांगण में बैठी पशम साफ कर रही थी। पहले अभिवादन हुआ, पीछे उन्हें सारी बातें बताईं और साथ ही अपने आने का

@tankrilipi.parul.arora.mandi

कारण भी। लेकिन, उस बार भी उन्होंने यह कह कर बात टाल दी कि अभी मैं कार्यव्यस्त हूं फिर कभी आइएगा।

इस तरह इस पुस्तक को तैयार करने में आशा से अधिक समय व्यर्थ चला गया। कई परिस्थितियों ने तो मुझे इतना परेशान किया कि मैं हताश होते-होते बचा और जो कुछ भी उपलब्ध हो सका वह आपके समक्ष है।

जब मैं लोक-साहित्य की इस पुस्तक को अन्तिम रूप दे रहा था तो एकाएक विचार आया कि क्यों न इस क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा मण्डयाली के बारे में पाठकों को कुछ रोचक सामग्री पढ़ने को दी जाए। विचार शुभ थे। अत: भाषा संबंधी सामग्री जुटाने में भी काफी समय लग गया। पुस्तक के पहले भाग में मण्डयाली भाषा के उद्भव और विकास पर विस्तार से विवेचन किया गया है और साथ ही तथाकथित पहाड़ी भाषा पर भी कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है। आशा है भविष्य में लोक-साहित्य के किसी भी पहलु पर अनुसंधान करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा मुझे शक्तिरूप पूजनीय माँ से मिली। अत: उन्हें हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। मैं अपने पितृकल्प जेष्ठ भ्राता श्री रा० कृ० कात्यायन, 'वैद्य भूषण, संगीत विशारद' तथा परममित्र श्री सच्चिदानन्द शर्मा का आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने मुझे समय-समय पर इस कार्य को पूर्ण करने की प्रेरणा दी और प्रोत्साहित किया। मैं उन सभी आदरणीय महिलाओं और पुरुषों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूं जिन्होंने अपने सुमधुर कण्ठों द्वारा इन गीतों को

जीवन दिया ग्रौर संग्रहित करने में ग्रपना ग्रमूल्य समय दिया। मैं विशेषरूप से हिमाचल के लोकप्रिय प्रकाशक श्री राज कुमार जी का सर्वाधिक ग्राभारी हूं जिन्होंने इस पुस्तक का प्रकाशनभार संभाला ग्रौर इसे शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित कर मेरे प्रयत्नों को प्रोत्साहित किया।

ग्रन्ततः इस पुस्तक के माध्यम से दिनोंदिन विलुप्त लोक-साहित्य को प्रकाश में लाने का मेरा यह प्रारम्भिक प्रयत्न सफल रहा है ग्रौर इसे मैं हिमाचल लोक-साहित्क में विशेष उपलब्धि के रूप में मानता हूं। इसी में मेरी सफलता है ग्रौर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है।

—हे० कांत कात्यायन

"कात्यायन कुटीर"
मण्डी–175001
(हिमाचल प्रदेश)
10-7-74.

@tankrilipi parul arora mandi

	—ग्रामुख	ङ
भाग एक	—मण्डयाली भाषा	1
भाग दो	—छिंजे	31
भाग तीन	—छिंजोटियां	79
भाग चार	—प्रकीर्ण साहित्य	115
भाग पांच	—मण्डयाली शब्दावली	151

मण्डयाली भाषा (भूमिका)

[भाग एक]

@tankrilipi parul arora mandi

मण्डयाली और भारतीय भाषाओं में उसका स्थान

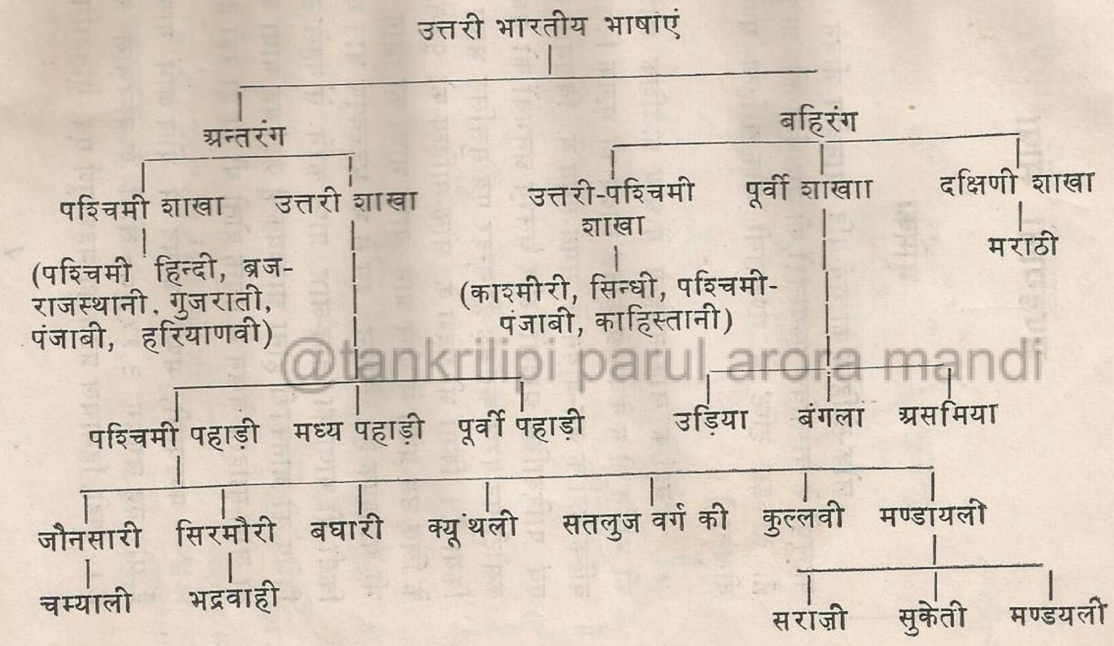

@tankrilipi parul arora mandi

PARU

मण्डयाली भाषा

भूमिका

लोक-साहित्य का अर्थ यदि मानवीय जीवन के विभिन्न पहलुओं के वास्तविक मूल्यस्तरों की यथार्थता को प्रस्तुत करना है, तो इस दृष्टि से मण्डयाली लोक-साहित्य अपने में पूर्ण दीखता है।

यहां के लोक-साहित्य में अन्य प्रादेशिक लोक-साहित्य की भान्ति ही न केवल प्राकृतिक सौंदर्य की झलक दिखाई देती है बल्कि यहां के जन-जीवन में समय-समय में विद्यमान सामाजिक एवं पारिवारिक आदर्शों और अलभ्य अनुभवों को यथार्थता की कसौटी पर परख कर बड़े ही सुन्दर एवं सुललित भाषा में प्रस्तुत किया है। किसी भी प्रदेश के लोक-साहित्य को पूर्णतः समझने के लिए उस प्रदेश में बोले जाने वाली भाषा का ज्ञान कर लेना भी आवश्यक है। लेकिन, इस से भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि किसी भी भाषा का ज्ञान-लाभ प्राप्त करने से पहले उस प्रदेश-विशेष की जानकारी होना आवश्यक है जहां वह भाषा बोल-चाल या लोक-साहित्य लेखन में प्रयुक्त होती थी या हो रही है।

@tankri lipi parul arora mandi

मण्डयाली, मण्डी जनपद में बोले जाने वाली भाषा है और यह लगभग ३,१५,१८० लोगों के बोलचाल की भाषा है। मण्डी, हिमाचल प्रदेश का महत्त्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक जिला

है। 'वर्तमान समय में यह लगभग ३,९४५ वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है। मण्डयाली भाषा का नामकरण मण्डी के नाम पर हुआ और मण्डी का नामकरण माण्डव्य ऋषि के नाम पर। इस भू-भाग के बीचों-बीज व्यास बहती है जो उत्तर-पूर्व से आती हुई उत्तर-पश्चिम की ओर नीचे मैदानों में प्रवेश कर जाती है। दूसरी महत्वपूर्ण सतलुज है जो उत्तर-पूर्व के दूसरे मुहाने से निकल कर इस भू-भाग की सीमा के साथ-साथ पूर्व दक्षिण की ओर जा कर बिलासपुर की सीमा में प्रवेश कर जाती है। तीसरी महत्त्पूर्ण नदी रावी है जो लाहुल के पहाड़ों से निकल कर चम्बा के निचले भाग को काट कर पश्चिम-दक्षिण की ओर चली जाती है। इन तीन नदियों के बीच के क्षेत्र का नाम महाभारत के सभापर्व और पाणिनीय व्याकरण में "त्रिगर्त" के नाम से पुकारा जाता है। "त्रिगर्त" नाम देने का मुख्य उद्देश्य उस समय के लोगों को दिशा निर्देशन करना ही था। क्योंकि उस समय दुर्गम पहाड़ियों को लांघ कर जाना कठिन होता था इस लिए वे इन नदियों के किनारे-किनारे पग-डण्डियां बना कर एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते थे।

@tankrilipi parul arora mandi

चूं कि उस समय व्यास नदी के गर्त के साथ-साथ पंजाब के होशियारपुर से कांगड़ा, हमरीपुर, मण्डी, कुल्लु, लाहुल-स्पीति किन्नौर के भू-भाग से हो कर तिब्बत व चीन तक या उत्तर प्रदेश तक आना-जाना सम्भव था। व्यापारी लोग जब पंजाब की ओर से आते तो अपने साथ दैनिक उपयोग की आवश्यक वस्तुएं बेचने के लिए लाते और तिब्बत, लाहुल-स्पीति या किन्नौर से जो लोग आते वे अपने साथ कालीन-गालिचे, पश्म के दोशाले या कीमती पत्थर आदि बेचेने के लिए लाते और मण्डी क्षेत्र में बाज़ार लगा कर वस्तुओं का आदान-प्रदान होता। मुख्य एवं

महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि इन लोगों में न केवल वस्तुओं का ही आदान-प्रदान होता था बल्कि साथ में भाषा का आदान-प्रदान भी होता चला गया। उस समय यहां वैदिक संस्कृति का बोल-बाला था और संस्कृत केवल साहित्यिक भाषा के रूप में प्रयुक्त होती थी। इन लोगों में जो भाषा बोली जाती वह दोहरी भाषा बन गई अर्थात् जो पंजाब की ओर से आते वह

मण्डयाली भाषा का वंशवृक्ष

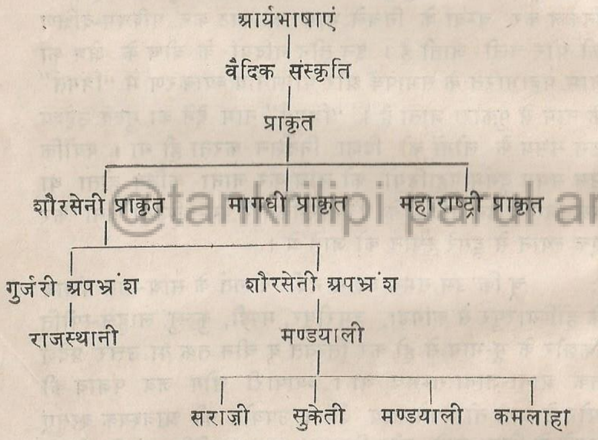

अपने साथ वहां की भाषा लाते और जो चीन, तिब्बत, लाहुल-स्पीति या उत्तर-प्रदेश की ओर से आते वह अपने साथ वहां की भाषा लाते। काल-क्रमानुसार यहां के मूल-निवासियों की

भाषा एक न रह कर कई भाषाएं हो गई जो सम्भवतः आगे चल कर प्राकृत नाम से प्रसिद्ध हुई। बाद में भाषा-शास्त्रीयों ने जब इन भाषाओं का वर्गीकरण किया तो इस के दो भाग कर दिये। एक भाग से पाली और दूसरे भाग से शौरसेनी, मागधी तथा महाराष्ट्री भाषायें बना दीं। सम्भवतः यह भी सत्य है कि यहां पर पाली भाषा का भी प्रचार था। इस का कारण यह है कि इस क्षेत्र में ८वीं शताब्दी में एक बौद्धभिक्षु अपने साथ बहुत सी बौद्ध पुस्तकें लाया था और रिवालसर नामक स्थान पर छोटा सा बौद्धविहार खोला था। तत्पश्चात् तिब्बत से बौद्धधर्मावलम्बी, उस समय का राजा लंगधर्मा तिब्बत से बहुत से बौद्धग्रन्थों को ले कर यहां आया था ताकि बौद्ध साहित्य को सुरक्षित रखा जा सके। यह भी सम्भव है कि बौद्धधर्म के प्रचारार्थ पाली भाषा का प्रभाव भी यहां के कई लोगों पर पड़ा हो।

धीरे-धीरे यही तीन भाषाएं आपसी पत्र-व्यवहार या व्यापारिक समझौते को लिखने के लिए प्रयोग होने लगी होगी। यहीं से लिपि का प्रश्न भी उठता है जिस के बारे में विस्तार से आगे विचार किया जाएगा। आगे चल कर शौरसेनी ने भी अपने मूल रूप में रह कर कई नवीन रूप धारण कर लिए। इस का कारण भी सम्भवतः लोगों का व्यापारिक दृष्टि से इस क्षेत्र में आना-जाना था। कई भाषाएं टूटती चली गईं और कई व्यवहारिक रूप में सुरक्षित रहने लगीं। आगे चल कर विद्वानों ने इन टूटती भाषाओं को अपभ्रंश का नाम दिया जिसके कई भेद बताए जाते हैं।

इसी शौरसेनी या उसकी अपभ्रंश भाषा से मण्डयाली

@tankhilipi pardi arora mandi

भाषा का जन्म हुआ। यह मण्डाली भी उन लोगों की भाषा बन गई जो व्यापारिक दृष्टि से इस स्थान पर आये और यहीं स्थाई रूप से रहने लग गये। यह कहानी ग्यारहवीं शताब्दी से पहले की है।

मण्डयाली भाषा

मण्डयाली भाषा पूर्ण रूप से कब विकसित हुई इस का निश्चित उत्तर देना कठिन है। लेकिन इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि इस भाषा को स्थाई रूप देने में घुमक्कड़ जातियों का बहुत बड़ा हाथ है जो गर्त में आती-जाती रहीं। इनमें कुछ जातियां आज भी हिमाचल में अस्थाई रूप से कभी एक स्थान पर और कभी दूसरे स्थान पर रहती हैं। या ग्रीष्मकाल में पहाड़ों पर और सर्दी में मैदानों की तराईयों में रहती हैं। ये जातियां गद्दी, गुज्जर, किन्नर, लाहुली (जिन्हें मण्डयाली में भोट भी कहते हैं) और पंगवाली हैं। इन में गुज्जर, जिनका निवास स्थान आधुनिक गुजरात और आधुनिक राजस्थान बताया जाता है— वे गुज्जर अपभ्रंश भाषा बोलते थे। इसी गुज्जरी अपभ्रंश से राजस्थानी का जन्म बताया जाता है। गुज्जर—जो एक घुमक्कड़ जाती है। अक्सर इस ओर अपने पशु ले कर आते थे और गर्मी के चले जाने तक इस भू-भाग में रहते थे। इस क्षेत्र में उस समय शौरसेनी भाषा बोली जाती थी। सम्भवतः हुआ यह होगा कि धीरे-धीरे एक दूसरे की भाषा का आदान-प्रदान होता रहा और उस के साथ-साथ कुछ खान-पान, रीति-रिवाजों और पहरावों को एक दूसरे ने अपनाना आरम्भ किया होगा। इस तरह से न केवल

भाषाई प्रभाव मण्डयाली पर पड़ा बल्कि वहां के संस्कृति को भी यहां के लोगों ने अपनाया।

वस्तुतः यही कारण है कि मण्डयाली भाषा राजस्थानी से सर्वाधिक प्रभावित है और वहां का रहन-सहन यहां के रहन-सहन से बहुत मेल खाता है। उदाहरणतः 'चोलु' यहां का प्रिय औरताना पहनावा था और राजस्थान में आज भी चोलु का महत्व घटा नहीं है। यहां पर बाजुबन्द, पैरों में फूल, तोड़े, न्योरा, गुठड़े इत्यादि गहनों का प्रचलन ठीक उसी प्रकार था जैसा राजस्थान में। गद्दी, किन्नर, लाहुली भी इस भु-भाग में आये लेकिन वे अपना प्रभाव कुछ भी शेष नहीं छोड़ सके।

दूसरा प्रभाव उन लोगों का पड़ा जो पंजाब की ओर से व्यापार करने की नियत से यहां आते थे। उस समय पंजाब में सिंधी तथा लहदां भाषा का प्रचलन था। लहदां भाषा जिस की लिपि लंडा थी—मण्डयाली भाषा की लिपि टांकरी से बहुत समानता रखती है।

काल-क्रमानुसार जब इस क्षेत्र में कुछ व्यापारी स्थाई रूप से रहने लग गये या यहीं के कुछ लोग व्यापार में चतुर हो गये तो उन्होंने अपनी भाषा मण्डयाली को विकसित करना आरम्भ किया होगा। अपने विकसित रूप में मण्डयाली भाषा कब आई—इस निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है। फिर भी अनुमान लगाया जाता है कि १५वीं शताब्दी के पहले से ही यह स्वतन्त्र भाषा के रूप में विकसित हो गई थी।

मण्डयाली भाषा की तीन बोलियां हैं। सराज़ी, सुकेती और मण्डयाली।

मण्डाली भाषा की कुछ विशेषताएं

मण्डयाली भाषा राजस्थानी और पंजाबी से प्रभावित होने के बाद भी अपना अस्तित्व पूर्ण रूप से बनाये हुए हैं। नीचे इसी प्रकार की कुछ विशेषताओं का उल्लेख किया जा रहा है :—

[१] **ल** का उच्चारण मण्डयाली में दो तरह से किया जाता है। कहीं दन्त **ल** और कहीं मराठी, गुजराती और राजस्थानी की तरह **ल़**। दोनों **ल** को लिखने का अन्तर केवल इतना ही है कि एक के नीचे बिन्दी लगा दी जाती है और दूसरे पर नहीं। बिन्दी वाले **ल़** का उच्चारण जीभा को तालु से टक्करा कर किया जाता है। कहीं-कहीं **ल** और **ल़** के प्रयोग से शब्दार्थ भी बदल जाते हैं। जैसे :—

(१) झोल—एक तरफ को अधिक झुकाव रह जाना।
झोल़—लस्सी को उबाल कर उस में नमक, हल्दी बगैरा डाल कर तैयार किया हुआ पदार्थ।

@tankrilipi parul argra mandi

(२) माल—सामान।
माल़—माला।

(३) काल—समय।
काल़—पेटू।

[२] मण्डयाली भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी हैं जिन का स्वतन्त्र अर्थ है और सम्भवतः किसी अन्य भाषा में उस शब्दार्थ के लिए एक शब्द नहीं है। देखिए :—

(१) निंवल़—निर्मल आकाश के लिए प्रयुक्त किये जाने वाला शब्द।

(२) मौहरा—खट्टाई लेकिन अधिक तेज़ न हो।

(३) दाहग—जीभ को अनुभव होने वाली तेज़ मिर्च खाने की अनुभूति के लिए प्रयोग होने वाला शब्द।

(४) लपोछणा—किसी अनोखी वस्तु को देख कर हैरानी में पड़ जाना और उसे एकटक देखते रहने की क्रिया के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द।

[३] कहीं **य** व्यञ्जन **ज** में बदल जाता है परन्तु साथ ही अर्थ भी बदल जाता है। जैसे :—

यात्रा—भ्रमण करना। (हिन्दी)
जात्रा—मेले आदि को जाना। (मण्डयाली)

[४] कहीं-कहीं **य** का **ज** बन जाता है परन्तु अर्थ नहीं बदलते हैं। निम्न उदाहरण देखिए :—

हिन्दी	मण्डयाली
(१) यम	जम
(२) यश	जस
(३) युग	जुग
(४) यशोधरा	जशोधरा
(५) यत्न	जतन

[५] मण्डयाली में कुछ ऐसे शब्द भी हैं जिन के अन्त में **स** आता है तो वह **ह** में बदल जाता है। लेकिन यह प्रणाली अन्तिम अक्षर के लिए ही प्रयुक्त होती है। इस तरह के कुछ

शब्द नीचे दिये जा रहे हैं :—

हिन्दी	मण्डयाली
(१) सांस	साह
(२) घास	घाह
(३) मास	माह
(४) ग्रास	ग्राह

[६] हिन्दी का **क्ष** भी कहीं-कहीं मण्डयाली में **ख** और छ में बदल जाता है। जैसे :—

हिन्दी	मण्डयाली
(१) दक्षिण	दखण
(२) लक्षण	लछण
(३) नक्षत्र	नछत्र
(४) क्षार	छार
(५) क्षमा	छमा

@tankrilipi parul arora mandi

[७] **न** का रूप भी **णा** हो जाता बल्कि यह मण्डयाली की विशेषताओं में सर्वाधिक प्रयोग होने वाला व्यञ्जन है। कुछ नमूने देखिए :—

हिन्दी	मण्डयाली
(१) जाना	जाणा
(२) नहाना	नहाणा
(३) जलाना	जलाणा
(४) पहनना	पैणणा
(५) सुखाना	सकोणा

[८] मण्डयाली भाषा की वर्णमाला में तालव्य **श** नहीं है। उस के स्थान पर दन्त्य **स** का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार के कुछ शब्द देखिए :—

हिन्दी	मण्डयाली
(१) शिकारी	सिकारी
(२) शास्त्री	सास्त्री
(३) शाम	सवेल
(४) शत्रु	सत्रु

[९] मण्डयाली भाषा की वर्णमाला में कुछ व्यञ्जनों को आकार में लिखा गया है और पढ़ा भी उन्हें उसी प्रकार जाता है। यथा :— **ग, ज, ड़, द, न, ब, म, य, र, व, स, छ** के स्थान पर **गा, जा, ड़ा, दा, ना, बा, मा या, रा, वा, सा, छा** लिखा जाता है। लेकिन बोलने और लिखने में **य** की जगह **या** नहीं **य** ही पढ़ेंगे।

[१०] हे को स्वर में रखा गया है और ह को व्यञ्जनों में।

[११] अधिकांश व्यञ्जनों को आधे लिखने का प्रचलन है। इसी प्रकार के कुछ शब्द देखिए :—

(१) ल्वाही—ढलान की ओर उतरने की प्रक्रिया के लिए प्रयोग होने वाला शब्द।
(२) फ्याड़ा—संदेश पहुंचाना।
(३) स्वाड़ मकान के साथ वाली बगिया।
(४) ट्याला—चबुतरा।
(५) ढ्वाण —ऊपर ओढ़ने का वस्त्र।

(६) घ्योर—मैदे द्वारा तैयार किया विशेष खाद्य पदार्थ।
(७) द्यालु—दया करने वाला।

[१२] टांकरी लिपि में ऋ तथा ॠ और ऌ तथा ॡ का प्रयोग किया गया है। परन्तु इन स्वरों के स्थान पर मुख्यतः इन चिन्ह ही प्रयोग में आये देखे गये हैं। इस प्रकार के शब्द नीचे देखिये :—

(१) त्रिकड़ —पीठ।
(२) त्रड़खणा—गुस्से होना।
(३) त्रिढण —मैल से पोते हुए गन्दे पैरों के लिए प्रयोग किये जाने वाला शब्द।
(४) त्राकड़ी —तराजु।

भाषाई भिन्नताएं

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि मण्डयाली भाषा पर कई ऐसी भाषाओं का प्रभाव पड़ा है जो इस के सम्पर्क में आती रहीं। इन भाषाओं में मुख्य थीं —राजस्थानी, पंजाबी, हिन्दी और सीमावर्ती भाषाएं विलासपुरी, कांगड़ी, महासुई, कुल्लवी और किन्नौरी। इन कथित भाषाओं का मण्डयाली पर प्रभाव पड़ने के बाद भी यह भाषा अपने नये रूप में अग्रसर होती रही। नीचे कुछ भाषाओं में लिखे गए वाक्यांशों के नमूने प्रस्तुत किये जा रहे हैं जिस से मण्डयाली भाषा और अन्य भाषाओं की भिन्नता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

यहां सर्वप्रथम हिन्दी का यह अनुच्छेद प्रस्तुत है :—

बरसात का मौसम था। एक दिन बड़े वेग से वर्षा हो रही थी। एक बन्दर वृक्ष के नीचे बैठा ठिठुर रहा था। उसी वृक्ष की एक टहनी पर बया पक्षियों ने सुन्दर घौंसला बना रखा था। बन्दर की दुर्दशा देख मादा बया उसे उपदेश देने लगी—"अरे, तेरे हाथ-पैर तो बिल्कुल मनुष्य की तरह हैं, फिर तू क्यों नहीं उन की तरह घर बना कर सुख से रहता ?" बन्दर को इस शिक्षा पर क्रोध आ गया और उसने बया के घौंसले को तहस-नहस कर दिया।

इस का मण्डयाली रूपान्तर इस प्रकार हुआ :—

बरसाती रे ध्याड़े थे। एकी रोज बड़े जोरा री बरखा लगी री थी। एक बान्दर डाला हेठ बैठी रा कांबदा लगी रा था। तेस हे डाला री एक पलांगी परा चकचासा रा कोल्हा था। बान्दरा री एढ़ी बुरी हालत देखी के चकचासी तेस जो समझांदी लगी—' मोया, तेरे हाथ-पाव ता बिल्कुल माहणु साहीं हे तू आपु जो घर की नी बनाई लैंदा ?" बान्दरा जो ऐढ़ा सुणी के जलणी आई गई। होर तिन्ने बचारी चकचासी रा कोल्हा भानी दित्ता।

इस अनुच्छेद का कांगड़ी रूपान्तर :—

बरसाती दा मौसम था। इक दिन बड़े जोर दी बरखा लगीओ थी। इक बान्दर रुखे हेठ बैठेया जोरे ने कंबणा लगूया था। तिस ही रुखे दीया इक डालिया पर बया पंछियां बड़ा छैल आहला बणया रा था। बान्दरा री बुरी हालत दिखी के बया तिसजो सलाह दैणा लगी—' मोया तेरे हाथ-पैर ता बिल्कुल माहणुआं साही हैन फिरी तू उन्हा साही ही घर बणाई की सुखे नें क्यो नी रहंदा ?" बान्दरे जो उस दीया सलाही पर गुस्सा चढ़ी गिया। कनें उन्हीं बया दे आलणे जो तोड़ी दित्ता।

पंजाबी में :—

बरसात दे दिन सी। इक दिन बड़े जोर नाल़ बरखा हो रही सी। इक बन्दर रूख दे हेठां बैठ्या कम्ब रहया सी। उस रूख दी टहणी उते बया पंछियां ने इक आलणा बणा रखया सी। बन्दर दी बुरी हालत वेख के बया उन्हू सिख्या देण लगी कि—"तेरे हथ-पैर तां मनुख दे वांग हन फेर तूं उन्हां दे वांग ही घर बणा के सुख नाल़ क्यों नी रहंदा ?" बन्दर नू ओहदी सिख्या ते खीज आ गई ते ओहने बया दे आलणे नूं भन्न दितेया।

अब प्रस्तुत है इसी अनुच्छेद का कुल्लवी रूपान्तर :—

गाशो रै धियाड़े ती। एक रोज़ बड़े जोरा रा गाश गागादां ती। एक बान्दर बूटे हेठे बैठादा कौम्ब लागा दा ती। तेई बूटे री टाहणी न एक बया चिड़ूरा शौभला आलणा ती। बान्दरा री बुरी हालत भालिए बया चिडी तेई बै उपदेश देंदी लागी—"हाड़े! तेरे हौथ-जांघा ता माहणु सैई सी तैबै तूं किबैनी घर बणाईए सुखा न रौहन्दा ?" बान्दरा बै एई उपदेश शुणिए झीख चढ़ी। तेईए बया रा आलणा तोड़ी-मरोड़िए परे शोट्टू।

और विलासपुरी में इस अनुच्छेद का रूपान्तर इस प्रकार से होगा :—

बरसाती रे दिन थे। एक दिन बड़े जोरा री बरखा होया करदी थी। इक बांदर डाल़े हेठा बैठूरा काम्पा दा था। तिसई डाल़े री इक टहणियां पर बया चिडिया बढ़िया अल्हा बणाऊरा था। बांदरा री बुरी हालत देखी ने चिडि तिस्सो सिक्ख देणे लगी— "मोया, तेरे हत्थ-पैर तां बिल्कुल माणुएं

@tankrilipi parul arora mandi

साई ए फेरी तूं कैह तिन्हां साई सुखां ने घर बणाई ने रैहन्दा ?" बांदरा जो इसा गल्ला पर गुस्सा आई गया। होर तिनी चिडिया रा आल्हा पट्टी-पुट्टी ने परे सट्टया।

मण्डयाली भाषा का व्याकरण

[१] **सर्वनाम** :—हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम मण्डयाली में प्रयुक्त नहीं किये जाते हैं। जैसे :—

(क) पुरुषवाचक सर्वनाम में हम, तुम, वह की जगह आसे, तूसे, से का प्रयोग किया जाता है।

उत्तम पुरुष के लिए हिन्दी में जहां मैं, हम और मुझे प्रयोग किया जाता है मण्डयाली में मां या हाऊं, आसे और मूंजो प्रयोग होता है।

मध्यम पुरुष में जहां तू, तुम, आप सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है। मण्डयाली में तूं, तूसे प्रयोग किया जाता है।

अन्य पुरुष के लिए हिन्दी में यदि वह, वे, प्रयोग होता है तो मण्डयाली में से, स्यों का प्रयोग किया जाता है।

(ख) निश्चित व अनिश्चित वाचक सर्वनाम में हिन्दी में उसे, वह, किसी, कौन और कोई वाचकों का प्रयोग किया जाता है तो मण्डयाली में तेस जो, से, केसजो, कुण और कोहकी शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

(ग) संबन्ध वाचक सर्वनाम में जिसे, उससे, वैसे, शब्दों की जगह मण्डयाली में जिने, तेसथे और तेढ़ा प्रयोग होता है।

(घ) प्रश्न वाचक सर्वनाम में कौन, क्या, किस से, किसने, कब, कहां, क्यों, किधर आदि सर्वनामों का प्रयोग हिन्दी में किया जाता है। मण्डयाली में इनके स्थान पर कुण, क्या, केसथे, किन्ने, केभे, केथी, की, केथी सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है।

(ङ) निजवाचक सर्वनाम के लिए मण्डयाली में आपणे आप, आपणे कढ्ढे, आपू आदि सर्वनामों का प्रयोग होता है जब कि हिन्दी में इनकी जगह अपने आप, अपने लिए, स्वयं आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

[२] **विशेषण** :—मण्डयाली भाषा में विशेषण हिन्दी की ही भान्ति प्रयोग होता है। अन्तर केवल भाषा का ही है। जैसे :—

गोकला वाले चार **काले रंगा री** गाईया ही।
गोकल के पास काले रंग वाली चार गाएं हैं। (हिन्दी)

मोहना **बाले वी बिघे** खट्यात्तर ही।
मोहन के पास बीस वीघे घास उगाने योग्य जगह है। (हिन्दी)

ऐथी पहले **मलमला रा साफा** पैनणा आपनी सान समझायें थे।
यहां लोग पहले मलमल की पगड़ी पहनना अपनी शान समझते थे। (हिन्दी)

सभी मठ्ठियां जो काल भोज बांडणा।
सभी लड़कियों को कल मिठ्ठाई बांटी जाएगी। (हिन्दी)

[३] **क्रिया** :—क्रिया का अर्थ है किसी काम का करना या होना पाया जाए। मण्डयाली में क्रिया निम्न ढंग से प्रयोग होती है :—

सेवक **दौड़दा लगीरा**।
सेवक दौड़ रहा है। (हिन्दी)

सौजू बकरी रा **दूध पीहां**।
सौजू बकरी का दूध पीता है। (हिन्दी)

कातकु होर ग्वालु **जागदे हे**।
कातकु और ग्वालु जागते हैं। (हिन्दी)

मालती होर गीता **सौंदी लगीरी**।
मालती और गीता सो रही हैं। (हिन्दी)

[४] **काल** :—मण्डयाली में भी हिन्दी की ही भान्ति तीन काल होते हैं। लेकिन, हिन्दी की भान्ति इन कालों की रचना मण्डयाली भाषा में नहीं होती है। जैसे :—

हिन्दी में है, हूं, हो वर्तमान काल के बोधक हैं। मण्डयाली में इन के स्थान पर हें, हां, और रे प्रयुक्त होता है। लेकिन यह अलग न हो कर जैसे हिन्दी में प्रयोग होते हैं। क्रिया के साथ ही जोड़ दिये जाते हैं। उदाहरण देखिये :—

हिन्दी में	**मण्डयाली में**
लड़के खेल रहे हैं	मठ्ठे खेलेया कराहें।
मैं आठवीं में पढ़ता हूं।	हाऊं आठवीं मंझा पढ़ाहां।
हम पुस्तकें पढ़ रहे हैं।	आसे पोथियां पढ़दे लगीरे।

शेष भूत काल और भविष्यत काल की क्रियाओं में हिन्दी की ही भान्ति बोधक शब्दों का प्रयोग होता है। यथा : भूतकाल

के लिए था, थी, थे ग्रादि ग्रौर भविष्य काल के लिए गा, गी, गे ।

[५] **ग्रव्यय** :—उन शब्दों को कहते हैं जिनके लिंग, वचन ग्रौर कारक नहीं बदलते हैं । मण्डयाली में निम्न प्रकार के बोधक ग्रव्यय हैं :—

होर, पर, इधीरे कठ्ठे, नई ता, नांह ता इत्यादि-इत्यादि ।

[६] **लिंग** :—मण्डयाली में भी हिन्दी ही की भान्ति दो लिंग होते हैं । जैसे :—

(१) पुलिंग । (२) स्त्रीलिंग ।

[७] **वचन** :—हिन्दी की ही भान्ति मण्डयाली में दो वचन हैं :—एकवचन ग्रौर बहुवचन ।

मण्डयाली भाषा में कुछ सर्वनाम ऐसे भी हैं जो एक-वचन ग्रौर बहुवचन के लिए एक साथ प्रयोग होते हैं । उदाहरणत: तूसे ग्रौर यों, स्यों ग्रादि ।

@lankrlipi parul arora mandi

(१) तूसे केथीजो चली रे ? यह वाक्य एक व्यक्ति के लिए भी प्रयोग होगा ग्रौर एक से ग्रधिक लोगों के लिए भी ।

(२) यों केथी थे ग्रौंदे लगीरे ? इस वाक्य में भी ऊपर वाली ही बात है ।

(३) स्यों केथी जो गईरे ? इस से एकवचन ग्रौर बहु-वचन दोनों का बोध होता है ।

[८] **कारक**, उनकी विभक्तियां ग्रौर उनके प्रयोग :—

कारक	विभक्तियां	वाक्य प्रयोग
कर्ता	ये	**रामुये** भात खादेया ।
कर्म	केसजो	हाली **केसीजो** भीतर ग्रौणे देखेयां देंदे ।

करण	रे	गीते ग्रापणे **प्यारारे** कढ्ढे समाजा रे बंधन तोड़ी दिते ।
सम्प्रदान	रे कढ्ढे	बापूये **मेरे कढ्ढे** बडे भारी दुख सहीरे ।
ग्रपादान	थे (ग्रलग होने के लिए)	बभ्रिये जो देखी कन्ने बसणुए **पेड़ ये थे** छल्ली काढी दिती ।
ग्रधिकरण	मंझा, परा	काल दो जनाने **मंझा** मार-कुटाई हुई गई । गड्डी **परा** बैठदे-बैठदे सीता सड़का पर परेथी गई ।
सम्बन्ध	री, कन्ने, सौगी	तूं **केसरी** मठ्ठी ही ? तूध केस **कन्ने** जातरा जो जाणा ? मोती ग्रापणे मावा **सौगी** बजारा जो बरधेया ।
सम्बोधन	क्यावे, क्याऊ, ग्रो, ग्रो हो	**क्यावे** भोलेया ! शहरा जो कधी जाणा ? **क्याऊ** गीता ! ये पोथी तैं छेकी ? **ग्रो** घमंडेया ! गल ता सूणेया । **ग्रो हो** ! तूं ता किसनु हा ।

[९] **क्रिया-विशेषण** :— जिस से किसी क्रिया की विशेषता का पता चलता हो । मण्डयाली में इस प्रकार के शब्द प्रस्तुत किये जा रहे हैं :—

(१) काल वाचक :— कधी, भ्यागा, सांझा, सवेला, एवे, तड़के, जधी. तधो, काल, हुण, ग्राज, वगते, प्रगड़ ।

(२) स्थान वाचक :—कैथी, कुण, कधी, केभे, केसजो, केस सौगी, कीहां, इहां, तिहां, हेठ, उपर, आग्गे, पीछे, ओरे, परे, मंझभरा, अ्वार, एसपासे, तेतपासे, कुणियां आदि-आदि ।

(३) रीति वाचक :—जीहां, जेढ़ा, तेढ़ा, जेस, तेस, एवे, तेवे ।

(४) परिणाम वाचक :— जितना, तितना, उतना, भतेरा, थोड़ा ।

@tankrilipi parul arora mandi

(५) कार्यकारण वाचक :— फेरी, जे, तानी, लगांदी, नईता ।

(६) शर्त:वाचक :—जे, से आदि

मण्डयाली भाषा की लिपि

यह पहले ही बताया जा चुका है कि मण्डयाली भाषा की लिपि टांकरी है। टांकरी लिपि की उत्पत्ति किस निश्चित समय में हुई इसके बारे स्पष्ट रूप से कुछ कहना कठिन है। लेकिन माधवराव, जिसकी स्थापना यहां के प्रतापी राजा सूर्यसेन ने १७०५ में की थी,* के मन्दिर में उपलब्ध दुर्गापाठ की हस्त-लिखित पुस्तक के आधार पर इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि यह लिपि संम्वत् १११६ में भी प्रचलित थी। क्योंकि इस पुस्तक को टांकरी में लिखा गया है और इसके अन्त में विक्रमी सं० १ १६ में लिखा हुआ है। इस सम्वत् को पुस्तक के अन्त में देने का क्या अभिप्राय था यह नहीं लिखा गया है। परन्तु

*History of Mandi State P. No. 34.

इस संम्वत् से ऊपर कथित पुस्तक का रचनाकाल लिया जाए तो यह मान लेना होगा कि टांकरी लिपि का प्रचलन आज से लगभग ९०० वर्ष पूर्व था। दूसरी प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक नानक शाकी की है जो इस समय हिमाचल लोक-संस्कृति संस्थान, मण्डी में सुरक्षित है। इसको बनारसी दास ने लिखा है और इसका रचना-काल १७३७ के आस-पास माना जा सकता है चुंकि इस में इस बात का उल्लेख हुआ है। यह पुस्तक भी टांकरी में लिखी गई है।

टांकरी लिपि का जन्म कब और कैसे हुआ इस के बारे में डा० ग्रियर्सन का कहना है कि टांकरी शब्द 'टक' जाति के नाम पर हुआ है। यदि डा० ग्रियर्सन की इस बात को स्वीकार कर लिया जाए तो टांकरी लिपि का निर्माण-काल और भी पहले बनता है। मेरा अपना विचार है कि टांकरी शब्द का जन्म किसी जाति के आधार पर नहीं हुआ है बल्कि इसका सम्बन्ध 'टक्क' देश से है। यह उल्लेखनीय है कि चनाव और व्यास के प्रदेश का प्राचीन नाम 'टक्क' था। हिन्दी या संस्कृत भाषा में टांकरी से सम्बन्धित नाम निम्न हैं :—

(१) **टक्क** जिसका अर्थ चनाव और व्यास के प्रदेश का प्राचीन नाम बताया गया है।*

(२) **टांक** जिसका अर्थ टांके जाने की क्रिया, लिखावट, लिखना या कलम की नोक आदि बताया गया है।

(३) **टंकण** जिसका अर्थ मुद्रित करने या अंकित करने का कार्य बताया गया है। और—

*नालन्दा विशाल शब्द सागर, पृष्ठ सं० ४५९.

(४) टंकन का अर्थ लिखा जाना, अंकित करना लिया गया है। अतः यह कहीं भी स्पष्ट नहीं होता है कि टक जाति द्वारा टांकरी का जन्म हुआ। बल्कि सम्भावना इस बात की प्रकट होती है कि यह 'टक्क' या 'टंकन' से बना हुआ शब्द है जो यहां का अपना है।

मण्डी में प्रचलित टांकरी लिपि की कुछ विशेषताएं नीचे दी जा रही हैं। इन विशेषताओं का अध्ययन भी महत्त्वपूर्ण एवं रोचक होगा :—

(१) मण्डी में प्रचलित टांकरी लिपि के स्वर वर्ण और व्यञ्जन वर्ण तथा उनकी मात्राओं में अन्य स्थानों पर प्रचलित टांकरी से भिन्न है।

(२) मण्डी क्षेत्र की टांकरी में सोलह स्वर वर्ण हैं जब कि अन्य प्रदेश में प्रचलित टांकरी में केवल दस हैं।

(३) इस लिपि में कुछ व्यञ्जन वर्णों को आकार में लिखा गया है। जैसे :—गा, जा, डा, ढा, दा, सा, मा आदि।

(४) हिमाचल लोक-संस्कृति संस्थान में टांकरी में लिखित लगभग ४०० हस्तलिखित पाण्डुलिपियां सुरक्षित पड़ी हैं।

©takrilipi rahul arora mandi

(५) टांकरी, यहां न केवल राज-काज की लिपि थी अपितु स्कूलों में भी पढ़ाई जाती थी। कुछ स्थानीय दुकानदार अभी भी अपना हिसाब-किताब रखने में इस लिपि का प्रयोग करते हैं। भवानीसेन के शासन काल (१९०३—१९१२) से पूर्व इसी लिपि में अदालती कार्यवाही हुआ करती थी। सामने प्रथम कक्षा की पाठ्यपुस्तक के मुख्यपृष्ठ का छायाचित्र प्रस्तुत है और नीचे इसी का मण्डयाली अनुवाद भी :—

वरणमाला टांकरी। अर्थात् —

टांकरी आखरी री पोथी पहले सी महाराजे सी विज्यसेना

मण्डी में प्रचलित टांकरी लिपि की वर्णमाला

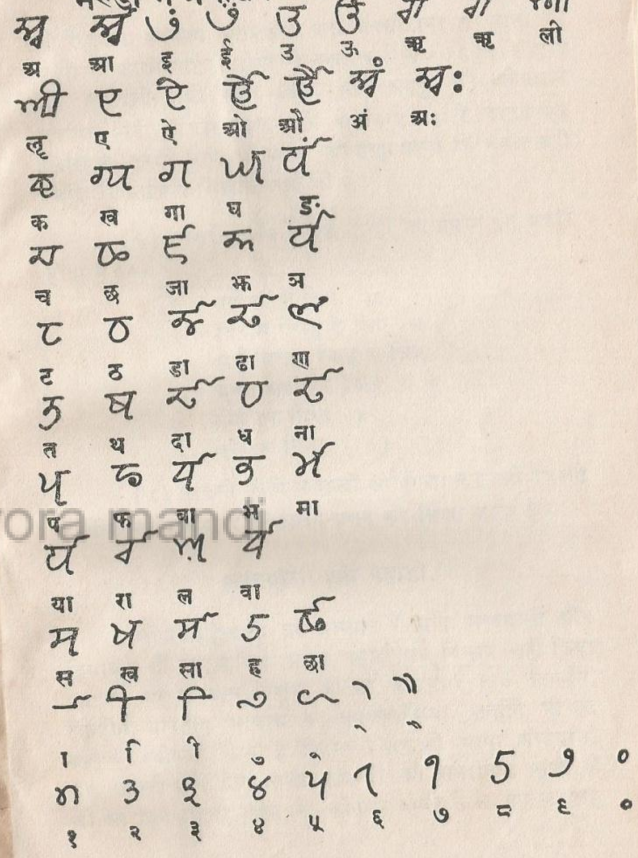

जी रे हुकमा परमाण १९२७ री का० बगसीरामा रे हाथा री छापी री बरणमाला री पोथी री नकल करी सं० १९३८ रे हाड़ प्र० १३ दांगे खत्री मदने लिखि दोगे खड़कु बैठे जहेलज्ञाने रयासत मंडी ईधिरि नकल करि के सं० १९४८ रे कातष २२ लिखि के गरदेवे भाउ परमदेबा जो इन्हा पोथी री नकल करी लिखि रि तिधि गे लिखणि लाई जी।

(६) टांकरी लिपि में कुछ चिन्हों का प्रयोग इस प्रकार होता है :—

१. आरम्भ के लिए
२. विराम चिन्ह के लिए ।
३. अर्ध विराम चिन्ह के लिए ,
४. अवत अवतरण चिन्ह । ।
५. संयोजक चिन्ह
६. कोष्टक चिन्ह ( )

@tankrilipi parul arora mandi

(७) टांकरी लिपि में शब्दों को मिला कर नहीं लिखते हैं बल्कि एक-एक शब्द को अलग-अलग कर लिखा जाता है।

मण्डयाली और पहाड़ी

लोक-साहित्य के इस अध्ययन में यदि मण्डयाली और हिमाचल की तथा-कथित भाषा पहाड़ी पर विचार नहीं किया गया तो यह अध्ययन अधूरा ही रह जाएगा। डा० ग्रियर्सन, जिन्होंने भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण किया, उन्होंने भी इस बात को स्वीकार किया है कि मण्डी क्षेत्र की भाषा मण्डयाली है। पहाड़ी शब्द उन सभी भाषाओं को समाविष्ट करती है जो देहरादून (उत्तर प्रदेश) के जौनसर बावर से ले कर भद्रवाह

(काश्मीर) के अन्त तक बोली जाती है। डा० ग्रियर्सन ने यह भी स्वीकार किया है कि पहाड़ी नाम की कोई भाषा नहीं है। बल्कि भारतीय भाषाओं के सर्वेक्षण की सुविधाहेतु यह नाम दिया गया है। उनका यह कहना अक्षरशः सत्य है। क्योंकि भारत के उत्तर-पश्चिम भाग के पहाड़ी क्षेत्रों में इतनी अधिक संख्या में बोलियां, भाषाएं और उपभाषाएं बोली जाती थीं। आज उनमें से बहुत सी भाषाएं लुप्त हो गई हैं। इस दृष्टि से डा० ग्रियर्सन का भाषा सम्बन्धी यह कार्य प्रसन्नीय है। कई भाषाओं का साहित्यिक रूप सामने आया और कई बोलियां मरते-मरते बचीं।

हिमाचल के भाषा-शास्त्रियों ने जिस तथा-कथित भाषा को पहाड़ी का नाम दिया है उससे डा० ग्रियर्सन के विचारों और काय को संकुचित करने का ही प्रत्यन किया है। चुंकि डा० ग्रियर्सन ने तो पहाड़ी नाम की किसी भी भाषा विशेष का प्रतिपादन नहीं किया था बल्कि बहुत बड़े क्षेत्र की भाषाओं को एक सूत्र में बांध कर उसे पश्चिमी पहाड़ी का नाम दिया था। लेकिन, हिमाचल भाषा-शास्त्रियों ने अपने स्वार्थहेतु इसका क्षेत्र हिमाचल तक ही सीमित कर हिमाचल प्रदेश में बोले जाने वाली भाषाओं को पहाड़ी का नाम दे दिया — जो उचित नहीं कहा जा सकता है।

@ankhilipi pahul arora mandi

हिमाचल में बोले जाने वाली भाषा पहाड़ी है, केवल यह कह देने से भाषा सम्बन्धी कार्य पूर्ण नहीं होता है। किसी भी बोली को भाषा बनाने और भाषा को समृद्ध बनाने तक का फासला बहुत लम्बा है। किस भाषा विशेष को आगे च॰ कर संवैधानिक रूप से मान्यता दिलाई जाएगी या हिमाचल की

किस भाषा विशेष को पहाड़ी भाषा के अन्तर्गत रखा जाएगा, इस पर विचार करने से पूर्व साहित्य अकादमी की भाषा-नीति पर विचार करना होगा। किस नयी भाषा को संवैधानिक रूप से मान्यता मिलनी चाहिए इसके लिए १९६४ को भाषा-शास्त्रियों की एक उपसमिति बनाई थी। इसके अध्यक्ष डा० सुनीति कुमार चटर्जी थे। उन्होंने, किसी भाषा को संवैधानिक रूप से मान्यता दिलाने संबन्धी कुछ नियमों का प्रतिपादन किया था जो निम्न प्रकार के थे :—

(१) क्या भाषा की दृष्टि से यह स्वतन्त्र भाषा मानी जा सकती है अथवा यह किसी भाषा की उपभाषा है ?

(२) क्या इस भाषा की साहित्यतिक परम्परा तथा इतिहास निरन्तर तीन शताब्दियों से चला आ रहा है ?

(३) क्या जनता का अधिकाधिक वर्ग इस भाषा को साहित्य तथा संस्कृति के रूप में अपना रहा है ?

(४) क्या जहां यह भाषा बोली जाती है वहां की प्रादेशिक सरकार ने इसे प्रादेशिक भाषा के रूप में स्वीकार किया है ?

(५) क्या किसी विश्वविद्यालय ने उक्त भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में या स्वतन्त्र विषय के रूप में मान्यता प्रदान की है ?

(६) क्या इस भाषा को जानने वालों की संख्या पर्याप्त है, क्या इस भाषा में वर्तमान साहित्य प्रचुर मात्रा में निकल रहा है ? आदि आदि।

उपरोक्त कुछ नियमों के आधार पर हिमाचल की तथा

कथित पहाड़ी भाषा को किस रूप में स्वीकार किया जा सकता है—इसका निर्णय पाठक स्वयं करेंगे ।

मण्डी क्षेत्र और इस क्षेत्र में बोले जाने वाली मण्डयाली भाषा का इतिहास बहुत प्राचीन है। उस में उपलब्ध साहित्य भी कम नहीं है। इस भाषा को संवैधानिक रूप से मान्यता दिलाई जा सकती है—इस का निर्णय भी मैं पाठकों के हृदय और बुद्धि पर छोड़ता हूं ।

पहाड़ी भाषा सम्बन्धी दूसरा बड़ा प्रश्न हिमाचल में बोले जाने वाली भाषाओं को एक सूत्र में बान्धने का है। हिमाचल में कुछ तो ऐसी बोलियां और भाषाएं है जिन्हें पहाड़ी भाषा के नाम पर एक सूत्र में बांधा जा सकता है लेकिन, इसके साथ-साथ कुछ ऐसी भी बोलियां हैं जिन्हें किसी भी रूप में पहाड़ी भाषा के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता है। इस में किन्नौर—जहां पर की पुह से आगे की बोली भोटी है और जिस की लिपि भी बिल्कुल भिन्न है, लाहुल-स्पीति—जहां की बोली भोटी और संस्कृत का मिश्रण है, कुल्लु की सराज घाटी में संस्कृत के तत्सम शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग है और मलाणा ग्राम (मसाणा, में भोटी तथा संस्कृत का मिश्रित रूप प्रचलित है तथा चम्बा में त्रिलोकनाथ के आस-पास के क्षेत्रों में किराती भाषा का मिश्रितरूप प्रचलित है। इन्हें किस भाषा के अन्तगर्त रखेंगे तथा आगे चल कर कैसे इन क्षेत्रों की बोलियां को पहाड़ी में समाविष्ट किया जाएगा—यह भी विचारणीय है। उपरांकित बोलियों को बोलने वालों की संख्या पूरे हिमाचल की जनसंख्या का लगभग पांचवा भाग है ।

यदि हिमाचल की भाषा संस्थान के सहायक निर्देशक श्री हरिचन्द पराशर के इस कथन को सही मान लिया जाए कि

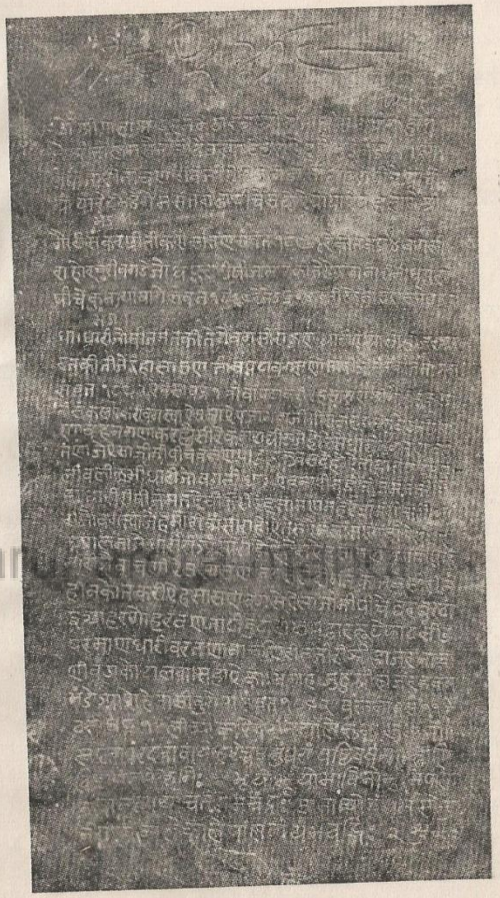

है तो
। ही
ते
चुका
स्थान
याली
। इन
और
जिसे
भाषा
आगे
स्था न
हयोग
ी हो,
समृद्ध
ष्टि से
यों को
ीय है।
ा नाम
लेकिन,
न्नोंदिन
क और
चाहिए
क और

पहाड़ी की समानता बहुत कुछ हिन्दी से मिलती-जुलती है तो पहाड़ी भाषा के वाद-विवाद में न पड़ कर हिन्दी को ही हिमाचल की भाषा मान लेना अति उत्तम है ।

मण्डयाली में उपलब्ध साहित्य और वर्तमान स्थिति

जैसा कि पहले अन्यत्र इसी पाठ में बताया जा चुका है कि मण्डयाली साहित्य को सुरक्षित रखने का एकमात्र स्थान हिमाचल लोक संस्कृति संस्थान, मण्डी है जहां पर कि मण्डयाली भाषा की लिपि टांकरी में बहुत सा साहित्य विद्यमान है। इन में अधिकतर अप्रकाशित हस्तलिखित पाण्डु-लिपियां हैं और इस से भी अधिक साहित्य लोगों के पास बिखरा पड़ा है जिसे लोग आग जलाने में प्रयोग कर रहे हैं। यद्यपि मण्डयाली भाषा में अब भी कुछ लेखक रचनात्मक कार्य कर रहे हैं और आगे भी करने के लिए उत्कंठित हैं। लेकिन, प्रकाशन की व्यवस्था न होने के कारण और राजकीय तथा किसी संस्था का सहयोग प्राप्त न होने के फलस्वरूप हताश हो गये हैं। कुछ भी हो, किसी बोली को भाषा बनाने और भाषा को पूर्ण रूप से समृद्ध बनाने का रास्ता कठिन भी है और लम्बा भी। इस दृष्टि से **हिमाचल सरकार ने हिमाचल के ग्यारह प्रान्तीय बोलियों को एक सूत्र में बांधने का जो प्रयास किया है वह प्रसन्शनीय है। भाषाई एकता की इकाई में बांधने वाली इस भाषा का नाम कुछ भी हो सकता है—पहाड़ी, हिमाचली या और कोई। लेकिन, इस प्रयास से यह बात पूर्णतः स्पष्ट हो गई है कि दिनोंदिन लुप्त हो रहे लोक-साहित्य को प्रकाश में लाने का एक और शुभ अवसर प्राप्त हो गया है। हिमाचल सरकार को चाहिए कि लोक-साहित्य को अधिकाधिक प्रकाश में लाने के और**

@tankrilipi parul arora mandi

अधिक प्रयत्न किये जाएं। लोक-साहित्यकारों की लोक-साहित्य संबन्धी रचनाओं का प्रकाशनभार भी राजकीय-स्तर पर हो। लोक-साहित्य के स्कालरों को प्रतिमाह कुछ निश्चित राशी की व्यवस्था की जाए और उसके एवज़ में उनसे लोक-साहित्य की महत्त्वपूर्ण खोजों पर अध्ययन करवाया जाए।

वास्तविक्ता तो यह है कि जिस भाषा में जितना अधिक साहित्य निकलेगा, पत्र-पत्रिकाओं का प्रचलन होगा और राजकीय-स्तर पर स्कूल कालिजों में जितनी अधिक मान्यता प्रदान की जाएगी उतनी ही वह भाषा समृद्ध होगी। यह भी उल्लेखनीय है कि यह केवल सरकार का ही उत्तरदायित्व नहीं है बल्कि यहां के साहित्यकारों को भी इस ओर प्रयत्नशील होना होगा।

मेरे मस्तिष्क में मण्डयाली भाषा को जीवित रखने के सिवाये और कोई उद्देश्य नहीं है। मैं इसे हिमाचल की भाषा के रूप में संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए भी प्रस्तावित नहीं करता हूं—यह राजनीतिज्ञों का विषय है। एक लेखक और पाठक होने के नाते मेरा मोह केवल विलुप्त साहित्य को जीवन-दान देना ही है—यही मेरा कर्त्तव्य है। और मैं इसे आगे भी निभाता रहूंगा। मेरा विश्वास है कि मेरे प्रदेश के लोग सहनशीलता, सत्य-प्रियता और अपने भोलेपन में इन्सानों के रूप में लोकप्रिय हैं, देश के सामने भाषाई एकता को बनाये रखने में भी अपना ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

अन्ततः मण्डयाली पुनः अपने शिशुकाल में आ गई है। उसका पुनरुथान नये साहित्यकारों के हाथों में है। वह जैसा चाहें, वैसा रूप इस पुनर्जात भाषा को दे सकते हैं।

@tankrilipi parul arora mandi

छींजे

[भाग दो]

छींजे

हिमाचल प्रदेश प्रकृति का ग्रत्यन्तप्रिय क्रीड़ा-स्थल रहा है। प्रकृति ने भिन्न-भिन्न रूपों में ग्रपने सौन्दर्य को प्रकट किया है। हिमाचल के भू-भाग ने कई रंग बदले हैं। हर रंग ग्रपने में एक नया पन, नया ग्रन्दाज़ ग्रौर नया रूप लिए है। मण्डी का लोक-जीवन भी इसी विविधता का ग्रनुगामी है। यहां के लोक-साहित्य में जहां प्राकृतिक सौन्दर्य की झलक स्पष्ट दिखाई देती है, वहां लोक-जीवन में समय-समय पर विद्यमान ग्रादर्शों की स्थापना के बारे में पता चलता है। इस दृष्टि से इन लोक-गीतों का महत्त्व ग्रौर ग्रधिक ग्रध्ययन का विषय बन गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि यहां की उच्च श्रृंखलाग्रों की तरह यहां का सहित्य भी एक दूसरे से बन्धा हुग्रा है।

@tankrilipi parul arora mandi

मण्डयाली लोक साहित्य के रचयिताग्रों ने भिन्न-भिन्न प्रसंगों के माध्यम से यहां के जन-जीवन, खान-पान, वेष-भूषा, रीति-रिवाज़ ग्रौर ग्राचार-विचारों पर प्रकाश डाला है। ऋतु परिवर्तन के साथ-साथ यहां का लोक-साहित्य भी रंग बदलता है। यह रंग यहां के सुप्रसिद्ध लोकगीतों छींजों ग्रौर छिंजोटियों में मुखरित हुग्रा है। यहां ज्यों ही चैत्र का बसन्त-मास ग्रारम्भ होने लगता है वैसे ही प्रत्येक वनस्पति की कलियां मुस्कराने लगती हैं। बुलबुल मस्त हो कर मनभावन गीत सुनाने लगती

है। सुखद समीर मन्द-मन्द गति से डोलने लगती है और झूले पड़ते ही बसन्त मास का आवाहन इन लोकगीतों से आरम्भ हो जाता है :—

पीपला रे हेठ[1] मेरी आम्मा खड़ी री।
झड़ी-झड़ी पौंदे पिपला रे पातर[2]॥
चैत्र सुहाणा............

जाओ तूं आम्मा जी घर आपणे[3]।
वारी वीरणा[4] गुमाणी[5] जो भेज आपणे॥
चैत्र सुहाणा............

आओ तूं वीरा[6] भाइया बडड़े[7] घरा।
वारी केहड़े[8] आदर दूं॥
चैत्र सुहाणा............

दूधे ध्वाणी[9] वीरणा पैर ध्वाआऊं[10]।
दन्तेया[11] बैसणी[12] दूं॥
चैत्र सुहाणा............

चनणा[13] ता कुटी-कुटी गिठ्[14] घड़ाऊं[15]।
सिरी खंडेया[16] देऊं फरोला[17]॥
चैत्र सुहाणा............

---

1. नीचे। 2. पत्ते। 3. अपने। 4. भाई। 5. अभिमानी। 6. बलवान। 7. बड़े। 8. किस प्रकार के। 9. दूध मिला पाणी। 10. धोना। 11. हाथी दान्त का। 12. लकड़ी का बना पटड़ा। 13. चन्दन। 14. बड़ी अंगीठी जो कमरे के बीच में खोद कर बनाई गई होती है। 15. तैयार करबाऊं। 16. दरात। 17. फैलाना।

चान्दा ता देखी-देखी थाली घड़ाऊं।
तारेया[1] गिणत्रीया[2] कटोरबे बनाऊं॥
चैत्र सुहाणा............

झीझणिया[3] ता छांडी-छांडी भात रिन्हाऊं।
मींडे-मींडे[4] बकरे रा मास[5] बनाऊं॥
चैत्र सुहाणा............

पाना[6] ता चीरी-चीरी[7] साग रिन्हाऊं।
वारी, लौंगा ता लाईची रा पाच[8] लगाऊं।
चैत्र सुहाणा............

अर्थात् पीपल जैसे विशाल काया वाले पेड़ के नीचे मेरी माँ खड़ी है, और पीपल के पेड़ से झर-झर करते हुए पत्ते गिर रहे हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अब सुहावना चैत्र आरम्भ होने वाला ही है। चारों ओर की वनस्पतियों पर नए अंकुर धीरे-धीरे फूट रहे हैं और जहां भी दृष्टि पड़ती है वहीं हरियाली ही हरियाली का वातावरण बनता जा रहा है। लड़की अपनी माँ से कहती है— "माँ अब तू घर जा और उस अभिमानी भैया को मेरे पास भेज। अब चैत्र मास आरम्भ हो रहा है। सावन में तो सभी कुछ नया-नया और सुन्दर प्रतीत होता है।" माँ चली जाती है और भाई जब बड़ी बहिन के घर आता है तो उसका मन असीम प्यार से भर जाता है। क्योंकि इसी भैया के साथ तो उसने अपना बचपन व्यतीत किया है। इसी

---

1. तारे की भान्ति। 2. गिनती से। 3. चावल की एक किस्म। 4. सुन्दर। 5. मांस। 6. पान के पत्तों का। 7. काट-काट कर। 8. छपकन लगाऊं।

@tankrilipi parul arora mandi

भैया के साथ बसन्त में झूले का खेल खेला है। प्रकृति के शृंगार ने बहिन के मन को उन्मत्त कर दिया। धन्य वे बहिन जिनके भाई हैं।......

भैया, तुम मेरे इस बड़े घर में आओ और देखना कि मैं तुम्हारा कैसा आदर करती हूं। दूध मिले पानी से तो मैं तुम्हारे पांव धुलाऊंगी और बैठने के लिए हाथी दान्त का बना हुआ पटरा दूंगी। अभी थोड़ी-थोड़ी सर्दी रहती है इस लिए इस सुहावने चैत्र मास में एक नया और सुन्दर अंगीठा बनाऊंगी जिस में जलाने के लिए चंदन की लकड़ी लाऊंगी। खाना खाने के लिए चांद की भान्ति चमक देने वाली थाली और आकाश में जितने सुन्दर तारे हैं, उतने ही सुन्दर प्याले बनाऊंगी। चावल भी सब से बढ़िया किस्म का लाऊंगी और सुन्दर बकरों का मांस बना कर साथ में पान के पत्तों का बनाया हुआ साग खिलाऊंगी, जिस में लांग और इलायची का छपकन लगा होगा। मैं अपने भैया को सोने के लिए सुन्दर पलंग और रजाई दूंगी। रात को यदि भैया को प्यास भी लगेगी तो मैं झाझरी में रखा हुआ ठण्डा पानी पिलाऊंगी।

इस प्रकार यहां के लोक कवियों ने भाई बहिन के पवित्र प्रेम को कितने सुन्दर अव्यवों द्वारा दर्शाया है।

★ ★ ★

सुदूर प्रदेश में बसी बहिन की आंखें बार-बार उन दूर निर्जन पहाड़ियों को देखती रहती हैं। मन ही मन वह सोचती है कि काश ! यह लम्बी-लम्बी पहाड़ियां जमीन में धंस जाएं और उसे अपने पिता का घर दिखाई देने लगे।

RRRLP

दूर पहाड़ियों के बीचों बीच बनी संकरी सी पगडण्डी पर घोड़ों के चलने से पैरों से उत्पन्न ध्वनि खटट-खटट-खटट और गले में बन्धी घंटियों की टनन-टनन-टनन आवाज़ें तथा हाथियों के पैरों की थपथपाहट, (वह अपने घर के आंगन में निहार रही उस भाई को जो उसे अपने साथ माँ के पास ले जाएगा) जब सुनाई पड़ती हैं तो वह आनंदित हो उठती है। उसका हृदय अजीव प्रसन्नता से झूम उठता है :—

पारली[1] झे बाटा[2] धामा छणाके[3] घोड़े हृणाके[4],
मैं जाणेया[5] वीरण[6] पोहुण[7] आया।

आओ तूं वीरा भाईया, बैठ तूं पटड़े।
मैं भरी ल्याऊ[8] ठंडड़ा नीर।

बहिने ! काहे दा हुंदा[9] लेज घड़ोलु[10] ?
काहे ते ल्योणा ठडड़ा नीर।

भाइया ! चांदी सुईने री[11] हुंदी लेज़ घड़ोलु,
कुएं थे ल्याओणा ठंडड़ा नीर।
आओ तूं वीरा भाइया केढ़े आदर देऊं[12]

घोड़े जो ता तेरे भाईया तबेला[13] बधाऊं,
हाथी जो ठंडड़ी बाग[14]।

नौकरा-चाकरा तेरे जो कोठड़ी बनाऊं,
तूजो बनाऊं ठंडड़ी कोठ[15]।

---

1. सामने वाली। 2. पहाड़ी के रास्ते। 3. हाथी की आवाज़। 4. हिनहिनाना। 5 जानना। 6. भैया। 7. मेहमान। 8. ले आऊं। 9. होता है। 10. पानी भरने का बर्तन। 11. सोने का। 12. दूं। 13 अस्तबल। 14. बगीचा। 15 महल।

3549

घोड़े जो ता वीरा भाईया दाणा[1] दलाऊं,
हाथी जो गुड़ा कढी भेलीं[2] ।
नौकरा-चाकरा जो तेरे झीझण रिन्हाऊं, बकरे टुकाऊं[3] ।
तूजो भी ता वीरा भाईया, अलड़ा मेवा[4] खुलाऊं,

बहिना, खादे ता खादे मैं सबे-सबे खाणे[5] ।
चलो बहिणे, प्या।हिंया[6] जो जाणा ।

भाईया, सास ता मेरी आगी रा पूल्ला[7],
नणद[8] ता सावणा री बीज[9] ।

बहिणे, आगी रे पूल्ले जो पाणी डलाऊं,
लस्कदी बीजा[10] जो पाथरे फोड़ूं[11] ।

इतना जे वोलेया[12]—ओ भाईया,
चंपका जो गया विसरी[13] ।
रोंदिया बहिणा जो छाडी[14] ओ गया ।

पुतरा बोल वे कुपुतरा,
क्या करे तेरे मावा री जाई[15] ?

आम्मा ! मावा री जाई जो क्या बोलूं ।
रोंदिया बहिणा जो छाडी आया ।

आम्मा, पैरा रे मोजे[16] मैं ता पर खोलूं,
रोंदिया बहिणा जो सादी ल्याऊं[17] ।

---

1. चने । 2. गुड़ का बनाया हुआ एक गोला । 3 कटवाऊं 4 बहुत सारा मेवा । 5. खाऊंगा । 6. माँ का घर । 7. बहुत गर्म स्वभाव की सास । 8. ननद । 9. सावन मास में आकाश पर से गिरने वाली बिजली । 10. चमकती बिजली । 11. जोर से फेंकना । 12. कहा । 13. भूल जाना । 14. छोड़ आना । 15. जनने वाली । 16. पांव की जुरावें । 17. बुला लाना ।

उंची-उंची रिढ़िया[1] साधड़ा[2] जे बैठेया ।

सबे-सबे माईयां आई,
कि आई नहीं मावा री जाई ।

भरी-भरी थाल़ गज[3] मोतियां री,
मावा री जाई ले आई ।

इतना जे वोलेया, चल, बहिणे प्याहिया जाणा
शाबास रे पूता, सपूता रे जाया,

रोंदिया बहिणा जो सादी[4] ल्याया ।

इन छींजों में सामाजिक जीवन की झांकी स्पष्ट दीख पड़ती है। बहिन का भाई के प्रति अगाध प्रेम है फिर भी, उसे शादी के बाद एक ऐसे बन्धन में बन्ध जाना पड़ता है, जिस से मुक्त होना उस के लिए कठिन है। सामने वाली पहाड़ी पर जब वह हाथी के धम्-धम् से चलने की आवाज़ सुनती है और घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनती है, तो उसे ऐसा लगता है कि हो न हो उस का भैया आज अतिथि बन कर आ रहा है। जब वह और पास आ जाता है तो वह फूली नहीं समाती है। भातृत्व की भावना से वशीभूत हो सेवा-सत्कार में जुट जाती है। वह कहती है—"आओ, आओ, मेरे प्यारे भैया, आओ। तुम यहां पटरे पर बैठो। तुम इतनी दूर चल कर आए हो, मैं तुम्हें ठण्डा पानी पीने को ले आती हूं।"

भैया पूछता है— 'बहिन, यह तुम्हारा पानी का बर्तन

---

1. छोटी पहाड़ी की चोटी । 2. साधु वेषधारी । 3. हीरे जवाहरात । 4 साथ ।

@tankrilipi parul arora mandi

किस का बना हुआ है, और मेरे लिए ठण्डा पानी कहां से लाओगी ?"

इस पर बहिन उत्तर देती है—"भैया, हमारे यहां चांदी और सोने का मटका होता है और कुएं से ठण्डा पानी लाऊंगी। आज तुम मेरे पास आए हो, मैं समझ नहीं पा रही हूं कि कैसे-कैसे तुम्हारा आदर करूं। तुम्हारे घोड़े को मैं अस्तबल में बान्ध दूं और हाथी को ठण्डी छांव में ले जाऊं। तुम्हारे नौकर को ठहरने के लिए मकान दे दूं और तुम्हारे ठहरने के लिए महल दूं। खाने के लिए तुम्हारे घोड़ों को दाना पिसा दूं, हाथी को गुड़ मंगवा दूं, तुम्हारे नौकरों को चावल पकवा दूं और तुम्हारे लिए बहुत सारा मेवा तैयार करवा दूं।" 'बहिन', भैया बात काट कर कहता है—"मैंने सब प्रकार के भोजन खा लिए। लेकिन, मैं तुम्हें माँ के पास ले जाने के लिए आया हूं।" इस पर बहिन उत्तर देती है—"भैया मेरी सास तो बस, बात-बात पर अंगारे उगलती है और ननद, वह तो मुझ पर बिजली की तरह कड़कती रहती है।"

@tankrilipi parul arora mandi

यह सुन कर भैया जवाब देता है—"बहिन तुम्हारी सास की क्रोधाग्नि को तो मैं पानी से बुझा दूंगा। और ननद की इस बिजली जैसी कड़क को पत्थर पर दे मारूं।"

इतना कह कर भैया अपनी बहिन को रोती हुई छोड़ कर घर वापिस आ गया। बिना बहिन के भाई को जब माँ ने देखा तो उसे कपूत कह कर अपनी लाडली का सुख समाचार पूछा। इस पर बेटा कहता है—"माँ, तुम्हारी लड़की को मैं रोते रोते छोड़ आया हूं।" यह सुन कर माँ की आँखें छलक उठती हैं। दुःख में अपने पुत्र को फटकारती हुई कहती है—

"अरे ओ कपूत, तूं मेरी कोख से क्यों पैदा हुआ ? परदेश बसी मेरी लाडली को तूं रोता हुआ क्यों छोड़ आया ?"

वह कहता है—"माँ व्यर्थ ही क्यों पछताती हो। मैं तो तेरी आज्ञा लेने आया हूं। मैं अपने जूते तभी खोलूंगा जब तक कि मैं अपनी रूठी बहिन को किसी तरह यहां न ले आऊं।"

वह साधु का वेश बदल कर बहिन के घर के सामने वाली पहाड़ी पर बैठ जाता है। सभी लोग दर्शनार्थ आते हैं, पर अभी बहिन नहीं आती है। जब सब औरतें वापिस चली जाती हैं तो पीछे से हीरे मोतियों की थाली लिए हुए उसकी बहिन आती है। बहिन को अब भैया उसे घर ले आता है। माँ अपने बेटे को इस बहादुरी के लिए शाबास देती है।

धन दौलत आज तक भाई-बहिन, माँ बाप को वात्सल्य को नहीं दे सका है। इन पुरानी कुप्रथाओं में झुलसती प्राचीन नारियों की तपस्या वास्तव में सराहनीय है।

समाज में न जाने कितनी ही ऐसी प्रथाएं अब भी प्रचलित हैं जो अपने ही लोगों पर अत्याचार करती आ रहीं हैं। न जाने क्यों ?

★ ★ ★

भाभी और ननद का मनमुटाव यहां के सामाजिक जीवन का एक अभिन्न अंग बना हुआ है। जहां देखो वहीं पर भाभी और ननद में एक विचित्र सा द्वन्द्व बना हुआ प्रतीत होता है। उस में द्वन्द्व अवश्य है किन्तु अपनत्व भरा हुआ। शायद इस लिए कि भाभी की सारी बातें भैया से कह देती होगी। हां,

सम्भवतः ऐसा ही लगता है और इसका उदाहरण प्रस्तुत किया है यहां के एक लोक कवि ने अपनी व्यंग्यात्मक शैली में :—

भाइया भाइया भाभीये मछली जे आंदी[1],
आंणी[2] सट्टी[3] दरवाजे कि मेरी मछलिए।

भाइया भाइया भाभी चीरण[4] जे बैठी,
बंगा[5] दे लगे झणकोरे[6] कि मेरी मछलिए।

भाइया भाइया भाभी तलण[7] जे बैठी,
तेला दे लगे फुआरे[8] कि मेरी मछलिए।

भाइया भाइया भाभी स्वादण[9] बैठी,
लुण[10] कित्ता[11] खारा कि मेरी मछलिए।

भाइया भाइया भाभीये कांडे पछाड़न सट्टे[12],
झीर झरेटे[13] मछली जे आंदी।

भाइया भाइया भाभीये मछली आपू जे खादी[14],
मूजो[15] नी दिती[16] ओ मेरी मछलिए।

@tankrilipi parul arora mandi

अर्थात् बहिन अपने भाई से भाभी की चुगली लगाते हुए कहती है—"भैया, भैया भाभी ने मछली लाई और उसे ला कर दरवाजे पर फेंक दिया। मैं काम में लगी हुई थी (हो चाहे बेकार ही बैठी) इस लिए नहीं उठा सकी तो भाभी ने बड़े नखरे में उस मछली को उठाया और चीर-फाड़ करने लगी। गुस्से में

1. लाई। 2. ला कर। 3. फैंक दी। 4. काटना। 5. चूड़ियों के। 6. झंकार। 7. तेल में पकाना। 8. तेल की बुलबुलाहट। 9. स्वाद लेना। 10. नमक। 11. किया। 12. घर के पीछे की ओर फैंकना। 13. मछेरा। 14. स्वयं खा ली। 15. मुझे। 16. नहीं दी।

उसकी चूड़ियां जोर से खनक रही थीं। फिर भैया, भाभी ने उन्हें तेल में तला और स्वाद लेती रही। देखो भला, अब भी मछली के कांटे घर के पीछे पड़े हैं। भाभी स्वयं ही सारी की सारी मछली खा गई—मुझे नहीं दीं।"

ननद को दुख तो इस बात से हो रहा है कि भाभी ने इतने सुन्दर ढंग से मछली तैयार की, मैंने उसे यह सब करते हुए देख भी लिया और भाभी ने जान बूझ कर उसे मछली नहीं दी। इस लिए उसे अपने भैया से शिकायत है।

ओ मेरी मछलिये— वह बार-बार कह रही है जिस से उसे वह स्वादिष्ट मछली न मिलने पर दुख हो रहा है तो साथ-साथ में भाभी की इस तरह का असमानता के व्यवहार से भी अवगत करा रही है।

★ ★ ★

यह मनमुटाव केवल भाभी और ननद तक ही सीमित नहीं रहता है बल्कि पति-पत्नी में भी दर्शाया गया है :—

आंगणा[1] साडड़े पीपला ओ लट भौरिया[3] लै,
तेत[4] भी बैठेया काला काग[5] जी ओ लट भौरिया लै।

सोयने मढ़ाऊं[6] तेरी काली चूंज[7] रूपे मढ़ाऊं काले पंख,
मोतिए चूग[8] चुगाऊं, ओ लट भौरिया लै।

उडो रे उडो कालेया कागा, कदी ढोली[9] घरा आवण

1. आंगन में। 2. हमारे। 3 प्रियतम का नाम। 4. वहां। 5. काला कौआ। 6. मढ़ना। 7. चोंच। 8 दाना। 9. ढोल बजाने वाले।

आज भी नी आंवदे, कल भी नी आंवदे,
परसी[1] आवणा[2] ढोली ज़रूर ।

बारह जे बरसे कन्त[3] घर आया ओ लट भौरिया लै ।

आई बैठेया ठंडड़ी छांवां[4] ओ लट भौरिया लै ।
दूधे ध्वाणी कन्ते पैर ध्वाऊं दन्तेया बैसणी[5] दूं ।

लाडु[6] होर[7] सगोतिये[8] भोजन दूं,
झाझरिये दूं ठण्डड़ा पाणी ओ लट भौरिया लै ।

एहड़े[9] जे कन्त, आदर मैं दीते[10],
एहड़ा नी देंदा हुणा ओ कोय[11] ।

चकेया मंझोलू[12] कन्ते जाई पूछाड़े[13] सूतेया[14],
ओ लट भौरिया लै ।

कालि़ये[15] पिऊलि़ये[16] बिजलि़ये
तूं बरसेया[17] सेमक रात[18] ।

चकेया[19] मंझोलू कन्ते, आई घरे[20] सुतेया,
ओ लट भौरिया लै ।

अर्थात् प्रियतमा के आँगन में पीपल का पेड़ है, और वहां काला कौवा बैठा है। वह उस से कह रही है—"हे काक ! मैं तेरी चोंच को सोने से मढ़ा दूं, तेरे पंखों को चांदी

1. परसों। 2. आना। 3. प्रियतम, पति। 4 ठंडी छांव। 5. हाथी दान्त का बना पटरा। 6. लड्डू। 7. और। 8. मंडी का विशेष पकवान। 9. ऐसे। 10. दिए। 11. कोई भी। 12. विस्तर। 13. घर के पीछे। 14. सो गया। 15. काले रंग को। 16. पीली। 17. बरसेंया (बरसना)। 18 रात भर। 19. उठेया। 20. घर में।

@tankrilipi parul arora mandi

से मढ़ा दूं, तुझे मोतियों के दानों की चोग दूं अगर तूं यह बता दे कि मेरे प्रिय अर्थात् पति परमेश्वर कब घर आएंगे ?" कौवा उत्तर देता है—"हे विरहिणी क्या बताऊं, तेरे प्रियतम आज नहीं आएंगे, कल भी नहीं आएंगे, हाँ परसों ज़रूर वे तुझ से मिलेंगे ।" उसका प्रियतम आता है। वह बारह वर्षों के बाद—बहुत लम्बी प्रतीक्षा के बाद आता है । उसके आने से मानों ठण्डी-ठण्डी हवा बहने लगती है। प्रियतम बैठ जाता है और प्रियतमा दूध मिले पानी से उनके पैर धुलाती है। बैठने के लिए हाथी दान्त की बनी चौकी देती है । खाने के लिए लड्डू और सगोतियां देती है। (यह स्वादिष्ट भोज्य-पदार्थ यहां की व्याह-शादियों में या विशेष उत्सवों पर दिया जाता है।) पीने के लिए झाझरी में रखा डण्डा पानी देती है। यदि कहीं प्रियतमा तिरछी-पैनी चितवन वाली हो और प्रियतम दकिया-नुसी हो तो महाभारत फिर से आरम्भ। प्रियतमा कहती है—"हे कान्त जिस प्रकार के आदर-सत्कार मैंने किए वैसे तो कोई भी नहीं करता ।" प्रियतम प्रिया के इस प्रकार के उलाहनों भरी बातें सुन कर रूठ जाता है। वह अपना बिस्तर उठा कर घर के पीछे चला जाता है । प्रियतमा अब अपने बारह वर्षों के बाद घर आए प्रियतम को मनाती है—"ओ काली-काली घटाओं और चमचमाती बिजली की तरङ्गो, तुम सारी रात खूब जोर से बरसो, ताकि मेरे पतिदेव फिर मेरे पास आ जाएं।' तब काली घटाएं खूब बरसती हैं और मजबूर हो कर उसका पति पिछवाड़े से घर वापिस आ जाता है। दोनों के चेहरों पर मुस्कराहट बिखर जाती है। पल भर में ही सारे मन-मुटाव दूर हो जाते हैं।

★ ★ ★

इस प्रकार का सामाजिक जीवन संसार के कई समाजों में मिल सकता है। उनके सामाजिक जीवन में भी कई प्रकार के कलह होते होंगे, लेकिन यहां के ग्राम्य जीवन में पिछड़ापन रहने के कारण कई कुरीतियाँ जहां पनपी हैं वहां उस से बढ़ कर आदर्श भी पनपे हैं। यही आदर्श भारतीय संस्कृति के मूल-भूत आदर्श हैं।

एक ग्राम्य महिला के प्रवास-विरह तथा मान-विरह का बहुत ही सुन्दर ढंग से वर्णन किया है :—

हाथा कटोरी नौ गज डोरी शीश गुदाण[1] मैं चली,
अगड़े[2] जे जांदी[3] कांडड़ा[4] जे चुभेया।[5] कंडड़े री पीड़े हुण मुई[6],
कंडड़े दी पीड़े हुंदी[7] बुरी ।
अगड़े जे जांदी सौरे[8] थे बुलांदी कि तेरी कुल बहु हुण मुई,
कंडड़े दी पीड़े हुंदी बुरी ।
मोग्गिए[9] बहुए[10] कुल सुहागणिये गोता[11] बालिये[12],
तेरे ते जाए तेरे बैरी मरी कंडड़े दी पीड़े,
अगड़े जे जांदी सासू थे बुलांदी कि तेरी कुलबहु हुण मुई,
कंडड़े दी पीड़े हुंदी बुरी ।
नां मरेयां नां मरेयां बहुये तू बडे कुला औली[13],
बडे परवारा औली तेरे ते आए तेरे बैरी मरो,
कंडड़े दी पीड़े हुंदी बुरी ।
अगड़े जे जांदी जेठा थे बुलांदी कि तेरी कुल भरावजी[14] हुण मुई,
कंडड़े दी पीड़े हुंदी बुरी ।

1. केशों को गुथाने के लिए। 2. आगे। 3. जाती है। 4. कान्टा। 5. चुभना। 6. अभी मरी। 7. होती है। 8 ससुर। 9. मेरी। 10 बहु। 11. गोत्र। 12. वाली। 13. वाली। 14. छोटे भाई की औरत।

@tankrilipi parul arora mandi

नां मरेयां, नां मरेयां भरावजिए तेरे ते आए तेरे बैरी मरो,
कंडड़े दी पीड़े हुंदी बुरी ।
अगड़े जे जांदी जेठाणी थे बुलांदी कि तेरी कुल दराणी हुण मुई,
कंडड़े दी पीड़े हुंदी बुरी ।
नां मरेयां, नां मरेयां दराणिये[1] तेरे ते आए तेरे बैरी मरो।
कंडड़े दी पीड़े हुंदी बुरी ।
अगड़े जे जांदी नड़ाना[2] थे बुलांदी कि तेरी कुल भाभी हुण मुई,
कंडड़े दी पीड़े हुंदी बुरी ।
नां मरेयां, नां मरेयां मेरी भाभिये तेरे ते जाए तेरे बैरी मरो।
कंडड़े दी पीड़े हुंदी बुरी ।
अगड़े जे जांदी कन्ता[3] थे बुलांदी कि तेरी कुल लाड़ी[4] हुण मुई,
कंडड़े दी पीड़े हुंदी बुरी ।
मर मर ल ड़िये तूं ता कल जे मरती[5] तां आज मर,
रोपड़ा देशा ते बैद[6] मुंगाया[7], कंडड़ा खुटाया[8],
कंडड़े दी पीड़े हुंदी बुरी ।

इस गीत में बतलाया गया है कि नायिका अपने बालों को स्वयं न गुंथ कर कहीं पड़ोसी के घर जा रही है। तभी तो हाथ में तेल की प्याली और नौ गज लम्बी डोरी ले कर चली है। लेकिन चलते-चलते बेचारी के पांव में कान्टा चुभ जाता है। अब कान्टे की दर्द उस से सहन नहीं हो पा रही है। उसे लगता है कि वह इसी दर्द से न जाने कब मर जाए। चाहे दर्द कितना ही घातक क्यों न हो परन्तु सामाजिक प्रथाओं को तोड़ना वह नहीं चाहती है। इस लिए वह घर के सब से

1. देवर की पत्नी। 2. ननद। 3. पति, स्वामी। 4. पत्नी। 5. यदि मर रही हो। 6. वैद्य। 7. बुलाया। 8. निकलवाया।

वृद्ध ससुर से जाने की आज्ञा लेती है और बताती है कि—तुम्हारे कुलबहु के पांव में कान्टा लग गया है, जिस की दर्द इतनी तीखी हो रही है कि न जाने कब प्राण निकल जाएं। इस पर ससुर कहता है कि तुम तो मेरी कुलवधू हो, सुहागिन हो, अच्छे गोत्र वाली हो, तुम तो सौ वर्षों तक जीओ, मरें तुम्हारे दुश्मन।

इसके बाद वह सास के पास जाती है, जिस का स्थान भारतीय परिवार में दूसरा होता है, फिर जेठ, जेठानी और ननद के पास जा कर अपने कान्टे की पीड़ा को व्यक्त करती है। इस प्रकार वधू अपने पति के पास सीधे न जा कर आदर्श स्थापित करने के लिए वह घर के बड़े जनों से आज्ञा लेने जाती है। यद्यपि उस कान्टे को निकलवाने का श्रेय उस के पति को है जिस ने कि रोपड़ से वैद्य बुला कर उस की दर्द को शान्त किया, फिर भी परिवार में उस का स्थान जो है उसी को पत्नी ने अपनाया। चाहे वह पत्नी के लिए परमेश्वर ही सही फिर भी सम्मान की दृष्टि से उसका स्थान बाद में आता है। यही भारतीय नारी का आदर्श है, यही उस की अमिट विशेषता है।

★ ★ ★

यहां के लोक कवियों ने इसे अपने गीतों में इस रूप से उभारा है :—

दराणिये[1] लिपेया[2] ओबरा[3], ओ ओबरा,
जेठाणी जो गई घसराठ[4],

1. देवरानी ने। 2. लेपन किया। 3. नीचे की मंजिल का कमरा। 4. फिसलना।

@lankulipi..parul arora mandi

तेसा चपणी[1] रा हुआ चकनाचूर[2]
कि बहुआ जो दित्ता[3] बनवास
सूरगा[4] जो जांदिये[5] सूरगणिओ[6],
मेरे बापू जो देणा[7] सन्देश कि तुध आइ जाणा
तेरी धिया जो हुआ बनवास।

लै, लै कुड़मणिये[8] सुइना चान्दी,
मेरी धिया जो दे घर बार।
कुड़मा[9], मेरे केथी पाणा सुइना चान्दी,
लै, लै, कुड़मा सुइना चान्दी,
मेरी चपणी कने[10] सौ काम।

सुरगा जो जांदिए सुरगणिये,
मेरे चाचा जो देणा संदेहा[11] कि चाचा जी आई जाणा।
तेरी भतीजी जो हुआ बनवास।
लै, लै, कुड़मणिये, गाइयां मैंसां,
मेरी चपणी कने सौ काम।

सूरगा जो जांदिये सूरगणिये,
मेरे मामा जो देणा सन्देहा कि मामा जी आई जाणा,
तेरी भानजी जो हुआ बनवास।
मामे ता घड़ी[12] चपणी मामीये फेरेया चाक[13],

1. मिट्टी की बनी ढकनी जो घड़े पर दी जाती है। 2. चूर-चूर। 3 दिया। 4. स्वर्ग। 5. जाने वाली। 6. परियों। 7. देना। 8. लड़के की माँ और लड़की की माँ का सम्बन्ध। 9. लड़के के पिता और लड़की के पिता का आपसी सम्बन्ध। 10. के साथ। 11. सन्देश। 12. घड़ना। 13. जिस पर कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाता है।

लै, ल कुड़मणिये ग्रपणी चापणी,
हिक-जुकणी[1] मुंड-फूकणी[2],
मेरी भानजी जो दे घर बार।

लै, लै कुड़मा, चपणी, ग्रो चपणी,
मेरे केथी पाणी चापणी, हिक-जुकणी,
मूंजो[3] तेसा बहुग्रा कने सौ काम।

घर की सफाई के लिए देवरानी गोबर की लिपाई कर रही थी कि जेठानी फिसल कर गिर पड़ी, ग्रौर हाथ में जो "चपणी" ले रखी थी वह गिर कर टूट गई। दोष देवरानी का नहीं था परन्तु फिर भी जेठानी ने उसे घर से निकाल दिया, बुरा भला कहा। ग्रब देवरानी बेचारी क्या करती। उस ने ग्राकाश में उड़ती परियों से ग्रपने मायके को सन्देश भिजवाया कि मेरे बापू, माँ, चाचा, चाची ग्रौर भाई को कहना कि मुझे घर से निकाल दिया है। ग्रतः मेरी रक्षा करो। सभी ग्राते हैं ग्रौर बारी-बारी उस चपणी के बारे में हाथी-घोड़े, बर्तन, कपड़े ग्रादि देना चाहते हैं, लेकिन जेठानी नहीं मानती है। वह तो उस मिट्टी की बनी चपणी के ही सौ काम बताती है। कुछ भी हो मायके वालों के लिए यह समस्या बड़ी विकट थी।

ग्रन्त में लड़की का मामा ग्राता है। मामा ननीहाल में लड़की के लिए विशेष महत्त्व का व्यक्ति समझा जाता है विशेष रूप से विवाह के समय। ग्रतः मामी चाक फेरने लगती है तो मामा चपणी तैयार करने लगता है। जब चपणी तैयार हो जाती है तो मामा उसे भानजी की जेठानी को देने लगता है

1. छाती पीटने के लिए। 2. सिर फोड़ने के लिए। 3. मुझे।

तो जेठानी उसे लेने से इन्कार कर देती है ग्रौर कहती है कि चपणी से तो मुझे इतना काम नहीं पड़ेगा। वह तो ग्राज नहीं तो कल, उसे तो कभी न कभी टूटना ही था परन्तु बहू के साथ तो मुझे सौ काम पड़ते हैं। इस लिए मैं उस से दूर नहीं रह सकती। मुझे तो बस वही प्रिय है।

इस प्रकार यहां के लोक जीवन में एक ग्रादर्श की झलक दिखाई पड़ती है। बहू सब से पहले माता-पिता, चाचा-चाची, भाई ग्रौर मामा को बुला कर बात करती है। वह स्वयं लड़ने-झगड़ने नहीं बैठती है। जेठानी तो केवल यह देखना चाहती थी कि उसे माँ-बाप ग्रौर रिश्तेदार कितना चाहते हैं। तभी तो वह ग्रन्त में कहती है—"मेरे केथे पाणी चापणी, हिक जुकणी, मूंजो तेसा बहुग्रा कने सौ काम" ग्रर्थात् मुझे उस दो कौड़ी की चापणी से कोई मतलब नहीं है, मुझे उस बहू से ही सौ काम पड़ने के हैं। ग्रतः मुझे वही प्यारी है।

★ ★ ★

यहां की एक ग्रौर छींज बहुत लोकप्रिय है। इसे यहां की महिलायें खूब गाती हैं। भाई जब नया घर बनाता है तो बहिन उसे बधाई देती है। बहिन इस शुभ उपलक्ष पर भाभी से चोलु (यहां का एक विशेष प्रकार से तैयार किया गया घघरा) उपहार स्वरूप मांगती है। देखिए भाभी क्या कहती है—

उंच्चे उंच्चे रिढुये[1] घर बांधिया[2] भाभीये
नणद बधाई जो ग्राई,

1. पहाड़ पर। 2. घर बनाया।

सुणेया[1] तुसे नणद बधाई जो ग्राई ।
कि चो.लु लैंणा[2] बधाई ।

चो.लु जो मेरे ग्राठ-साठ तणियां गोटेया[3] जड़त्र[4] जड़ाई[5],
चो.लु देया न जाई ।

गाइयां ता भैंसियां तू लई जायां ग्रो नणदे,
गाइयां भैंसियां मां केथी पाणी,
मां ता चो.लुये लैंणी बधाई भाभिए ।

भांण्डे ता कुण्डे[6] लई जायां ग्रो नणदे,
चो.लु नी देणा जाई ।

भांण्डे ता कुण्डे मां केथी पाणे भाभिए,
मां ता चो.लुये लैंणी बधाई ।

सुईना[7] ता चांदी लई जायां नणदे,
चो.लु नी देणा जाई ।

सुईना ता चांदी मां केथी पाणा भाभिए,
मां ता चो.लुये लैंणी बधाई ।

बग्गे ता बगोटू[8] मां केथी पाणा भाभिए,
मां ता चो.लुये लैंणी बधाई ।

भरी भरी थाल मोतियां री, उपरा ते रखया चो.लु,
लई जा नणदे बधाई ।

जुग-जुग जीये भाईया-भाभिया री जोड़ी,
लोड़ी[9] रहेया ग्रटल सुहाग ।

---

1. सुना । 2. लेना । 3. गोटा । 4. जड़ा हुग्रा । 5. जोड़ना । 6. बर्तन ।
7. सोना । 8. शादी में दिये जाने वाले कपड़े । 9. चाहिए ।

भाई जब ऊंचे पहाड़ी की चोटी पर नया घर बनाता है तो बहिन इसी खुशी में भाभी के पास जा कर बधाई देती है ग्रौर उपहार-स्वरूप चो.लु मांगती है । भाभी चो.लु देना नहीं चाहती है, क्योंकि वह बहुत कीमती होता है । फिर गोटा लगा चो.लु तो ग्रौर भी ग्रधिक महत्त्व रखता है । भाभी चो.लु के बदले में ग्रौर चीज़ों का उपहार देना चाहती है, किन्तु बहिन नहीं मानती । वह गाय, भैंस, सोना, चांदी सब कुछ ठुकरा देती है ग्रौर केवल चो.लु लेने की ज़िद्द करती है । ग्रन्त में भाभी को मजबूर हो कर उसकी ज़िद्द को मानना पड़ता है । फिर तो भाभी ग्रपनी प्यारी ननद को मोतियों भरे थाल के साथ चो.लु भेंट करती है । बहिन फूली नहीं समाती है । इतना कीमती चो.लु दे देने पर बहिन, भाई-भाभी को जी भर कर ग्राशीश देती है, भाभी के सुहाग की कामना करती है ।

बहिन का हृदय भाई के प्रति बहुत ही उदार होता है ग्रौर भाई का मन बहिन के प्रति सदा शुभ कामनाएं देता है । परन्तु बहिन तो पराए घर का गहना है । वह बड़ी होती है तो बहू बन कर पराए घर चली जाती है । भाई ग्रपने घर एक सुन्दर बहू ले ग्राता है तो वही ब्याही गई बहिन का ग्रादर-सत्कार करती है । विशेष त्यौहार के दिन ननद को बुलाती है ग्रौर खूब खिला-पिला कर उसे खुशी-खुशी घर भेजती है । ठीक इसी प्रकार जैसे मोतियों से भरे थाल ग्रौर उस पर कीमती चो.लु ननद को दे कर उसे खुशी-खुशी विदा करती है ।

★ ★ ★

@tankrilipi parul arora mandi

बाही[1] थी ग्रमली जमेया[2] ग्रफु बांडदी बधाई ।
दूरे लहौरे[3] नगर बसदी उसा[4] मेरी नणदा जो सदाग्रो[5] रे
चार ता भेजे हारी-बगारी[6] पांचवा नणदा रा वीर रे
पारली झे बाटा डुल्दे जमाणी ग्राये रे

ग्रोबे[7] मेरिये नणदे बैठ तूं पटड़े केढ़े ग्रादर देऊं रे
दूधे ध्वाणिये नणद पैर ध्वाऊं दन्ताये बैसणी दूं ।

लाड्डू-सगोतिये[8] भोजन दूं झझरीये दूं ठण्डा नीर रे
भीतरा सालि़ये[9] ग्रोबरा[10] दूं जिते रतड़ा पलंग ढलाऊं रे

तिते[11] रतड़ा पलंग ढलाऊं, जीते[12] छरुढ़े-छरुढ़े पावे रे
तिते छांडी-छांडी ल्हेफ[13] भराऊं जिते फूलभरी सेज
बछाए रे

ता लटकदा[14] दीप जलाऊं रे
पटड़े ते उठ पलंगा पर बैठ किते ग्रपणा दूखडा सुनाउं रे

भाई ता तेरा चिलमें-पोशती[15] विज्या[16] चढ़ी उस पार रे
इतना जे[17] वोल्या भाभिये ननद वो घरे गई ग्रापणे रे

ग्रगड़े जे जाहीं नणदा रा विरणा जे मिलेया रूठी के
चली रे
सारी नी पोंहगी[18] ग्राधी ही खायां रुठड़े[19] नी जायां
मेरी बहिना

---

1. बोई । 2. पैदा हुग्रा । 3. लाहौर में । 4. उसको । 5. बुलाग्रो । 6. नौकर-चाकर । 7. ग्रादर । 8. लड्डू सगोती—एक विशेष प्रकार का पकवान । 9. पक्के । 10 कमरा । 11. वहां । 12. जहां । 13. रज़ाई । 14. लटकने वाला । 15. भांग पीने वाला । 16. भांग । 17. जो । 18. मिलेगी । 19. रूठ कर ।

बहिने, ग्राउंदी बहिने रण-बण छणेया[1] जांदिये भरी
तलाई[2] रे

ग्रगड़े जे जांदी सासु जे मिली कि बहुए रुठड़ी की ग्राईरे

मावा[3] बिन ग्रो सासु जी क़ेढ़ी[4] प्याहियां बापू बिन क़ेढ़ा
दाज[5] ग्रो

सासु बिन क़ेढ़ा दाह[6] सोहरे[7] बिन क़ेढ़ा लाड़

भाई ता मेरा सासु जी दसौर[8] भाभी भी मेरी बगानी[9]
जाई ग्रो ।

@tankriilpi parul arora mandi

दूर बसी ननद को बुलाने के लिए उसका वीर गया, ग्रौर ननद के ग्राते ही भाभी ने उसे बैठने के लिए पटरा दिया, दूध से ननद के पैर धोये, चांदी की थाल में सगोती (एक विशेष प्रकार का पकवान) खाने को दी। फिर भाभी उसे कमरे में ले गई जिसका पक्का फर्श बना था। ननद को रत्न से जड़े पलंग पर बिठाया, उस सुन्दर पलंग के रंग बिरंगे गोल-गोल पाये थे। फूलों से सेज सजी थी। ननद को पलंग पर बिठा कर ग्रपना रोना-धोना ग्रारम्भ हुग्रा।

भाभी बोली, "ननद तुम्हारा भाई तो बहुत ग्रालसी है, सारा दिन भांग के नशे में पड़ा रहता है।" बहिन को ग्रपने भाई के प्रति ऐसी बातें ग्रप्रिय लगीं। वह रूठ कर बाहर निकल गई। भाई ने जब उसे इस तरह से निकलते हुए देखा तो पूछा, "बहिन, तूं रूठ कर कहां जा रही है? जो कुछ भी रूखा-सूखा मेरे यहां मिलेगा, खा लेना।" लेकिन उसे तो बहुत गुस्सा ग्राया था।

---

1. ढूंढा । 2 बिस्तर । 3. माँ । 4. कैसे । 5. दहेज । 6. दर्द । 7. ससुर । 8. दूसरी जगह । 9. बगानी ।

वह एक पल भी वहां ठहरना नहीं चाहती थी वह कुछ भी कहे सुने बिना घर चली गई।

घर पहुँच कर सास ने पूछा कि तूं रूठ कर क्यों चली आई तो उसने घर की बातों को न बता कर यों ही कह दिया कि माँ के बिना मायका नहीं होता, और ससुर के प्यार जैसी कोई चीज़ लड़की के घर में नहीं होती। वह अपने भाई, माँ-बाप की उपेक्षा नहीं करती। उसे अपने मायके की उतनी ही दर्द होती है, जितनी माइके वालों को लड़की की। खून का सम्बन्ध भी यही कहता है।

★ ★ ★

इन लोक गीतों में यहां एक ओर सामाजिक एवं पारिवारिक संबन्धों की निष्पक्षता को उभारा वहां दूसरी ओर यहां के राजाओं ने स्वार्थहेतु जो मनमाना व्यवहार किया है उसे भी यहां के लोक कवियों ने बहुत ही सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है।

यहां तक कि जिस प्रकार हवा का बादलों पर, चीते का मृगों पर, प्रकाश का अन्धेरे पर अधिकार रहा है उसी प्रकार इन राजाओं और राणाओं का प्रजा पर मनचाहा अधिकार रहा है। इन के जी में जो आता था, करते थे। दण्ड और पुरस्कार का कोई विधान नहीं था, इन के वचन ही विधान का कार्य करते थे। राजा के सुख में ही जनता का सुख और राजा के दुःख में ही प्रजा का दुःख समझा जाता था। राजा द्वारा किया गया कोई भी दुष्कर्म सब प्रकार से क्षम्य था।

ऐसे ही राजा का उल्लेख यहां के लोक गीतों में मिलता

है, जिस ने रूपणु नाम के धोबी की लड़की से विवाह किया। एक ग़रीब घर की बेटी महल में जा बैठी। राजा की बहुत सी रानियां थीं, उनको यह फूटी आँख न भाया कि राजा एक मामूली लड़की के लिए सुध-बुध खो बैठे। उन्होंने धोबिन को ज़हर दे कर मार दिया। जीवन धोबिन का गया, राजा का सब कुछ सलामत था। बेचारे रूपणु ने दुखद हृदय से इस गीत को इस प्रकार लिखा कि आज भी यहां की औरतें इसे गाये बिना नहीं रहतीं :—

धोबणा[1] जे जांदी[2] वेवा[3] सालुये[4] धोणे
सालु ता धोणा घीये-खण्डे[5] सालुये धोणे जाणा।

सालु ता हुंदा[6] हां वेवो दखणी, कि सालुये धोणे जाणा
धोबी ता धोंदा[7] वेवो कपड़े, धोबणा धोंदी सालु,

धोबी ता धोंदा वेवो कपड़े राजा ता जांदा[8] हेड़ा[9] खेलणे
धोबणा ता हुंदी वेवो बांकि वो........

राजा ता पूछदा कि कुण[10] हुंदी तू ?
तूं बोहरी[11] ब्राह्मणी कि हुंदी केसी[12] राजे दी जाई[13]
नां हाऊं[14] हुंदी बोहरे री, नां केसी राजे दी जाई
हाऊं हुंदी रूपणु री जाई।

चार भी ता सर[15] गड़दा[16] राजा, धोबण व्याही चुकाई[17]
अगे-अगे[18] धोबणी रा डोला, पीछे राजे दा घोड़ा,

---

1. धोबिन। 2 जाती है। 3 बहिन के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द। 4. दुप्पटा। 5. घी और खांड से। 6. होता है। 7. धोता है। 8. जाता है। 9. शिकार। 10. कौन। 11. व्यापारी की लड़की (बोहरा यहां की एक जाति का नाम है जो अधिकतर व्यापार करती है)। 12. किसी। 13. राजा की लड़की। 14. न मैं। 15. खम्बे। 16. गाड़ता है। 17. कर लिया। 18. आगे-आगे।

@tankrilipi parul arora mandi

सब्रे-सब्रे[1] राणियां झरोखेया बैठी,
एभी कोई सौंकण आई ।

धोबण ता भेजी मैहला जो ।

आपू[2] ता खायां झींझण[3] धोबणी जो बासमती रिन्हायां[4]
आपू ता खायां रूखा-सुखा धोबणी वो लुचियां[5] पकायां
आपू ता पहनेयां सुईना-चांदी धोबणी जो हीरे-मोती ।

राजा ता बरध्या[6] कचैहरी जो धोबण महला आई
धोबणी जो दीते[7] वावरू[8] बिच पाया मौहरा[9]
खांदे-खांदे होठा[10] पई तिरमिरी[11] कालजे[12] पया दाह ।

राजा जी ओ तुसारी[13] धोबण गई समा[14]

इतना ता सुणेया[15] राजे हाथे थे छाडी कलम
इतना ता सुणेया राजे आंसुये भरेया रूमाल

न देखेयां[16] मेरी धोबणी जो फूकदे[17]
ना देखेयां मेरी धोबणी जो जालदे[18]

मा काठा[19] रा बनाणा संदूक
धोबणी ता ओ देणी परभाई[20] ।

राजा शिकार खेलने जंगल की ओर जा रहा था कि सहसा उसने नदी घाट पर कपड़े धो रहे धोब्री और धोबिन को देखा। धोबिन अत्याधिक सुन्दर थी। राजा वहीं घोड़े से

1. सभी। 2. अपने-आप। 3. एक प्रकार के चावल। 4. पकाना। 5. विवाह में पकाये जाने वाली विशेष प्रकार की रोटियां। 6. गया। 7. दिये। 8 घी में तली हुई मीठी रोटियां। 9. ज़हर। 10. ओंठ। 11. जलन। 12. कलेजे में। 13. तुम्हारी। 14. देहान्त। 15. सुना। 16 देखना। 17. जलाना। 18. जलाना। 19. लकड़ी। 20. बहा देना।

@tankrilipi.parul arora mandi

उतर गया और जा कर धोबिन से पूछने लगा—'तू कौन है? तू तो मुझे किसी व्यापारी की लड़की या राजकुमारी जान पड़ती है।"

धोबिन देखने में बहुत ही सुन्दर थी, शरमा कर बोली, "मैं न तो किसी राजा की बेटी हूं और न ही किसी व्यापारी की लड़की हूं। मैं तो बेचारे इस धोबी रूपणु की बेटी हूं।"

राजा ने जब से उसे देखा था उस पर मोहित हो गया था। मन ही मन यह निश्चय कर लिया था कि मैं इसे अपनी रानी बनाऊंगा। फिर भला राजा को रोकने वाला कौन था। राजा उसे डोली में सजा कर अपने महल ले गया। राजा की दूसरी रानियों ने जब नई रानी को देखा तो मन ही मन जल उठीं। राजा का हुकम था कि नई रानी को अच्छे-अच्छे पकवान खिलाये जाएं और हीरे मोती से जड़े आभूषण पहनाये जाएं। उसकी देख-रेख की आज्ञा दे कर राजा अपने न्यायालय चला गया। इर्ष्या से भरी रानियों ने पकवानों के बीच मौहरा नाम का विष उसे खिला दिया। जिसके खाते ही बेचारी धोबिन के कलेजे में भयंकर पीड़ा अनुभव होने लगी और उसी समय छटपटा कर उसने हमेशा के लिए आँखें बन्द कर लीं।

जब राजा ने यह दुःखद समाचार सुना तो बहुत दुःखी हुआ। राजा यह नहीं चाहता था कि वह अपनी सुकुमार धोबिन का दाह-संस्कार करे। उसके अद्वितीय सौंदर्य को अग्नि की भेंट चढ़ाना उसे दुःखतर प्रतीत हो रहा था। इस लिए राजा ने लकड़ी का एक सुन्दर संदूक बनवा कर उसे जल में प्रवाहित कर दिया।

इस छींज के अन्तिम भाग में जब राजा को पता चलता

है कि धोबिन को जहर दे दिया गया है तो वह उसे जलाना नहीं चाहता है शायद इस लिए कि उसकी सुन्दरता को वह अपने हाथों से मिटाना नहीं चाहता है। इस भाग में कवि की अभिव्यक्ति बहुत ही सुन्दर बन पड़ी है।

★ ★ ★

एक अन्य लोकगीत में कवि ने गोरी और सांवली की तुलना में अपने भाव इस प्रकार व्यक्त किए हैं :—

किधर दा सुनियार[1] सांवला, सांवली रा रंग सुहावणा
पारिहें[2] जांदेया[3] राजपूता, दो जणी रा मूल[4] करी जा[5]
ओ पिया सांवली रा रंग सुहावणा।

गोरी दा मोल लाख टका, सांवली रा लाख हजार,
ओ पिया ! सांवली रा रंग सुहावणा।

गोरी न्ह वे[6] सूके[7] छपड़े[8], सांवली न्हाये गंगा नीर
ओ पिया ! सांवली रा रग सुहावणा।

गोरी जो ता सजदा[9] कुंगु[10]-काजल,
सांवली जो सजदा सुआ[11] लाल,
ओ पिया ! सांवली रा रंग सुहावणा।

गोरी ता खाये सुके टुकड़े[12], सांवली चावे[13] बीड़ा पान,
ओ पिया ! सांवली रा रंग सुहावणा।

1. सुनार। 2. उस पार से। 3. जाने वाले। 4. कीमत। 5. कर जा। 6. स्नान करे। 7. सुखे हुए। 8. छोटा तालाब। 9. शोभा देता है। 10. कुमकुम। 11. गहरा। 12. रूखा-सुखा भोजन। 13. चबाये।

पारियें[1] जांदेया[2] राजपूता, हटेया नी लोड़ी[3] दूजी बार,
ओ पिया ! सांवली रा रंग सुहावणा।

एक बार दो औरतों में इस बात पर झगड़ा खड़ा हो गया कि गोरी का मूल्य अधिक होता है या सांवली का। उन में छींटा-कशी होने लगी। पास ही से कोई राजपूत जा रहा था, उन दोनों ने उसे पुकारा—

"ओ जाने वाले राजपूत ! हमारे बीच एक झगड़ा खड़ा हो गया कि गोरी का रंग सुहावना होता है या सांवली का, अब तूं ही हमारा झगड़ा निपटा दे।"

वह कहता है—

"गोरी का मोल अगर लाख टका है तो सांवली का लाख हज़ार टका है, इस लिए सांवला रंग ही सुहावना होता है। गोरी का रंग इतना सुहावना नहीं होता है। गोरी अगर सूखे तालाब में नहाती है तो सांवली गंगा जैसे पवित्र जल से नहाती है, क्योंकि उसका रूप तो उस सांवले सुनार (कृष्ण) ने ही जैसे स्वयं घड़ा है। गोरी को कुमकुम माथे पर अच्छा लगता है और काजल की धार से नयन और भी रसीले प्रतीत होते हैं। लेकिन सांवली को तो लाल सिन्दूर ही सुहावना लगता है। गोरी को यदि काली चुनरी अच्छी लगती है तो सांवली को लाल चुनरी ही सजती है।"

वह आगे समझाने लगता है—

"गोरी यदि रूखा-सुखा खाती है तो सांवली पान चबाते

1. उस पार से। 2. जाने वाले। 3. चाहिए।

@tankrilipi parul arora mandi

हुए ही भली लगती है। गोरी तो हमेशा मायके जाती रहती है लेकिन सांवली तो घर पर रहती है। क्योंकि उसे वहीं पर बहुत आदर मिलता है।"

राजपूत का विचार है कि हर तरह से सांवली का रंग ही सुहावना होता है। इस पर गोरी को गुस्सा आ जाता है और वह उसे बुरा-भला कहती है कि भगवान करे तू कभी दूसरी बार इस रास्ते से न गुजरे।

उपरोक्त छींज में कवि ने राजपूत के माध्यम से जो गोरी और सांवली की बात कही है वह केवल कवि हृदय की उदारता का प्रतीक है। गोरी सभी के लिए सुन्दर प्रतीत होती है लेकिन सांवली की जो प्रशन्सा कवि ने यहां की है वह सराहनीय है।

★ ★ ★

इन छींजों में उस समय के कवियों ने सामाजिक जीवन का वास्तविक रूप हमारे सामने रखा है। एक ओर जहां सास बहू को अपनी बेटी समान समझती है, वहां दूसरी ओर सास का बहू के प्रति घिनौना व्यवहार भी सुनने को मिलता है। बात दुर्व्यवहार तक ही सीमित नहीं रहती है बल्कि बहू को अपना जीवन तक भी समाप्त कर देना पड़ता है या सास स्वयं ही उसे मार डालती है। इन्हीं भावनाओं को कवि ने प्रस्तुत छींज में प्रकट किया है :—

हाऊं[1] ता चल्या[2] आमां नौकरी, ओ नौकरी,
बहुये[3] जुगती[4] रखेयां[5]।

1. मैं। 2 चला। 3. बहू को। 4. ठीक तरह से। 5. रखना।

आपू[1] ता खायां आमां सूकियां, ओ रूखियां[2], ओ रूखियां,
बहुये जो बावरू[3] ख्वाया[4]।

आपु ता पैन्हेयां[5] मावे[6] मोटी छींट, ओ मोटी छींट,
बहुये जो मखमल पन्हायां[7]।

आपु ता सोयां[8] मावे धरती, ओ धरती,
बहुये जो मांजा[9] ढलाया[10]।

तू ता जा पूता[11] नौकरी, ओ नौकरी,
बहुये[12] मां[13] रखणी जुगती[14]।

बेटा जब गांव से नौकरी करने शहर जाने लगा तो अपनी मां को कहता है—

"देख माँ, यह तेरी बहू मुझे अपनी जान से भी प्यारी है, मैं शहर जा रहा हूं, तूने इसे बड़े प्रेम से रखना। अपने-आप भले ही रूखी-सूखी खा लेना लेकिन अपनी बहू को कभी नाराज़ न करना, इसे बावरू (घी में तली हुई मीठी रोटियां) खिलाना। माँ, यदि तू छींट के कपड़े पहनेगी तो बहू को मखमल पहनाना। अगर स्वयं धरती पर सोयेगी तो बहू को पलंग पर सुलाना।"

बेटे को अपनी पत्नी से बेहद प्यार था। वह उसका वियोग सहन नहीं कर सकता था। इस लिए माँ को समझाता गया कि उसे कोई कष्ट न हो। माँ बहू से बहुत जलती थी, वह उसे दिल से नहीं चाहती थी इस लिए बेटे का मन रखने के

1. अपने आप। 2. रूखी-सूखी। 3. मीठी रोटियां। 4. खिलाना। 5. पहनना। 6. माँ। 7. पहनाना। 8. सोना। 9 पलंग। 10. बिछाना। 11. बेटे। 12. बहू। 13. मैंने। 14. कुशलता से देखभाल करना।

@tankrilipi parul arora mandi

लिए उसने कह दिया कि पुत्र तू निश्चिंत होकर नौकरी करने जा, मैं बहू को बड़े आराम से रखूंगी। लेकिन जब बहुत दिनों के बाद वह घर आता है तो उसे क्या देखने को मिलता है :—

हाऊं[1] ता आया मावे नौकरी ते[2], ओ नौकरी ते,
कि बहू तेरी सुझदी[3] नींही[4]।

से ता[5] गई बच्चा आगी, जो[6], ओ आगी जो,
देर तेसे[7] तेथी[8] हुंगी[9] लगाई।

सारा पड़ोस ता आमा तोपी[10] मारेया, ओ तोपी मारेया,
बहू तेरी सुझी नींही।

से ता गई बच्चा प्याहंदा[11] जो, ओ पाणियें जो,
देर तेसे तेथी हुंगी लगाई।

प्याहंदा ता आमा तोपी आया, ओ तोपी आया,
बहू तेरी सुझी नींही।

से ता गई हुंगी बच्चा प्याहियां[12], ओ प्याहियां।
देर तेसे तेथी हुंगी लगाई।

चोलणी[13] ता टांगी मावे कीलिया[14], ओ कीलिया,
ये भी ता हुंगी केसरी[15] ?

ल्हौरा[16] ते आई बच्चा बैहणा[17], ओ बैहणा,
ये ता हुंगी तेसारी[18] ?

---

1. मैं। 2. से। 3. दिखाई देती। 4. नहीं। 5. वह तो। 6. आग को। 7. उसने। 8. वहां। 9. होगी। 10. ढूंढा। 11. पानी को। 12. मायके। 13. चोली। 14. खूंटी। 15. किस की। 16. लाहौर 17. बहिन। 18. उसकी।

@tankrilipi parul arora mandi

उपरा ते पऊंदा[1] मावे लहु[2], ओ लहु,
ये भी ता हुंगा आमा केसरा ?

सरगा[3] ते टुखदे[4] बकरे, ओ बकरे,
ये भी ता हुंगा तेसरा।

बहू ता मारी दिति आपणी, ओ आपणी,
ढंग एवे[5] किधी[6] जो लांदी[7]।

पाप ता लैया हुंगा आमा आपु, ओ आपु,
रंडुया[8] ता कित्ता[9] हाऊं।

बहुत दिनों के बाद जब लड़का घर आता है, तो बहू उसे दिखाई नहीं देती है। वह माँ से पूछता है—

"माँ, मैं तो नौकरी से आ गया हूं लेकिन, तेरी बहू मुझे दिखाई नहीं दे रही है। क्या बात है ?"

माँ कहती है—

"बेटा, वह तो पड़ोस में आग लेने गई होगी।"

वह पास-पड़ोस सब जगह ढूंढ़ता है लेकिन उसे अपनी पत्नी वहां भी नहीं मिलती है। तब वह माँ से कहता है कि माँ उसे तो मैंने सब जगह ढूंढ़ लिया पर वह कहीं भी नहीं मिलती है तब माँ फिर कहती है कि बेटा वह कुएं पर पानी लाने गई होगी और वहीं पर देर लगा दी होगी। वह कुएं पर जा कर भी ढूंढ़ता है लेकिन उसे वहां भी नहीं मिलती है। जब

---

1. पड़ता है। 2. खून। 3. आकाश। 4. कट रहे। 5. अब। 6. किस लिए। 7. लगाती है। 8. विधुर। 9. किया।

वह माँ से पुनः पूछता है कि माँ तेरी बहू तो वहां भी नहीं है। तो माँ फिर बहाना लगा देती है कि तब वह अपने मायके चली गई होगी। तभी बेटे को अपनी पत्नी की चोली खूंटी के साथ टंगी हुई दिखाई देती है। उसे संदेह हो जाता है और वह माँ से फिर पूछ लेता है कि माँ यह टंगी हुई चोली किस की है? माँ उत्तर देती है—

"बेटा, यह तो तेरी बहिन की है जो लाहौर से आई है।"

तब बेटे को ऊपर से टपकते हुए खून की बूंदें दिखाई देती हैं। जब वह इसका रहस्य भी जानना चाहता है तो माँ फिर बहाना करते हुए कहती है—

"यह तो बेटा स्वर्ग में बकरे कट रहे हैं उन्हीं का खून है।"

माँ की इन बातों से उसका विश्वास दृढ़ हो जाता है कि माँ ने मेरी पत्नी को मार दिया है। उसे बहुत दुःख होता है और वह माँ से कहता है कि माँ अब बहाने क्यों लगा रही हो। अपनी बहू को मार कर पाप तो तुमने स्वयं किया ही और मुझे विधुर बना दिया।

★ ★ ★

स्पष्ट है कि सास और बहू को ले कर हत्याएं उस समय भी हुआ करती थीं और आज भी स्थिति ऐसी ही है। इन लोकगीतों के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि तथाकथित कवियों ने यहां के सामाजिक जीवन और उस समय की रूढ़ियों को निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत किया है और अपने कर्त्तव्य को निभाया है। एक और छींज इसी संदर्भ में उल्लेखनीय है :—

@lakhmibi parul arora mandi

उपरा थे पौंदा[1] ओ मुईए[2] डोरडिये,
कि बहुतीय गसुंमुड़ये[3] लाल।

वीरणा ता आया पौहणा[4] कि केहड़े[5] वीरणा जो
आदर देऊं।

दराणी[6] वे जठाणी पीठ ते पटड़ा[7],
मूंजो[8] ता मांजरुये[9] टोटा[10]।

दराणी वे जठाणी घरे ओ पलंग मूंजो दरिये रा टोटा

दराणी वे जठाणी घरे लहेफ-दोहड़ियां[11]
मूंजो कमलिये टोटा।

दराणी वे जठाणी धरे ओखली री झींझण
मूंजो कोदरे[12] टोटा।

दराणी वे जठाणी घरे बकरे टुकांदी[13]
मूंजो लूणे रा टोटा।

दराणी वे जठाणी हुआंई[14] प्याहिये ता पेवके[15]
मूंजो घरा रा टोटा।

ऊपर से लाल-लाल फूल की कोंपलें गिरती जा रही हैं और इधर डोरडी का भैया अतिथि बन कर आया है। डोरडी सोच रही है कि वह किस प्रकार से अपने भाई का आदर-सत्कार करे। मेरी देवरानी और जेठानी के पास तो बैठने के लिए

---

1. पड़ता है। 2. संबोधन शब्द। 3. कोंपलें। 4. अतिथि। 5. किस प्रकार। 6. देवर की पत्नी। 7. पटरा। 8. मुझे। 9. खजूर के पत्तों की बनी चटाई। 10. कमी। 11. ऊन की बनी रजाई। 12. काले रंग का अनाज जिस की रोटियां बनाई जाती हैं। 13. काटती हैं। 14. होती हैं। 15. मायके।

सुन्दर चौकी ग्रौर पटरा है लेकिन मुझे तो यहां खज्जूर के पत्तों की बनी हुई मामूली चटाई भी नसीव नहीं है। उनके पास तो पलंग, ग्रोढ़ने के लिए सुन्दर रजाई, खिलाने के लिए उत्तम प्रकार का चावल तथा बकरों का मांस है ग्रौर मेरे पास तो न दरी है, न चीथड़ों का बना हुग्रा कोई ग्रोढ़न है ग्रौर न ही खिलाने के लिए कोदरा जैसा घटिया कहे जाने वाला ग्रनाज ही है। यहां तक कि मुझे तो नमक भी नसीव नहीं है। मेरी इन देवरानी ग्रौर जेठानी को तो यहां पिया के घर भी सुख है ग्रौर माँ के घर भी। मुझे ग्रपने पति के घर भी रहना कठिन प्रतीत हो रहा है।

@tankhlipi parul arora mađ

बहिन की ऐसी दयनीय दशा देख कर भैया से रहा न गया ग्रौर कहने लगा—

खादे ता खादे वैहणे सबे-सबे भोजन चलो प्याहियें जाणा।

बहिन, तेरे घर का मैंने सब कुछ खा लिया, सब प्रकार के भोजन खा लिए। लेकिन ग्रब मेरे साथ घर चल। मैं तुझे ही लेने ग्राया हूं। इस पर बहिन सब से पहले ग्रपने ससुर से मायके जाने की ग्राज्ञा लेने जाती है :—

वजीरा[1] जे कमंदा[2] सौग्ररा[3] जी बैठेया कि
मूं जो प्याहियें जाणा,

हाऊं भी नी जाणदा[4] ग्रो फूलबहुए कि
जाई ग्रापणी सासु जो पूछ।

चरखा जे कातदी ग्रो सासु जी, कि
मूं जो प्याहियें जाणा,

1. मंत्री। 2. पद पर ग्रासीन। 3 ससुर। 4. जानता हूँ।

हाऊं भी नी जाणदी ग्रो फूलबहुए कि
जाई ग्रापणे जेठा जो पूछ।

सुईने जे तोलदा ग्रो जेठ जी, कि
मूं जो प्याहियें जाणा,
हाऊं भी नी जाणदा ग्रो फूलबहुए कि
जाई ग्रापणी जेठाणी जो पूछ।

कसिदा[1] जे काढदीये[2] ग्रो मेरी जठाणिये कि
मूं जो प्याहियें जाणा,
हाऊं भी नी जाणदी ग्रो कुलबहुए कि
जाई ग्रापणी नणदा जो पूछ।

खिनुये जे खेलदी[3] ग्रो मेरी नणदे कि
मूं जो प्याहियें जाणा,
हाऊं भी नी जाणदी भाभीये कि
जाई ग्रापणे कंत जो पूछ।

घोड़ु जे पीढ़देया[4] कंत जी ग्रो मेरेया कि
मूं जो प्याहियें जाणा,
ल्यावा[5] ग्रो ग्वा लुग्रो[6] पाजे री छटियां[7],
ग्रो पाजे री छटियां
ऐसा री जाऊं जाऊं देऊं चुकाई।

पारले झे धारे मोईये रुण-बुगिये[8] कि
थोड़े झे निठड़े[9] हो,
कि तुध पीछे मेरा प्याहियां, ग्रो पेवका[10]।

1. कढ़ाई करती हुई। 2. निकालने वाली। 3. गुड्डी का खेल। 4. घोड़े पर बैठने वाला। 5. लाग्रो। 6. ग्वालो। 7. पाजे नामक वृक्ष की पतली शाखायें। 8. रंग-बिरंगी ग्रौर हरी-भरी पहाड़ियां। 9. नीचे। 10. मायका।

जब वज़ीर की तरह बैठे ससुर से बोलने जाती है तो ससुर जवाब देता है—

"ओ मेरी फूल जैसी कोमल बहू, इसके बारे में मैं क्या कहूं इस बात की आज्ञा तो तू अपनी सास से ले।"

उसकी सास चरखा कात रही थी। वह कहती है—"सासु जी, मैं अपने मायके जाना चाहती हूं इस लिए मुझे जाने की आज्ञा दो।"

इस पर सास उत्तर देती है कि इस बारे में मैं क्या कहूं। तू अपने जेठ से पूछ। तब सोना तोलते हुए जेठ के पास जाती है और वही बिनती करती है। इस पर जेठ कहता है कि तू अपनी जेठानी से पूछ। जब कढ़ाई करती हुई जेठानी के पास बहू जाती है तो वह उसे ननद के पास भेजती है। और जब बहू गुड़ियों के साथ खेलती हुई ननद के पास पहुंचती है तो ननद भी उसे यही कहती है—"भाभी जी, मायके जाने के लिए तो भाई जी से ही आज्ञा लेनी पड़ेगी।" आखिर जब वह अपने प्रियतम से मायके जाने की प्रार्थना करती है तो गुस्से में वह ग्वालों से कहता है कि जाओ और पाजे की छटियां ले आओ। इसकी जाऊं-जाऊं कहना चुप कराऊं।

अन्ततः जब उसका पति भी उसे मायके जाने से इन्कार कर देता है तो वह धीरज धर लेती है। उसका भैया बिना बहिन को साथ लिए घर चला जाता है। और इधर बहिन दुःख भरे हृदय से सामने वाली रंग-बिरंगी और हरी-भरी पहाड़ियों से कहती है कि वे थोड़ी सी नीचे यदि हो जाएं तो वह अपना मायका देख सके। इसी से उसे शान्ति मिलेगी।

यह नारी के भाग्य की विडम्बना ही तो है कि अपना घर छोड़ कर उसे नया घर बसाना पड़ता है, नये लोगों में आ कर जीना पड़ता है और उसी वातावरण में जीवन पर्यन्त रहना पड़ता है। नये परिवार में रह कर वहां के अनुशासन में रहना पड़ता है। सामाजिक रीति-रिवाजों को मानना पड़ता है। वह इतनी विवश हो जाती है कि माँ-बाप और मायके के रिश्तेदारों से मिलना भी दूभर हो जाता है। इन्हीं मर्यादाओं में भारतीय नारी आज तक सभी कुछ सहती आई है।

★ ★ ★

परिवार में देवर-भाभी का विनोद बड़ा लोकप्रिय होता है। देवर कभी तो भाभी को रुलाता है और कभी हँसाता है। कभी भाई से उसके गुप्त रहस्यों को प्रकट कर, डांट भी दिलवाता है, तो कभी स्वयं ही उसकी वकालत करने बैठ जाता है। भाबी, देवर को छोटे भाई समान समझती है और देवर, उसे माँ तुल्य। देवर-भाभी का मनमुटाव पल में तोला और पल में माशा हो जाता है। कुछ ऐसे ही भावों से भरी एक और छींज :—

चकेया घड़ोलु गोरिये पाणियें जो जांदी,
कि हुण घड़े जो वाल नी लांदा कोय।
पारिहें[1] भी जांदेया[2] राजे देया नौकरा,
मेरे घड़े जो वाल जे लगाई जा।

---

1. उस पार से। 2. जाने वाले।

हाऊं भी ता हुंदा भाभीये देवर तेरा,
कि तूं भी हुंदी भाभी मेरी।

ग्रागे जे जांदी पैर जे घरसाठदा[1],
कि घड़े री हुई जांदी ठिकरी[2]।

ग्रागे जे जांदी सौहरा जे झीड़केया[3],
सौहरा जे झीड़केया, सासू जे झीड़की।
देवर देन्दा[4] दलास[5] वे।

ग्रो टके-टके रा घड़ा तेरा जे भजेया[6],
लाख टके री भाभी मेरी ग्रो।

हाऊं भी ता हुंदा भाभीये देवर तेरा,
तूं भी हुंदी भाभी मेरी।

चांद सी गोरी भाभी घड़ा उठा कर पानी भरने तो चली गई पर ग्रब सिर पर रखने के लिए कोई भी हाथ लगाने वाला दिखाई नहीं दे रहा है। बस, इसी से वह परेशान है। तब एकाएक उसे दूर कोई जाता हुग्रा दिखाई देता है ग्रौर वह उसे राजा का नौकर समझ कर ग्रावाज़ लगाती है ग्रौर कहती है कि यहां ग्रा कर मेरे पानी से भरे घड़े को उठाने में मेरी थोड़ी सी सहायता कर दे। लेकिन जब वह निकट ग्राता है तो ग्रपनी भाभी को पहचान लेता है ग्रौर कहता है—

"मैं तो राजे का नौकर नहीं बल्कि तेरा देवर हूं ग्रौर तू मेरी भाभी है। खैर, देवर घड़ा उठाने में भाभी की सहायता

1. फिसल कर गिर जाती है। 2. मिट्टी का टुकड़ा। 3 गुस्से में कुछ कहना।
4. देता है। 5. विश्वास दिलाता है। 6. टूटा।

कर देता है ग्रौर वह घर की ग्रोर चल पड़ती है। चलते-चलते उसका पैर फिसल जाता है ग्रौर घड़ा कई टुकड़ों में बिखर जाता है। घर पहुंचती है तो ससुर उस पर गुस्से होते हैं। जब ससुर कहने लगे तो सास को भी कहने का मौका मिल गया, वह भी डांटने-फटकारने लगी। परन्तु यहां भी देवर भाभी की हिमायत करता है। वह कहता है—

"माँ, यह घड़ा तो तेरा टके दो टके का टूटा होगा, पर मेरी लाख टके की भाभी को क्यों डांट रही हो?" भाभी, तू मत घबरा। मैं तेरा देवर हूं ग्रौर तूं मेरी भाभी है। इस लिए जो भी तुझे कुछ कहेगा मैं तेरी सहायता करूंगा।

★ ★ ★

ग्राज के सामाजिक जीवन में हम कई प्रकार के परिवर्तन देख रहे हैं। उदाहरणतः पहले हमारा पारिवारिक जीवन इतना ग्रस्त-व्यस्त नहीं था जितना ग्राज है, हम जितने उन्नत ग्राज हैं उतने पहले नहीं थे। जो स्वतन्त्रता ग्राज हमें मिली है वह कल बेड़ियों से जकड़ी हुई थी। इसे मात्र परिवर्तन तो माना जा सकता है पर कोई उपलब्धि नहीं। क्योंकि परिवर्तन एक नियम है तो उपलब्धि नियम से बाहर की देन है। ग्राज यदि इस युग में एक बालिग युवती या युवक को सहयोगी ढूंढने की स्वतन्त्रता मिल रही है तो यह बदले हुए युग की उपलब्धि नहीं है। क्यों कि ऐसा तो पहले भी होता था। इस संदर्भ में इस छींज के भाव पूर्णतः स्पष्ट हैं :—

एकी धारा गिधका[1] हुग्रा, ग्रो गिधका हुग्रा,
दूजी धारा बादल गरजे, ग्रो बादल गरजे,

1. धमाका।

@ankhilipi parul arora mandi

त्रीजी धारा बिजली लस्की, ग्रो बिजली लस्की,
चौथी धारा मेहा बरसे, ग्रो मेहा बरसे,
नहीं मेरे बापू नहीं जाणा...............

कि तुध मठिये[1] कुलुये[2] जाणा, कुलुये जाणा ?
कुलुये रे लोकी[3] किरडु[4] चकदे[5],
टोपे लगांदे, उथु-तीथू कहंदे,
नहीं मेरे बापू नहीं जाणा...............

कि तुध मठिये मंडिये जाणा, मंडिये जाणा ?
मंडिये रे लोको मंडयाल कहांदे,
मारदे-जुकदे[6], सौका ल्याग्रोंदे[7]
नहीं मेरे बापू नहीं जाणा...............

कि तुध मठिये सगेते[8] जाणा, सगेते जाणा ?
सगेता रे लोको सगेतड़ कहांदे,
फीरदे[9], प्युली पघड़ी[10] जे बांधधे[11],
नहीं मेरे बापू नहीं जाणा...............

कि तुध मठिये टिल्लुये[12] जाणा, टिल्लुये जाणा ?
टिल्ले रे लोको टियाल कहांदे,
खरा जे पैहनदे, झीझण रिन्हांदे, बकरे टुकांदे,
हां, मेरे बापू टिल्ले जाणा . ...

---

1. लड़की। 2. कुल्लू (हिमाचल प्रदेश का एक ज़िला)। 3. लोग। 4. बांस की लम्बी टोकरी। 5. उठाते हैं। 6. पीटना। 7. सौतन लाते हैं। 8. सुन्दर-नगर (मण्डी का एक ज़िला)। 9. घूमते हैं। 10. पीले रंग की पगड़ी। 11. बांधते हैं। 12. कांगड़ा का एक गांव।

@tankrilipi parul arora mandi

जब पिता ग्रपनी लड़की से विवाह की बात करता है तो वह बात टाल देती है ग्रौर कहती है कि बापू चारों ग्रोर तो बिजली चमक रही है, बादल की गर्जन सुनाई दे रही है, बड़े-बड़े धमाके हो रहे हैं। नहीं बापू, मैं कहीं भी जाना नहीं चाहती हूं। तब पिता फिर बेटी से पूछता है कि क्या तू कुल्लू की ग्रोर विवाह करना चाहती है ? इस पर बेटी उत्तर देती है—

"कुल्लू के लोग तो बांस की बनी लम्बी-लम्बी टोकरियां पीठ पर उठा कर चलते हैं, टोपियां पहनते हैं ग्रौर इथु-तीथु कहते हैं। इस लिए मैं वहां नहीं जाना चाहती।"

पिता पुनः पूछता है—"बेटी, क्या तू फिर मंडी में शादी करना चाहती है ?"

बेटी वहां भी विवाह नहीं करना चाहती। कहती है—"मंडी के लोग एक तो मंडयाल कहलाते हैं ग्रौर दूसरे वे मारते हैं, ग्रौर दो-दो पत्नियां रखते हैं। इस लिए मैं वहां भी नहीं जाना चाहती।"

तब पिता सगेत (वर्तमान सुन्दर नगर) में जाने की बात कहता है। बेटी वहां भी कोई न कोई कमी ढूंढ़ निकालती है। वह कहती है—

"पिता जी, सगेत के लोग तो यूं ही घूमते रहते हैं। पीले रंग की पगड़ी पहनते हैं। नहीं बापू मैं वहां भी नहीं जाना चाहती।"

"तो क्या तू टिल्ला जाना चाहती है ?" पिता जब उस से यह पूछता है तो वह टिल्ला जाना स्वीकार कर लेती है। वह कहती है—

"टिल्ले के लोग टियाल कहलाते हैं। वे अच्छा-अच्छा पहनते हैं, झीझण खिलाते हैं और बकरे टुकाते हैं। इस लिए पिता जी, मैं वहीं विवाह करना चाहती हूं।"

★ ★ ★

विवाह के अन्तिम दिन जब लड़की अपने नये घर जाने लगती है तो उस समय का दृश्य बड़ा ही हृदय-विदारक होता है। आस-पास की सभी औरतें दुल्हन को सुखी जीवन का आशीर्वाद देती हैं और उसके अटल सुहाग की कामना करती हैं। स्वयं उसे भी नये घर जाना कितना ही सुखद क्यों न प्रतीत होता हो, पर अपने बीते दिनों की यादें आते ही आँखों से आंसू झर-झर बह निकलते हैं। बचपन की सहेलियों का साथ छूट जाता है, झूला झूलने और गुडियों के खेल खेलने के दिन बीत जाते हैं और स्वाधीनता पराधीनता में बदल जाती है। किसी अज्ञात कवि ने इन्हीं भावों को कविता में इस तरह व्यक्त किया है :—

उंचे उंचे बंगले ओजी नागण[1] जे बैठदी,
चौपड़ा[2] खेलदी, ओजी तिन बल पौंदे।
ओ मेरे लोहेयणा[3]............

सादा[4] तीन्हन[5] हेसी[6] ढोली[7] जो ओजी,
मुझ घर वरधणा[8], सावरी[9] रे देश जी ओ।
ओ मेरे लोहेयणा............

1. एक युवती का नाम। 2. चौसर का खेल। 3. एक युवक का नाम। 4. बुलावा। 5. उन। 6. शहनाई बजाने वाला। 7. ढोलक बजाने वाला। 8. पति के घर जाना। 9. ससुर के घर।

आज पर छाडया साथणी[1] रा साथ ओजी,
पीपला री पींघ, गुडिये रा खेलणा ओजी।
ओ मेरे लोहेयणा......... ..

भरीयां[2] पटारियां[3] ओ हुण हुई त्यारियां[4],
जाणा पीया रे परदेश जी ओजी।
ओ मेरे लोहेयणा............

हाथा देंदी मुंदड़ा[5], गला[6] देंदी हार.
लंघी जाणा आसा, रविया पार[7]।
ओ मेरे लोहेयणा............

अगड़े जे हांडदी पीछे मुड़ी देखदी,
झामणुये[8] घवाड़ी[9], हाखियां पूंझदी।
ओ मेरे लोहेयणा............

पेवकी रा देस बड़ा लुभावणा,
सावरी रा देस बड़ा डरावणा।
ओ मेरे लोहेयणा...... .....

नागण को वह दिन याद हो आये जब वह अपने ऊंचे बंगले में बैठ कर सहेलियों के संग चौसर का खेल खेला करती थी, झूले झूला करती थी और गुडियों का खेल खेलते हुए आनन्दित होती थी। लेकिन आज तो उसे ससुर के घर जाने की तैयारियां करनी हैं। आज अभी उसे अपने प्रियवर लोहेयणा के साथ चले जाना है। वह कहती है—

1. सहेलियां। 2. भर दी। 3 पटारियां। 4. तैयारी। 5. अंगूठी। 6. गले के लिए। 7. उस पार। 8. डोली के पर्दे। 9. खोलती है।

@tankrilipi parul arora mandi

अब उन शहनाई बजाने वालों और ढोल बजाने वालों को बुला लो। अब ससुर के घर जाने का समय आ गया है। आज सभी सगे-सम्बंधियों और सहेलियों का साथ छूट जाएगा—वह पीपल की डार पर झूला बना कर झूलना और सहेलियों के साथ गुड्डियों का खेल खेलना। अब दहेज से भी पटारियां भर दी गई हैं। मेरी माँ ने मुझे हाथों के लिए मुंदड़ी (अंगूठी) दी है और गले के लिए हार दिया है। बस, अब तो रावी नदी के उस पार जाना है।

नागण नवदुल्हन बन कर जब डोली में जा बैठती है तो विदाई की इस वेला में दुःख अनुभव होता है। वह डोली के पर्दों में से झांकती है, रोती है। डोली चलने लगती है। दो कदम आगे चलने पर फिर मुड़-मुड़ कर पीछे देखती है। सच ही मायके का देश और वहां के लोग बड़े ही प्रिय लगते हैं और ससुराल का देश अर्थात् वहां के लोग और जगह तो भयंकर प्रतीत होती है। ओ मेरे प्रिय लोहेयणा, अब अपना मायका छोड़ कर जा रही हूं।

@tankrilipi parul arora mandi

इस प्रकार इन छिंजों में मानवीय जीवन के भिन्न-भिन्न पहलुओं से सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन की वास्तविक्ता को प्रस्तुत किया है।

छिंजोटियां

[भाग तीन]

छिंजोटियां

छिंजोटियां, मण्डयाली लोक-साहित्य की एक और महत्त्वपूर्ण कड़ी है। छींजों में जहां सामाजिक एवं पारिवारिक रीति-रिवाजों पर प्रकाश डाला गया है, वहां इन छिंजोटियों में प्रेमी-प्रेमिकाओं की प्रणय गाथाओं का वर्णन किया गया है।

इन लोक-गीतों में कहीं-कहीं तो अटूट, अनन्त और आत्मिक प्रेम की झलक दिखाई देती है और कहीं पर प्रेम के नाम पर धोखा और वासना की परत चढ़ी हुई दिखाई देती है। प्यार के नाम पर ही कहीं तो जीवन को ही बलिदान कर दिया गया है और कहीं जीवन के लिए प्यार की आहुति दे दी गई है।

@tankrilipi parul arora mandi

दो-अढ़ाई शताब्दी पूर्व से चले आ रहे ये लोक-गीत आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं। आज भी खेतों में काम करने वाले हलदर, घास काटने वाली युवतियां और गऊओं को चराने वाले ग्वाले इन छिंजोटियों को खूब गाते हैं। विरह भावना से ओत-प्रोत इन लोक-गीतों में मानवीय व्यवहार और कुंठित परम्पराओं से त्रस्त जनसाधारण का भी कहीं-कहीं पर चित्रण हुआ दीखता है।

'गदरेटी' छिंजोटी कांगड़ा के राजा संसार चन्द से संबन्धित है। राजा संसार चन्द ने १७९२ ई० में मण्डी के राजा

ईश्वर सैन को जीत कर अपना राज्य स्थापित किया था। नोखू नामक गद्दी की गदरेटी अत्याधिक सुन्दर थी। राजा ने उसकी सुन्दरता का अनुचित लाभ उठा कर उससे जंगल में ही विवशतापूर्वक विवाह कर लिया, उसे राज महल ले गया। जब राजा उससे पूछता है कि तुझे किस-किस की याद आ रही है तो वह कहती है कि भेड़-बकरियों की तो थोड़ी-थोड़ी याद आ रही है, परन्तु नोखू की याद आते ही हृदय फट जाता है :—

@tankrithi bardi arora mandi

राजा जेता साहिबा सुन्दरे ओ हेड़े[1] जो बरधे[2]।
गदण से ओ बकरी चरावे[3], बकरी चरावे ।।
ओ नी मेरिये सुन्दर गदरेटिये............
चार भी ता नी मेरेया संसार चन्दा राजेया।
चार भी ता हाज़रू[4] राजा पूछणे[5] जो भेजदा ।।
गदण भी पूछणी किती....................
कि वे तूं हूंदी गदणिये बोहरी की बामणी।
कि वे तूं हूंदी किसी राजे री जाई[6] ।।
ओ नी मेरेया संसार चन्दा राजेया.........
न हूंदी हाऊं बोहरी न हाऊं हूंदी बामणी।
हाऊं भी हूंदी नोखू गदिये री गदेई ।।
ओ नी मेरेया संसार चन्दा राजेया.........
चार भी ता सर[7] ओ राजा जंगले गड़दा।
गदणी भी से वो व्याही चुकाई[8] ।।
ओ नी मेरेया संसार चन्दा राजेया.........

1. शिकार। 2. चल दिये। 3. चराने वाली। 4. नौकर। 5. पूछने के लिए। 6. बेटी। 7. खम्बे। 8. किया।

आगे भी ता गदणी री रा डोला।
पीछे थे ओ राजे रा घोड़ा।।
ओ नी मेरिये गदरेटिये.................

सबे-सबे राणियां, ओ राजा, तीरूये[1] बैठदी।
ये कुण होर ओ सौकण आई।
ओ नी मेरेया संसार चन्दा राजेया.........

खोली भी ता देयां गदरेटिये गोरिये चोला।
खोली भी ता देयां गदरेटिये काला डोरा ।।
ओ नी मेरिये गदरेटिये.................

मखमल औ अतलस पैन्याहणा[2]।
पैन्याहणा ओ मेरेया संसार चन्दा राजेया ।।
ओ नी मेरिये गदरेटिये................

मूं जो भी ता प्यारा राजा, चोला भी ता डोरा।
मखमल, अतलस नई ओ पैन्हणा ।।
ओ नी मेरेया संसार चन्दा राजेया.........

खोली भी ता देयां गदरेटिये मेरिये पीतल।
खोली भी ता देयां गदरेटिये मेरिये तांबा ।।
ओ नी मेरिये गदरेटिये.................

सोना औ चांदी पैनणा।
पैन्याहणा ओ राजे संसार चन्दा ।।
ओ नी मेरिये गदरेटिये.................

1. खिड़की में। 2. पहनाना।

मूंजो भी ता प्यारा राजा, पीतल भी ता तांबा ।
सोना चांदी नई ओ पैनणा ।।
ओ नी मेरेया संसार चन्दा राजेया.........

होर-होर जातरा[1] राजा, सबे-सबे देखियां ।
मंडिया रे मेलेया जो जाणा ।।
ओ नी मेरेया संसार चन्दा राजेया.........

थोड़ी-थोड़ी बूरी[2] ओ राजा, छेलुए-गाभूं री लगदी ।
नोखू दीये वग्गी जांदी छूरी ।।
ओ नी मेरेया संसार चन्दा राजेया.........

जब राजा संसार चन्द शिकार खेलने जंगल की ओर जा रहे थे तो अचानक उनकी नजर बहुत ही खूबसूरत एक औरत पर पड़ी। वह भेड़-बकरियां चरा रही थी। सुन्दर औरत को देख कर राजा संसार चन्द उस पर एकाएक मोहित हो गया। उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह उससे विवाह कर लेगा। उसने अपने चार नौकर उस औरत को पूछने के लिए भेजे कि वह कौन है ? नौकर उससे जा कर पूछते हैं कि क्या वह किसी बनिये की लड़की है या किसी ब्राह्मण परिवार से सम्बंध रखती है या फिर किसी राजा की लड़की है, जो इतनी सुन्दर दिखाई दे रही हो ?

वह औरत उत्तर देती है—

"न मैं किसी बनिये की लड़की हूं, न मैं किसी ब्राह्मण या राजा की लड़की हूं। मैं तो नोखू गद्दी की गदरेटी हूं।"

1. मेले। 2. बहुत याद आना।

राजा ने शीघ्र ही चार खम्बे गाढ़ कर जंगल में ही उस गदरेटी को जबरदस्ती ब्याह लिया। आगे-आगे गदरेटी डोली पर स्वार हो कर और पीछे-पीछे स्वयं राजा घोड़े पर बैठ कर राजमहल की ओर चल दिये। जब वे महल के पास पहुंचे तो राजा संसार चन्द की दूसरी रानियां, जो खिड़की के पास बैठीं राजा की वापसी की प्रतीक्षा कर रही थीं, गदरेटी के डोले को देख कर हैरान हो गई। उन्होंने मन ही मन सोचा कि यह सौतन और कौन आ गई।

जब गदरेटी राजमहल पहुंच गई तो नौकरानियों ने उस से गद्दी की भेष-भूषा यानी चोला और कमर में एक काली सात-आठ मीटर की रस्सी उतारने के लिए कहा। और यह भी कहा कि इन वस्त्रों की जगह उसे रेशम के कपड़े पहनाये जाएंगे। इस पर गदरेटी कहती है—

"ओ राजा संसार चन्द, मुझे तो यह गर्म कपड़े का चोला और काली डोरी ही प्यारी लग रही है। मैं तेरा यह मलमल और अतलस कीमती कपड़े की किसमें नहीं पहनूंगी।" लेकिन, उसे सब कुछ दृढ़तापूर्वक पहना दिया।

फिर उसे पीतल और तांबे के गहने उतारने के लिए कहा जाता है। और इन गहनों की जगह उसे सोना और चांदी पहनने के लिए मजबूर किया जाता है। इस पर भी वह राजा से कहती है—

"ओ मेरे राजा संसार चन्द, मुझे तो यह पीतल और तांबा ही प्रिय है। मैं तेरा दिया हुआ सोना-चांदी नहीं पहनूंगी।" फिर वह बहाना लगाती है कि और तो सब मेले

©sanskritipi parul arora mandi

मैंने देख लिए हैं पर मण्डी में शिवरात्री मेले नहीं देखे हैं। मैं उन मेलों को जाना चाहती हूं। राजा समझ गया कि इस सुन्दर गदरेटी का मन मेरे राज-महल में नहीं लग रहा है तभी यह मेले जाने की बात कर रही है। राजा उससे पूछता है कि तुम्हें किस-किस की याद आ रही है ?

वह उत्तर देती है—"थोड़ी-थोड़ी याद तो भेड़-बकरियों के छोटे-छोटे बच्चों की आ रही है और नोखू की याद आते ही हृदय पर जैसे छुरी चल पड़ती है। हृदय उसे ही बार-बार याद कर रहा है।"

★ ★ ★

"सैनु री जिंदड़ी" नामक यहां की एक और लोकप्रिय छिंजोटी है। इस लोक-गीत के माध्यम से लोककवि ने नारी-हृदय की व्यथा को प्रस्तुत किया है। सैनु सिपाही पहले तो शिमला की एक सुन्दर युवती से प्रेम करता है, लेकिन बाद में उसे धोखा दे कर एक और लड़की से विवाह कर लेता है। प्रियतमा के लिए यद्यपि बहुत ही हृदय-विदारक पीड़ा है, फिर भी वह अपने प्रियतम के प्रति सद्‌भावनाएं ही व्यक्त करती है। वह कहती है :—

हो इक बोले ता सैनु री जिंदड़ी[1],
पापिया, सारा शिमला लागु[2]।
राजी रैहणा सैनुआ सिपाहिया.........

1. जीवन। 2. पीछे पड़ा हुआ।

ओ सैनुए ता आंदी ओ छेवड़ी[1],
पापिया, आंदा हिक्का जो किल्ला[2]।
राजी रैहणा सैनुआ सिपाहिया.........

शिमले ता बांधियां[3] कोठियां,
पापिया, तेत ता बैठेया तूं।
राजी रैहणा सैनुआ सिपाहिया.........

ओ पापी सैनु सिपाही ! तू तो अब खुशी-खुशी अपना घर बसा। लेकिन मेरी बदनामी तूने सारे शिमले में कर दी। एक तरफ तुम्हारी जिंदड़ी यानि जिन्दगी मैं हूं और दूसरी तरफ सारा शिमला बदनाम करने पर तुला है, तूने जो पत्नी लाई—वह तो अच्छा किया, लेकिन मेरे हृदय पर तो दुःख का पहाड़ गिर गया। फिर भी ओ मेरे प्रिय सैनु सिपाही ! तुम कुशलता से अपना जीवन व्यतीत करना। बस, मेरी यही इच्छा है। फिर कहती है :—

तेरे बोले ता हाथा री घड़ियां,
ओ पापिया ! मूं जो पैरा रा तोड़ा[4]।
राजी रैहणा सैनुआ सिपाहिया.........

पापिये ता लाई मोया चुगली[5],
ओ बैरिये भी ता पाया बछोड़ा[6]।
राजी रैहणा सैनुआ सिपाहिया.........

1. पत्नी। 2. कील। 3 बांधा। 4. कमी। 5. शिकायत करना। 6. बिछोह।

ग्राज ता ग्राया तू ग्रासारा पौहणा,
कल मोया तुध बिछड़ी जाणा।
राजी रैहणा सैनुग्रा सिपाहिया.........

तेते बांडे[1] री घ्यु खिचड़ी,
ग्रो पापिया, रोंदियां ग्रो खादियां।
राजी रैहणा सैनुग्रा सिपाहिया.........

ग्रो पापी सैनु! तूने तो ग्रपने हाथ को ग्रब घड़ी भी खरीद ली ग्रौर देख मेरे पैरों को पहनने के लिए भी कुछ नहीं है। ग्रो दग़ावाज सैनु सिपाही! फिर भी मेरी यही कामना है कि तुझे खुशियां ही मिलें। सच ही किसी पापी ने हम दोनों को बिछोड़ा है।

मेरे प्रियवर सैनु! तू राजी रह। ग्राज ग्रन्तिम बार तुझे एक ग्रतिथि के रूप में बुलाया था पर ग्रब मैं इतनी पराई हो गई कि मेरे यहां ग्राना भी ग्रच्छा न लगा। तुझे क्या पता तेरे हिस्से की घी-खिचड़ी को मैंने रो-रो कर स्वयं ही खा लिया, इस लिए कि ग्रब तू नहीं ग्राएगा। खैर, कोई बात नहीं। तूने मेरे साथ धोखा किया, पर मैं तो ऐसा नहीं करूंगी। इस लिए मेरी तो यही कामना है कि तू खुशी-खुशी ग्रपना नया जीवन बिताये। कवि के इन भावों को भी देखिए :—

ग्रवार वोलेया शिमला ग्रो वे,
ग्रो पापिया, पारे भी ता वोलेया फागु[2]।
राजी रैहणा सैनुग्रा सिपाहिया.........

1. हिस्से की। 2. एक जगह का नाम।

@taakrilipi parul arora mandi

ग्रब शिमला ग्रौर फागु दूर हो गये। कहां शिमला तो कहां फागु। ग्रब तो हमारा ग्रौर तुम्हारा फासला दिन-प्रतिदिन दूर ही होता जा रहा है। ग्रच्छा, तू तो खुशी-खुशी ग्रपना जीवन बिता, पर मैं तो सारे शिमले में बदनाम हो गई, तूने कर दी। इसके बदले में भी मेरी यही दुग्रा है कि तू खुश रहे, ग्रानन्द रहे ग्रौर ग्रच्छा जीवन व्यतीत करे।

★ ★ ★

"नामी ग्रो सुन्दरा" एक ग्रौर लोकप्रिय छिंजोटी है। इस छिंजोटी में सुन्दर नामक पटवारी ग्रौर उसकी प्रेमिका मेहरी के प्रेम-सम्बंध को दर्शाया गया है। लोक-कवि कहता है :—

इक डोहरू[1] नापेया, सुन्दरा, दूजा डोहरू नापेया,
ग्रो नापी दिता बाधिये दा मुलक[2]।
नामी ग्रो सुन्दरा.........

होरियां[3] दे रोपे, ग्रो सुन्दरा, नापी-नापी रहदें,
ग्रो मेहरी दे रोपे सटेया[4] रोपा।
नामी ग्रो सुन्दरा.........

वह पटवारी था। कभी इधर खेत नापता तो कभी उधर। इसी तरह वह ग्रपना कार्य कर रहा था। लेकिन लोगों

1. खेत। 2. यहां गांव के लिए प्रयुक्त है। 3. ग्रौरों की। 4. दे दिया या मिला देना।

को उसका कार्य ठीक नहीं भाया और उस पर आरोप लगाया कि वह मेहरी नामक औरत के अधिक पास आ गया है। इस लिए लोग उसके ऊपर आरोप लगाते हैं कि वह मेहरी के हिस्से में एक खेत अधिक नाप गया है क्योंकि सुन्दर पटवारी उसे चाहता था। उससे प्रेम करता था। परन्तु मेहरी क्या कहती है इसे भी सुना जाए :—

हाखिये भी नी देखेया, काने भी नी सुणेया,
ओ लोको देंदे बदियां[1]।
नामी ओ सुन्दरा.........

मैंने तो आँखों से न उस बेचारे सुन्दर पटवारी को देखा ही है और न उसके बारे में कभी सुना ही है। लोग तो ऐसे ही बदनामी करने पर तुले हुए हैं।

@tankrilipi parul arora mandi

जब यही बात उच्च अधिकारी तक पहुंच जाती है तो चरित्रहीन के आधार पर उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है :—

हाथकड़ी[2], ओ सुन्दरा, पैरा भी वेड़ियां[3],
ओ करी दित्ता बन्ने[4] ते बाहर।
नामी ओ सुन्दरा.........

हाथों में हथकड़ी और पैरों में जंजीरें पहना कर उस सुन्दर नाम के सुन्दर पटवारी को गांव की सीमा से बाहर कर दिया जाता है। मेहरी इस अन्याय पर सुबक-सुबक कर रोती

1. बद दुआएं। 2. हथकड़ी। 3 पैरों की जंजीर। 4. सीमा।

रहती है। लोक लाज के भय से वह कहती भी तो क्या ?

★ ★ ★

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि इन लोकप्रिय लोक-गीतों के द्वारा यहां के प्रेमी-प्रेमिकाओं की प्यार-भरी कहानियों का यथार्थ चरित्र-चित्रण पढ़ने को मिलता है। यह चरित्र-चित्रण वाह्य भी है और आन्तिरिक भी इस दृष्टि से इन लोक गीतों का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है। इन छिंजोटियों के अध्ययन से उस समय की सामाजिक व्यवस्था पर भी प्रचुर प्रकाश पड़ता है।

निम्न छिंजोटी मण्डी शहर से लगभग १२-१३ कि०मी० दूर स्थित 'नगरोटा' नामक गांव के ब्राह्मण जीन्दु और ब्राह्मणी देवकु की प्रेम गाथा प्रस्तुत करती है :—

हाखियां ता तेरी ओ अम्बा दियां फाड़ियां[1],
ओ तेरे दान्द मोतियां रे दाणे।
हाथा लैंदा[2] लोटकु[3] खवे थैन्दा[4] धोतड़ु[5]
कि चलो बामणिये नहौणे जाणा।
ओ पैरा पान्दी[6] पोलड़ी[7], ओ बामणी
कि सिरा थैन्दी बिनुआ[8], ओ चकदी[9] घड़ोलु,
ओ नहौणे जान्दी बामणी।

1. आधा टुकड़ा। 2. लेता है। 3. छोटा लोटा। 4. कन्धे पर रखता है। 5. गमछा। 6. डालती है। 7. बिना तनियों का सलीपर। 8. सिर पर बर्तन टिकाने के लिए बना हुआ गोलाकार पटरा। 9. उठाती है।

ग्रामा मूंजो हुड़दी[1], ग्रो मोयेग्रा जीन्दुग्रा,
कि बापू मूंजो समझांदा, ग्रो जीन्दुग्रा,
कि नौणा रा नहौणा[2] छाडी[3] पर देयां तूं ।

मत समझायां तूं मत तूं हुड़ेयां,
ग्रो मैं कधी भी नी छाड़दी नौणा रा नहौणा ।

ग्राटा भी ता मुछदी[4] ग्रो देवकु,
प्राती[5] मंझा रखदी,
ग्रो चुल्हे पर धरी जान्दी तवा ।

हाथा लैंदी लोटकु, देवकु नौणा जो जान्दी,
ग्रो पीछे फिरदा[6] चौकीदार ।

बागा भी ता बैठदे, गल्लां-बाता कितीयां,
उमरा रे किते तकरार, ग्रो जीन्दुग्रा बाह्मणा ।

हाथा री मुंदड़ी देवकु रोई-रोई देंदी,
देन्दी ग्रो जुगा जो निसाणी[7] ।

@tankrilipi parul arora-mandi

जब चौकीदार उसे बुरा-भला कहने लगता है तो देवकु उसे कड़ी चेतावनी देती है :—

ग्रो हाथ मत लान्दा, गाली मत देन्दा,
मैं परदेसण ग्रो नमाणी[8] ।

चौकीदार भेजने वाली अपनी ही बहिन को वह दोषी ठहराते हुए कहती है :—

1. कमरे में बन्द करती है । 2. तालाब में नहाना । 3. छोड़ देना । 4. गूंथती है । 5. ग्राटा गूंथने का विशेष बर्तन । 6. घूमता है । 7. यादगार । 8. जिस का कोई सहारा न हो ।

बैहण ता मेरी जुगा री बैरण,
ग्रो तेसे ता चुगली[1] हुंगी लगाई ।

ग्रो कोरे-कोरे कागद देवकु लिखी-लिखी भेजदी,
ग्रो ग्रामा-बापू जो बदियां[2] जे देन्दी,
बैहणा जो देन्दी नूरी गाली, ग्रो जीन्दु वे बाह्मणा ।

ग्राधी-ग्राधी राती जे बामणु सुफने ग्रो सुझदा,
ग्रो निन्द नी ग्रावंदी सारी रात ।

ग्रो तिरूये चवारूये देवकु झाकी-झाकी देखदी,
ग्रो जीन्दु प्यारा नजर नी ग्रांवदा, ग्रो बाह्मणा ।

जब देवकु को अपना प्रियतम कहीं भी दिखाई नहीं दिया तो उसने नगरोटा को छोड़ दिया, लेकिन उस गांव को छोड़ते समय भी उसका विरही मन अपने प्यारे जीन्दु को ही ढूंढ रहा था :—

ग्रगे-ग्रगे हांडदी, पीछे मुड़ी-मुड़ी देखदी,
केथीक[3] रहेया ग्रो नगरा साथ ।
ग्रो पंडता ग्रो जीन्दुग्रा, छाडी ग्रो दित्ता तेरा नगरोटा,
छाड़ी ग्रो दित्ता जीन्दुये रे साथ ।

पाधरी[4] ता सड़का ग्रो देवकु, नई ग्रो जायां,
चली ग्रो जाया हुलु रे क्वाल[5], ग्रो देवकुये ।
ग्रगे-ग्रगे चलदी देवकु, पीछे मुड़ी-मुड़ी देखदी,
कि ग्रजे लंघी दित्ता मण्डीये रा दराव ।

1. शिकायत करना । 2. बुरी दुग्राएं । 3. कहां जैसे । 4. समतल सड़कें । 5. एक पहाड़ी का नाम ।

हाखियां[1] रा सुरमा, जो जीन्दुआ, रोई-रोई डुलदा[2],
तूजो मेरी दर्द नी आई, ओ मेरे जीन्दुआ बाहमणा।

सूआ[3] जे रमाल[4], ओ जीन्दुआ, रोई-रोई भिजदा[5],
छाडी ओ दित्ता जीन्दुये रा साथ।

जीन्दु ब्राह्मण जब अपनी प्रियतमा देवकु को देखता तो उसकी प्रशंसा के पुल बांध देता। वह कहता "ओ देवकु, तेरी आँखें तो आम के आधे फाड़ की तरह बड़ी-बड़ी और दर्शनीय हैं, तथा दान्त मोतियों की तरह सफेद और चमकीले हैं।

इस प्रकार की प्रशंसा करने के बाद वह स्वयं तो हाथ में छोटा सा लोटा लेता, कन्धे पर छोटी धोती रखता और देवकु को कहता कि चल, तालाब पर नहाने के लिए चलें।

अपने प्रियवर के मुख से इस प्रकार की प्रशंसा सुन कर और जाने के लिए कहने पर वह शीघ्र ही तैयार हो जाती। पांव में सलीपर पहनती, सिर पर हल्का सा घड़ा उठाती और पानी लाने के बहाने तालाब की ओर चल देती।

फिर दोनों ही मिल कर अपना-अपना दुःख-सुख कहते। देवकु कहती— "ओ प्रियवर, क्या बताऊं, जब भी मैं तुम से मिलने की कोशिश करती हूं तो माँ मुझे कमरे में बन्द कर देती है। और मेरा बाहर निकलना कठिन हो जाता है। तुम समझते हो कि मैं तुम्हें भूल गई हूं। पिता जी भी मुझे बहुत समझाते-बुझाते हैं। कहते हैं कि तू तालाब में नहाना छोड़

1. आँखों का। 2. गिरता है। 3. लाल रंग का। 4. रूमाल। 5. भीगता है।

©tankhilipi parul arora mandi

दे। लेकिन, मैंने भी, ओ प्रिय जीन्दु, साफ-साफ कह दिया है कि अब समझाने और कमरे में बन्द करने से कोई लाभ नहीं, मैं और सब कुछ मान सकती हूं पर तालाब में नहाना नहीं छोड़ सकती।"

एक बार की घटना है कि देवकु ने आटा गूंथ कर उसे परात में रखा, चुल्हे पर तवा रखा, हाथ में छोटा लोटा लिया और तालाब पर नहाने के लिए चल दी। पर तालाब पर जाने का तो एक बहाना था। वह अपने प्रियवर जीन्दु के साथ पास ही के बाग में चली गई, प्रेमभरी बातें होती रहीं, कई तकरार किये और अपने हाथ की अंगुठी जीन्दु को निशानी दे दी। और, जीवन भर एक साथ रहने के वादे करते रहे। गांव के चौकीदार ने दोनों की बातों को चुपके-चुपके सुन लिया और देवकु की बहिन से यह सब कुछ कह-सुना दिया।

चौकीदार ने स्वयं भी उसे समझाना चाहा और बुरा-भला भी कहा। पर, देवकु को तो अपने प्यार पर पूरा विश्वास था। चौकीदार को चेतावनी दी—"ओ चौकीदार के बच्चे, मुझे हाथ मत लगाना और न ही किसी प्रकार की कोई गाली निकालना। मैं तो अब पिया के परदेश की हो चुकी हूं। अब यहां मेरा कोई भी सहारा नहीं रहा है।

वह बहिन को दोषी ठहराते हुए कहती है—"मेरी बहिन तो मेरे जन्म से ही शत्रु बनी हुई है। मैं जानती हूं उसी ने मां-बाप से भी मेरी शिकायत की है। मुझे और जीन्दु को अलग करना चाहा है।"

देवकु अब अपने माँ-बाप और बहिन से बातें नहीं करती,

हाखियां[1] रा सुरमा, जो जीन्दुश्रा, रोई-रोई डुलदा[2],
तूजो मेरी दर्द नी श्राई, श्रो मेरे जीन्दुश्रा बाहमणा ।

सूश्रा[3] जे रमाल[4], श्रो जीन्दुश्रा, रोई-रोई भिजदा[5],
छाडी श्रो दित्ता जीन्दुये रा साथ ।

जीन्दु ब्राह्मण जब श्रपनी प्रियतमा देवकु को देखता तो उसकी प्रशंसा के पुल बांध देता। वह कहता "श्रो देवकु, तेरी श्राँखें तो श्राम के श्राधे फाड़ की तरह बड़ी-बड़ी श्रौर दर्शनीय हैं, तथा दान्त मोतियों की तरह सफेद श्रौर चमकीले हैं।

इस प्रकार की प्रशंसा करने के बाद वह स्वयं तो हाथ में छोटा सा लोटा लेता, कन्धे पर छोटी धोती रखता श्रौर देवकु को कहता कि चल, तालाब पर नहाने के लिए चलें।

श्रपने प्रियवर के मुख से इस प्रकार की प्रशंसा सुन कर श्रौर जाने के लिए कहने पर वह शीघ्र ही तैयार हो जाती। पांव में सलीपर पहनती, सिर पर हल्का सा घड़ा उठाती श्रौर पानी लाने के बहाने तालाब की श्रोर चल देती।

फिर दोनों ही मिल कर श्रपना-श्रपना दुःख-सुख कहते। देवकु कहती— "श्रो प्रियवर, क्या बताऊं, जब भी मैं तुम से मिलने की कोशिश करती हूं तो माँ मुझे कमरे में बन्द कर देती है। श्रौर मेरा बाहर निकलना कठिन हो जाता है। तुम समझते हो कि मैं तुम्हें भूल गई हूं। पिता जी भी मुझे बहुत समझाते-बुझाते हैं। कहते हैं कि तू तालाब में नहाना छोड़

1. श्राँखों का। 2. गिरता है। 3. लाल रंग का। 4. रूमाल। 5. भीगता है।

@tankilipi parul arora mandi

दे। लेकिन, मैंने भी, श्रो प्रिय जीन्दु, साफ-साफ कह दिया है कि श्रब समझाने श्रौर कमरे में बन्द करने से कोई लाभ नहीं, मैं श्रौर सब कुछ मान सकती हूं पर तालाब में नहाना नहीं छोड़ सकती।"

एक बार की घटना है कि देवकु ने श्राटा गूंथ कर उसे परात में रखा, चुल्हे पर तवा रखा, हाथ में छोटा लोटा लिया श्रौर तालाब पर नहाने के लिए चल दी। पर तालाब पर जाने का तो एक बहाना था। वह श्रपने प्रियवर जीन्दु के साथ पास ही के बाग में चली गई, प्रेमभरी बातें होती रहीं, कई तकरार किये श्रौर श्रपने हाथ की श्रंगुठी जीन्दु को निशानी दे दी। श्रौर, जीवन भर एक साथ रहने के वादे करते रहे। गांव के चौकीदार ने दोनों की बातों को चुपके-चुपके सुन लिया श्रौर देवकु की बहिन से यह सब कुछ कह-सुना दिया।

चौकीदार ने स्वयं भी उसे समझाना चाहा श्रौर बुरा-भला भी कहा। पर, देवकु को तो श्रपने प्यार पर पूरा विश्वास था। चौकीदार को चेतावनी दी—"श्रो चौकीदार के बच्चे, मुझे हाथ मत लगाना श्रौर न ही किसी प्रकार की कोई गाली निकालना। मैं तो श्रब पिया के परदेश की हो चुकी हूं। श्रब यहां मेरा कोई भी सहारा नहीं रहा है।

वह बहिन को दोषी ठहराते हुए कहती है—"मेरी बहिन तो मेरे जन्म से ही शत्रु बनी हुई है। मैं जानती हूं उसी ने माँ-बाप से भी मेरी शिकायत की है। मुझे श्रौर जीन्दु को श्रलग करना चाहा है।"

देवकु श्रब श्रपने माँ-बाप श्रौर बहिन से बातें नहीं करती,

बल्कि लम्बी-लम्बी चिट्ठियां लिख कर भेजती। उसमें माँ-बाप को बद्दुआएं और बहिन को तो बुरी-बुरी गालियां तक लिख देती।

लेकिन, समाज द्वारा स्थापित नियमों को तोड़ने में वह भी असमर्थ रही। देवकु और जीन्दु के प्रेम भरे सम्बंध को समाज स्वीकार न कर सका और शीघ्र ही देवकु को वह अपना गांव और सब से प्रियवर 'जिस के लिए वह सब कुछ सहती रही' छोड़ कर जाना पड़ा।

उसे रात २ भर जीन्दु सुपने में दिखाई देता रहा। कभी कमरे की खिड़की से देखती, कभी घर की किसी खिड़की से देखती पर उसका जीन्दु कहीं भी दिखाई नहीं देता। वह भी समाज के आगे झुक गया और अपनी प्रियतमा से मुख मोड़ लिया।

आखिर एक दिन उसने गांव से भी प्रस्थान कर दिया। दो कदम चलती, फिर मुड़-मुड़ कर देखती कि शायद पीछे से उसका जीन्दु आएगा और उसे जाने से रोक लेगा, या फिर शायद माँ-बाप तथा उसकी बहिन ही आ कर उसे जीन्दु के साथ रहने की आज्ञा दे देगी या यह समाज ही उसे मन इच्छा से विवाह करने की इजाजत दे देगा। पर, सब व्यर्थ हुआ। किसी ने भी उसके आंसू नहीं पोंछे। और वह नगरोटा छोड़ती चली गई।

उसे लगा जैसे उसका प्रियतम उसे कह रहा हो कि जिन सड़कों से हमेशा आना-जाना रहा, तू उन सड़कों से मत जा। शायद वहां तुझे कोई रास्ते में ही जिन्दा न छोड़े, इस लिए तू हुलु की पहाड़ी से हो कर चली जा। कभी उसे राह चलते बागों में किये तकरारों की याद आ जाती और फिर इसी तरह, आखिर मण्डी के पास ब्यास नदी पर लगा पुल भी पार कर दिया।

@tankrilipi parul arora mandi

वह राह चलते-चलते रोती रही, यादों में तड़पती रही और उसके रोने से आँखों का काजल तक भी बह गया, लाल रंग का सुन्दर रूमाल भी आंसुओं से पोंछते-पोंछते गीला हो गया। लेकिन, उस ब्राह्मण जीन्दु को अपनी प्रियतमा का तनिक भी ख्याल नहीं आया।

अतः दुःखी भाव से उसने कहा—अच्छा, "अब तो सब कुछ ही छूट गया—जीन्दु का साथ भी और नगरोटा गांव भी।"

★ ★ ★

मण्डी जनपद में गाये जाने वाली एक और लोकप्रिय छिंजोटी है—'बदी देया बामणुआं'। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कोई सूरत किसी के हृदय में इस कदर बैठ जाती है कि उसे फिर भुलाने पर भी नहीं भुलाया जा सकता। और यदि वह पास से ही निकल जाए तथा बातें भी न करे तो चाहने वाले का हृदय किस तरह व्याकुल हो उठता है। यह सब कुछ इस छिंजोटी के माध्यम से लोक-कवि ने प्रस्तुत करना चाहा है :—

ओ बदी देया बामणुआं, ओ मोया सामणी नी खड़ेयां,
ओ कालजु जो तबर लगदा।

चिटी तेरी बरदी साफा लाल सजदा,
नीला तेरा घोड़ा काठी लाल सजदी।
ओ बदी देया बामणुआं, ओ मोया[1].........

वायं, ठंढा जे पाणी बगदा[2],
ओ तेरी सौं दिला रा परमेसर जाणदा।

1. सम्बोधन वाचक शब्द। 2. बहता है।

रोंदी-रोंदी छाडी ओ जान्दा,
कि तूजो मेरा पाप लगदा ।
ओ बदी देया बामणुआं, ओ मोया ....

ओ नूरपुरा रे ठाणे[1], ओ बामणु जे जान्दा,
कि तेत मिसला[2] रोज लगदी ।
ओ भला दिला देया बामणुआं, तूं क्या जाणदा,
तेरी सौं मेरी एक जान जाणदी ।
ओ बदी देया बामणुआं, ओ मोया ....

@tankrilipi.parul arora mandi

ओ बद्दुआएं लेने वाले ब्राह्मण, जब तुम मेरे घर के सामने वाले रास्ते पर खड़े होते हो और जब मैं तुम्हें देखती हूं तो हृदय पर जैसे छुरी चल पड़ती है। इस लिए मैं तुम से बार-बार कहती हूं कि इस प्रकार सज-धज कर तू मेरे सामने मत खड़ा हुआ कर। सामने खड़े होने से बीते दिनों की यादें आती हैं। प्यार की कहानियां चल-चित्र की भान्ति कोंध जाती हैं। विशेष रूप से जब तुम सफेद बर्दी पहनते हो, सिर पर लाल रंग की पगड़ी बान्धते हो और नीले घोड़े पर सवार हो कर दफतर जाने के लिए तैयार हो कर सामने खड़े होते हो तो दिल बहुत रोता है।

ओ बद्दुआएं लेने वाले ब्राह्मण, तुम ने मुझ से किनारा कर लिया, मुझे छोड़ दिया। अब मैं तुम्हारी सूरत भी देखना नहीं चाहती हूं। तुम मुझे सताने के लिए सामने खड़े हो जाते हो। इस लिए मैं तुम से बिनती करती हूं कि तू सामने

1. थाने। 2. कागजात।

मत खड़ा हुआ कर।

मेरे दिल की बात तो परमेश्वर ही जान सकता है कि मैं तुम्हें कितना प्यार करती थी, पर तूने मुझे रोते हुए छोड़ दिया। ओ मेरी बद्दुआएं लेने वाले ब्राह्मण! तुम्हें इस व्यवहार का पाप अवश्य लगेगा। तेरा तो यह प्रतिदिन का काम है। नूरपुर के थाने में रोज मिसलें लगती हैं, रोज लोगों के फैसले करते हो, पर मेरे साथ अन्याय करके तूने अच्छा नहीं किया। ओ ब्राह्मण, मैं तुम्हारी सौगन्ध खा कर कहती हूं कि मेरे हृदय पर तुम्हें देख कर जो छुरियां चलती हैं उसे केवल मैं ही जानती हूं और कोई नहीं जान सकता। इस लिए मुझे और सताने के लिए तू सामने न आया कर। बस मेरी यही प्रार्थना है।

★ ★ ★

प्यार का रोग कोई नई सभ्यता की देन नहीं है। इन लोक-गीतों के अध्ययन के बाद यह निर्णय लिया जा सकता है कि इस प्रकार के रोग से पहले भी बहुत से लोग ग्रसित होते थे। यहां इसी प्रकार की छिंजोटी सुनने में आई है जिस में भाभी अपनी ननद से मन की बात बता रही है कि शादी के बाद भी उसे किसी अन्य युवक से प्यार हो गया है। वह उसे साफ-साफ न कह अन्दर का कोई रोग बता रही है। वह कहती है :—

कोदरे[1] रा दाणा[2] जीयुआ[3] जो जलाणा[4],
जली ओ जान्दा चकिये रा पीसणा।
ओ नणदे मेरिये............

1. काले रंग का अनाज। 2. दाना। 3. हृदय को। 4. सताना।

सौहरे नी मारी, नणदे, सासूये नी मारी,
ओ मारी आन्दी ऐस अन्दरले[1] रोग।
ओ नणदे मेरिये...........

सौरे थे नी आंदा, पेवके थे नी आन्दा,
पीन्डे[2] थे ओ नणदे, पनपेया पहाड़ी रोग[3]।
ओ नणदे मेरिये............

कुणुये[4] नी मोही, ओ वैरिया, कपड़े नी[5] मोही,
ओ मोही छाडी मीठिये जवानी।
ओ नणदे मेरिये............

दिला री लगदी, दिल मेरा जाणदा,
दूजा नी जाणदा ओ वैरिया कोय।
ओ नणदे मेरिये............

पहाड़ी रोग रे वैद्य भी भतेरे,
अन्दरले रोग रा वैद्य नी कोई।
ओ नणदे मेरिये............

ओ मेरी ननद, तुझ से क्या छिपाऊं। अब तो कोदरे का एक-एक दाना पीसना भी मेरे लिए कठिन प्रतीत हो रहा है। चक्की में मेरे से अब यह नहीं पीसा जाता। कोई रोग ऐसा फंस गया है कि मेरे से कुछ भी होना सम्भव नहीं रहा है।

क्या बताऊं ननद, मुझे न सास और ससुर की तरफ से

1 भीतर के। 2 शरीर। 3. औरतों को होने वाला रोग। 4. किसी ने। 5. कपड़ों ने।

@tankrilipi parul arora mandi

कोई कष्ट है और न ही उन्होंने मुझे मारा-पीटा ही है। बस अन्दर का ही एक रोग है जिसके कारण बड़ी दुःखी हूं।

मुझे तो यह भी पता नहीं कि यह रोग आया कहां से। ओ ननद, यह रोग न तो यहां किसी को है और न मेरे मायके में ही किसी को है। लगता है मेरे शरीर में से ही यह रोग पैदा हुआ है।

ओ ननद, मुझे तो किसी ने चाहा भी नहीं, मैं ने तो कभी अच्छे-अच्छे कपड़े भी कभी नहीं पहने। बस इस भरी जवानी के जोश ने मेरे अन्दर यह रोग पैदा कर दिया है। मेरे दिल की कहानी को कौन सुनता है, कौन जानता है। मेरे सिवाये कोई नहीं जानता है। ओ मेरी ननद, पहाड़ी रोगों के तो वैद्य भी बहुत हैं, पर इस मेरे अन्दर के रोग का इलाज तो वैद्यों के पास भी नहीं है।

★ ★ ★

निम्न छिंजोटी सम्भवतः पंजाब के प्रेम नायक रांझा से प्रभावित हुई है। लेकिन फिर भी कथानक में अन्तर होने के कारण इसे नकल के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। वास्तविकता तो यह है कि यह वह रांझा नहीं है जो पंजाब की धरती में पल कर प्रेम का देवता बन कर अमर हो गया और न ही वह हीर है जो नाजो के रूप में सौंदर्य की प्रतिमा है। यहां का रांझा अपने वासनात्मक प्रेम का भूखा है तो नाजो त्याग की साक्षात मूर्त है।

रोंदी-रोंदी छाडी ओ जान्दा,
कि तूजो मेरा पाप लगदा ।
ओ बदी देया बामणुआं, ओ मोया ....

ओ नूरपुरा रे ठाणे[1], ओ बामणु जे जान्दा,
कि तेत मिसला[2] रोज लगदी ।
ओ भला दिला देया बामणुआं, तूं क्या जाणदा,
तेरी सौं मेरी एक जान जाणदी ।
ओ बदी देया बामणुआं, ओ मोया ....

@tankrilipi parul arora mandi

ओ बददुआएं लेने वाले ब्राह्मण, जब तुम मेरे घर के सामने वाले रास्ते पर खड़े होते हो और जब मैं तुम्हें देखती हूं तो हृदय पर जैसे छुरी चल पड़ती है। इस लिए मैं तुम से बार-बार कहती हूं कि इस प्रकार सज-धज कर तू मेरे सामने मत खड़ा हुआ कर। सामने खड़े होने से बीते दिनों की यादें आती हैं। प्यार की कहानियां चल-चित्र की भान्ति कोंध जाती हैं। विशेष रूप से जब तुम सफेद बर्दी पहनते हो, सिर पर लाल रंग की पगड़ी बान्धते हो और नीले घोड़े पर सवार हो कर दफतर जाने के लिए तैयार हो कर सामने खड़े होते हो तो दिल बहुत रोता है।

ओ बददुआएं लेने वाले ब्राह्मण, तुम ने मुझ से किनारा कर लिया, मुझे छोड़ दिया। अब मैं तुम्हारी सूरत भी देखना नहीं चाहती हूं। तुम मुझे सताने के लिए सामने खड़े हो जाते हो। इस लिए मैं तुम से बिनती करती हूं कि तू सामने

1. थाने। 2. कागज़ात।

मत खड़ा हुआ कर।

मेरे दिल की बात तो परमेश्वर ही जान सकता है कि मैं तुम्हें कितना प्यार करती थी, पर तूने मुझे रोते हुए छोड़ दिया। ओ मेरी बददुआएं लेने वाले ब्राह्मण ! तुम्हें इस व्यवहार का पाप अवश्य लगेगा। तेरा तो यह प्रतिदिन का काम है। नूरपुर के थाने में रोज मिसलें लगती हैं, रोज लोगों के फैसले करते हो, पर मेरे साथ अन्याय करके तूने अच्छा नहीं किया। ओ ब्राह्मण, मैं तुम्हारी सौगन्ध खा कर कहती हूं कि मेरे हृदय पर तुम्हें देख कर जो छुरियां चलती हैं उसे केवल मैं ही जानती हूं और कोई नहीं जान सकता। इस लिए मुझे और सताने के लिए तू सामने न आया कर। बस मेरी यही प्रार्थना है।

★ ★ ★

प्यार का रोग कोई नई सभ्यता की देन नहीं है। इन लोक-गीतों के अध्ययन के बाद यह निर्णय लिया जा सकता है कि इस प्रकार के रोग से पहले भी बहुत से लोग ग्रसित होते थे। यहां इसी प्रकार की छिंजोटी सुनने में आई है जिस में भाभी अपनी ननद से मन की बात बता रही है कि शादी के बाद भी उसे किसी अन्य युवक से प्यार हो गया है। वह उसे साफ-साफ न कह अन्दर का कोई रोग बता रही है। वह कहती है :—

कोदरे[1] रा दाणा[2] जीयुआ[4] जो जलाणा[4],
जली ओ जान्दा चकिये रा पीसणा।
ओ नणदे मेरिये............

1. काले रंग का अनाज। 2. दाना। 3. हृदय को। 4. सताना।

सौहरे नी मारी, नणदे, सासूये नी मारी,
ओ मारी आन्दी ऐस अन्दरले[1] रोग।
ओ नणदे मेरिये...........

सौरे थे नी आंदा, पेवके थे नी आन्दा,
पीन्डे[2] थे ओ नणदे, पनपेया पहाड़ी रोग[3]।
ओ नणदे मेरिये............

कुणुये[4] नी मोही, ओ वैरिया, कपड़े नी[5] मोही,
ओ मोही छाडी मीठिये जवानी।
ओ नणदे मेरिये............

दिला री लगदी, दिल मेरा जाणदा,
दूजा नी जाणदा ओ वैरिया कोय।
ओ नणदे मेरिये...... .....

पहाड़ी रोग रे वैद्य भी भतेरे,
अन्दरले रोग रा वैद्य नी कोई।
ओ नणदे मेरिये............

ओ मेरी ननद, तुझ से क्या छिपाऊं। अब तो कोदरे का एक-एक दाना पीसना भी मेरे लिए कठिन प्रतीत हो रहा है। चक्की में मेरे से अब यह नहीं पीसा जाता। कोई रोग ऐसा फंस गया है कि मेरे से कुछ भी होना सम्भव नहीं रहा है।

क्या बताऊं ननद, मुझे न सास और ससुर की तरफ से

1 भीतर के। 2 शरीर। 3. औरतों को होने वाला रोग। 4. किसी ने। 5. कपड़ों ने।

@tarikhi parul arora

कोई कष्ट है और न ही उन्होंने मुझे मारा-पीटा ही है। बस अन्दर का ही एक रोग है जिसके कारण बड़ी दुःखी हूं।

मुझे तो यह भी पता नहीं कि यह रोग आया कहां से। ओ ननद, यह रोग न तो यहां किसी को है और न मेरे मायके में ही किसी को है। लगता है मेरे शरीर में से ही यह रोग पैदा हुआ है।

ओ ननद, मुझे तो किसी ने चाहा भी नहीं, मैं ने तो कभी अच्छे-अच्छे कपड़े भी कभी नहीं पहने। बस इस भरी जवानी के जोश ने मेरे अन्दर यह रोग पैदा कर दिया है। मेरे दिल की कहानी को कौन सुनता है, कौन जानता है। मेरे सिवाये कोई नहीं जानता है। ओ मेरी ननद, पहाड़ी रोगों के तो वैद्य भी बहुत हैं, पर इस मेरे अन्दर के रोग का इलाज तो वैद्यों के पास भी नहीं है।

★ ★ ★

निम्न छिंजोटी सम्भवतः पंजाब के प्रेम नायक रांझा से प्रभावित हुई है। लेकिन फिर भी कथानक में अन्तर होने के कारण इसे नकल के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। वास्तविकता तो यह है कि यह वह रांझा नहीं है जो पंजाब की धरती में पल कर प्रेम का देवता बन कर अमर हो गया और न ही वह हीर है जो नाजो के रूप में सौंदर्य की प्रतिमा है। यहां का रांझा अपने वासनात्मक प्रेम का भूखा है तो नाजो त्याग की साक्षात मूर्त है।

यह छिंजोटी यहां सामुहिक रूप में चार पांच औरतें बैठ कर गाती हैं।

नाजो अपने पति रांझा को चम्बा में नौकरी के लिए विदा देते हुए मन के आन्तरिक भावों को इस प्रकार व्यक्त करती है :—

@tankrilipi parul arora mandi

आपु भी ता जान्दा रांझा नौकरी, ओ चाकरी,
मैनों भरीये जवानी किस रे भरोसे छाड़ी जान्दा।

सिन्ने-सिन्ने[1] गोसटु[2] मैं बधांदी[3] रहंदी रांझा,
धुएं रे उंधे मैं रोंदी रहंदी रांझा।

मेरे मावा-बापू ता भ्याज्या[4] था सोना ओ चांदी,
मेरे करमेया लिखी री थी सिक, ओ रांझा।

आमां ने ओ छाडेया, बापू मेरे ने छाडेया,
तूं चम्बे जो नौकरी नी जा मेरे रांझेया।
आपणी नाजो जो छाडी चलेया भरीये जवानी।

ओ मेरे प्रियवर रांझा, स्वय तो चम्बा प्रदेश में नौकरी करने जा रहे हो, पर मुझे इस भरपूर जवानी में, इस उन्माद में अकेले किस के सहारे छोड़ कर जा रहे हो ? तुम्हें क्या मालूम है मैं किस-किस प्रकार से अपने दुःख को भूलाती हूं। ओ रांझा, मैं गीले-गीले उपले जान बूझ कर जला देती हूं और उन्हें जलाने के ही बहाने लगाता है मेरी आँखों में पानी आ गया

1. गीले-गीले। 2. गोबर के बने उपले। 3. जलाती रहती हूँ। 4. विवाह करा के भेजा है।

है जबकि वास्तविक्ता यह होती है कि मैं तुम्हारे वियोग में आंसू बहा रही होती हूं।

मेरे मां-बाप ने तो मुझे इस घर में बिदा करते समय सोना और चान्दी भेंट किया था, यानि मुझे खूब धन-दौलत दे कर आपके यहां सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए भेजा था। लेकिन यदि मेरे भाग्य में सिक यानि तिल-तिल हो कर जलना ही लिखा था तो उसे कौन रोक सकता है। मेरे मां-बाप ने मुझे छोड़ दिया अर्थात् अपने घर से विदा कर तुम्हारे घर जीने के लिए छोड़ दिया अब तुम मुझे छोड़ कर स्वयं मेरे से दूर चले जा रहे हो। ओ रांझे इस यौवन अवस्था में मुझे अकेला छोड़ कर मत जा।

नाजो की ननद उसे आश्वासन दिलाती है :—

तेरे नाजो जो देणा आसा रोटी कपड़ा, ओ रांझे,
कि गोदिये रा बालक आसा वे खलाणा।

भैया, भाभी तो आपको यूं ही परेशान कर रही है। आप उसकी चिंता मत करें। उसको रोटी-कपड़ा हम दे दिया करेंगे और तुम्हारे बच्चे की देखभाल भी हम कर लिया करेंगे। इस लिए आप नौकरी चले जाएं। लेकिन पत्नी भला कहां मानने वाली थी। उसने गुस्से में आ कर उत्तर दिया :—

मैनों नी लोड़ तुसा री रोटियां री ओ कपड़े री,
मैनों भी हुन्दा आपणा कन्त[1] भी प्यारा,
कि जेस सौगी[2] मैं ओ उमरां विताणी।

1. पति। 2. साथ।

ग्रो ननद ! मुझे तुम्हारी रोटियों की ग्रावश्यकता नहीं, तुम्हारे दिये कपड़े भी मुझे नहीं चाहिए। मुझे तो बस, ग्रपने प्रियवर के साथ ही जाना है ग्रौर मैं उन के साथ ही जाऊंगी।

भाभी के इस फैसले पर ननद फिर उसे समझाती है :—

तेरे बालक जो मैं गोदी में खलाऊ,
कि तेरे कंत वरस-छमाही घर ग्राणा।

@tankrilipi parul arora mandi

भाभी, मैंने कह दिया न कि, तेरे बालक को मैं गोदी में ले-ले कर उसे ग्रच्छी-ग्रच्छी लोरियां सुना-सुना कर उसका दिल बहलाया करूंगी। ग्रौर फिर भाई भी वर्ष-छः महीने ग्रवश्य ग्रा जाया करेंगे। इस लिए तूं भाई को नौकरी करने के लिए चम्बा जाने दे, उसे मत रोक।

पर, रांझा की प्रियतमा नाजो ने एक भी न सुनी ग्रौर ग्रपनी बात पर ग्रड़ी रही। उसका कहना था कि जिस रांझा के लिए मैं ने ग्रपने माँ-बाप का घर छोड़ दिया ग्रब उसी रांझा से भला मैं कैसे दूर रह सकती हूं ? नौकरी जाने के लिए तैयार हुग्रा रांझा ग्रब ग्रपने माँ-बाप से ग्राज्ञा लेता है ग्रौर ग्रपने लाडले पुत्र को थोड़ी देर के लिए गोद में ले कर पुचकारता है—प्यार करता है। ग्रपना घोड़ा तैयार करता है ग्रौर पीछे घर में नाजो को छोड़ कर ग्रकेला ही नौकरी के लिए चल देता है।

नाजो इस घटना को एक पत्र द्वारा ग्रपने माँ-बाप तक पहुंचा देती है :-

लिख-लिख चिठियां नाजो मांवा जो भेजदी,

कि मेरे पिया परदेस ग्रो जान्दे,
कि मूं जो छाडी ग्रो जान्दे नवेलड़ी।
चार भी ता भेज हारी वे जमारी[1],
कि रूठड़ी धीं घरा सादणी, ग्रो रांझा मेरेया।

नाजो चिट्ठियां लिख-लिख कर माँ-बाप को भेजती है। वह लिखती है कि मेरे पति नौकरी करने चम्बा चले गये ग्रौर मुझे ग्रकेला छोड़ गये हैं। ग्रब मैं ग्रकेले यहां रह कर क्या करूंगी ? मुझे बुला लो। माँ की ममता उमड़ पड़ती है, ग्रौर वह चार नौकरों को भेज कर नाजो को घर बुला लेती है।

★ ★ ★

उपरोक्त छिंजोटी में जहां नाजो ग्रौर रांझा के प्रेम सम्बंध को दिखाते हुए रांझा के कर्त्तव्य के ग्रागे नाजो की प्रेममयी भावनाग्रों को ठुकरा दिया है वहां निम्न छिंजोटी में उस समय की सामाजिक कुरीतियों पर भी प्रकाश ड़ाला है। इस हृदय विदारक छिंजोटी में सास का उसके सौत के पुत्र तथा पुत्रवधु के व्यवहार की गाथा को प्रस्तुत किया है :—

भरेया कटोरा ग्रो सासु दहुग्रां जमांदी,
बिच पाई मोहरे री लूंग।
सपाहिये री मौत नमाणी[2], भाईयो......

पहलड़ा टुकड़ा सपाहिये जो दित्ता,

1. कहार ग्रौर नौकर-चाकर। 2. बड़ी हृदय विदारक।

दूजा टुकड़ा मैं कुत्ते जो पांदी[1] ।
भाईयो, कुत्ते री मौत नमाणी............

लिख-लिख चिठियां मैं बापू जो भेजदी,
मेजी देयां वैद्या री जोड़ी मेरे बापू जी ।
सपाहिये री मौत नमाणी, भाइयो.........

केढ़ा-केढ़ा[2] मुलख केढ़ा जे रास्ता,
केढ़े ग्रो मुलखा रे माहणु ।
सपाहिये री मौत नमाणी, भाइयो.........

भीखड़ा जे रसता उचे जेथी पहाड़,
ये मेरे बापूग्रा ग देश,
लम्बी-लम्बी जुलफा[3], छोटे-छोटे टोपड़[4],
ऐही मेरे बापूग्रा रा भेष ।
सपाहिये री मौत नमाणी, भाईयो.........

चिठियां जे पड़दा ग्रो बापू मेरेया,
दुःखी दिल करदा,
कि टुटेया मेरे हिक्का रा कल़ेजा ।
सपाहिये री मौत नमाणी, भाईयो.........

क्या करणी वैद्या री जोड़ी धीये,
तेरे सपाहिये जो देई देंहगा चिट्टी चादर,
काढ़ी लैया[5] वरसा-छमाही,
कि मेरी धीये ग्राफत इन्हें करमे पाई ।
ग्रो सपाहिये री मौत नमाणी, भाईयो......

1. डालती हूँ । 2. छोटे-छोटे । 3. लम्बे केश । 4. छोटी टोपी । 5. बिता लेना ।

@tankhilipi parul arora mandi

मेरे भाईयो, मेरे दुःख की कहानी सुनो । मेरे प्रियवर सिपाही की मौत बड़े ही निर्मम ढंग से कर दी गई है । यह बड़ी ही हृदय विदारक कहानी है ।

मेरी सास ने पहले तो दहीं जमाई ग्रौर फिर उस में से मेरे पति को खाने के लिए दी । पर भाईयो, उसमें मेरी सास ने जहर डाल दिया ग्रौर मेरा पति बहुत ही बुरी तरह तड़फ-तड़फ कर चल बसा । मुझे तो इस बात का पता तब लगा जबकि वही दहीं कुत्ते को खिलाई गई, वह भी शीघ्र ही मर गया । क्योंकि न कुत्ते का कोई ग्रपना था ग्रौर न ही मेरे पति का । मेरी सास तो उसके साथ सौतन का व्यवहार करती थी ।

भाईयो, मैंने उस समय जैसे ही इस दुःखद घटना की सूचना एक ग्रादमी के हाथ पत्र भेज कर ग्रपने बापू को दी ग्रौर खिला कि यदि शीघ्र दो वैद्य भेज दें तो शायद मेरा सुहाग लूटने से बच जाए ।

भाईयो, जिस ग्रादमी को मैंने भेजना चाहा वह मेरे मायके का रास्ता नहीं जानता था । तब मैंने उसे बताया कि मेरे मायके को जाते हुए सभी रास्ते छोटे-छोटे हैं । उच्चे-उच्चे पहाड़ लांघने पड़ते हैं । वहीं मेरे बापू का गांव है । वह लम्बे-लम्बे केश रखते हैं । ग्रौर छोटी सी टोपी पहनते हैं । बस, मेरे बापू का यही पहनावा है ।

मेरे बापू ने जैसे ही यह समाचार सुना तो वह बहुत दुःखी हुए । जैसे उसका हृदय टूट गया हो । भाईयो, मैं सिपाही की मौत से बहुत दुःखी हूं ।

पर मेरे बापु की हमदर्दी देखो । उन्होंने मुझे समझाते हुए ग्रौर हौंसला देते हुए लिखा है कि बेटी, ग्रब वैद्यों की जोड़ी

भेजना व्यर्थ है। अब तो तेरे प्रियवर के लिए मेरे पास केवल दो गज़ की सुफेद चादर ही है। बेटी, यह सब तो कर्मों की बात है। और यह सब कुछ तो कर्मों का ही फल है। अब दुःखी होना तो व्यर्थ ही है। अब तो बेटी वर्ष छमाही यानि जो कुछ भी जीवन बिताना है, वह तो काटना ही पड़ेगा।

भाईयो, क्या बताऊं मेरे प्रियवर सिपाही की मौत बहुत ही हृदय विदारक थी।

★ ★ ★

एक और छिंजोट शीर्षक "मेरे वामणुआ" नामक नीचे दी जा रही है। यह छिंजोटी भी मण्डी जनपद में खूब गाई जाती है। इस छिंजोटी में प्रियतमा अपने प्रियवर की खुशी के लिए अपना सब कुछ लुटा देने को तैयार है :—

ओ घोघरा री धारा, ओ मेरे वामणु जो धूपा जे पौंदा,
करी लैणी आसा छतरू री छांव।

ओ घोघरा री धारा, ओ मेरे वामणु जो धूपा जे पौंदा,
पहियां[1] नी देंदा चंदरा चमार।

तेला री तली री ता मेरे वामणए ता खाई भी नी जांदी,
घ्युआ[2] जो ढूंढती सारे बजार।

काठी वे सपारी, मेरे वामणु ते चवाईयां नी जांदी,
दखणी मैं ढूंढदी बजार।

1. पैर की जुती। 2. घी।

@lankhilpi parul arora nandi

सुई-सुई पाघ[1], मेरे वामणुए जो बांकि[2] जे सजदी,
मूं जो भी ता वामणुए जो देखणे रा चाव।

गुम्मे गुमाली[3] री जातरा, मेरे वामणुआ,
देखणी साथ जरूर,
रहणा जुगा[4] रा गुमाली दुंगाली[5] रा साथ।

गुम्मे री गवाली, शराबा री मुताली[6],
देखणी साथ जरूर।

कौन जाने मेरे उस प्रियतम को घोघरा की पहाड़ियों से लांघते समय की धूप कितनी सता रही होगी। काश! मैं छाता लेती और जा कर उन्हें इस तपती धूप से बचाती। कामचोर उस चमार ने भी उनके पैरों के लिए जूते बना कर नहीं दिए हैं। उनको इस चिलचिलाती धूप में चलना कितना कठिन प्रतीत हो रहा होगा। मैं तो उन्हें खूब जानती हूं। वह बहुत ही कोमल स्वभाव के हैं, उनका शरीर भी बहुत कोमल है। उन से तो बाज़ार की तेल में तली हुई चीज़ें भी नहीं खाई जाती हैं। और मैं हूं कि सारे बाज़ार में शुद्ध घी के लिए घूम आई हूं पर वह मिलता ही नहीं है।

मेरे प्रियवर ब्राह्मण को खाना खाने के बाद दखनी सुपारी खाने की आदत है। पर आग लगे इस बाज़ार को जहां काठी सुपारी के इलावा कुछ मिलता ही नहीं है। दखणी सुपारी के लिए तो मैं बाज़ार-बाज़ार घूम आई हूं।

1. पगड़ी। 2 सुन्दर। 3. गुम्मे की औरतें। 4. साथ। 5. ढूंग की औरतें। 6. मस्त।

मैं उनकी प्रशंसा किस मुंह से करूं। वे खुश होते हैं तो मैं उनसे भी अधिक खुश होती हूं। जब वह गुलाबी रंग की पगड़ी बांधते हैं तो मुझे उन्हें देखते ही रहने को जी करता है। गुम्में गांव में जब भी मेला लगेगा—हम दोनों उस मेले में साथ-साथ जाएंगे। वहां उस मेले में गुम्में की औरतों को भी देखेंगे जो शराब पीकर मस्त रहती हैं। ओ मेरे प्रिय ब्राह्मण हम दोनों अवश्य गुम्में का मेला देखने जाएंगे।

★ ★ ★

@tankrilipi parul arora mandi

प्राचीन भारतीय नारियां पति को परमेश्वर तुल्य समझती थीं और उसी की सेवा करते रहना अपना धर्म समझती थीं। किसी ग्राम्य बाला का विवाह बचपन में ही हो जाता है। उसका पति नौकरी करने कहीं बाहर चला जाता है और वह ससुराल में इस छोटी सी उम्र में अपने माँ-बाप से बिछुड़ कर एक नया संसार बसाने के लिए अलग हो जाती है। लेकिन उसकी भाग्य-विडम्बना देखिए उसका प्रियवर भी उसे अकेले छोड़ कर दूर नौकरी करने चला जाता है। वह जाती बार अपने प्रियतम से पूछती है :—

मरूआ[1]-मरूआ सींचदी,
ओ मोया कि विच लांदी फूल-पत्तियां,
आपु ता चलेया कि माहिया कि मूंजो छाडी ओ जान्दा
किन्हा करी काटणी[2] बालक वरस.........

1. एक फूल का नाम। 2. काटणी-व्यतीत करनी।

अर्थात् मैं मरूआ सींचती हूं और बीच में फूल-पत्तियों से उसे सजाती हूं। ओ मेरे प्रियवर, स्वयं तो तू नौकरी के लिए चल पड़ा है और मुझे छोड़ जा रहा है। तुम ही बताओ इस बालक उम्र में मैं किस तरह तुम्हारे विरह के दिन काटूंगी।

इस पर उसका पति उसे समझाता है कि तू सास को माँ के समान समझना और अपने ससुर को पिता कहना। अर्थात् अब तो तेरे सास-ससुर ही माँ-बाप के समान हैं। इन्हीं के साथ मेल-जोल से रह कर अपनी इस बालक उम्र को व्यतीत करना। इन्हीं भावों को कविता में इस तरह प्रस्तुत किया है :—

सासू जो तूं माव कहेयां, ओ गोरिये,
कि सौरे जो बापू कहेयां,
इन्हा देखी काटेयां तूं बालक वरस.........

इस पर वह उत्तर देती है :—

सासू नों न माव कहणा, सौरे जो नी बापू कहणा
देवर-जेठ हुंदे जन्मा सरीक[1].........

न मैं सास को माँ कहूंगी और न ससुर को पिता बल्कि जन्म के सम्बंधी तो देवर और जेठ होते हैं जो दुःख सुख में काम आते हैं।

नरम-नरम कातेयां, ओ गोरिये, कि मिठे-मिठे बोलेयां,
हासी-हासी[2] काटेयां ओ गोरिये, बालक वरस.........

1. जन्म के सम्बन्धी। 2. हँस-हँस कर।

ओ गोरी प्रियतम ! तू नरम-नरम कातना, मीठे मीठे वचन बोलना और हंस-हंस कर अपनी उम्र बिता लेना। इस पर पत्नी उत्तर देती है कि यह कैसे सम्भव होगा कि तुम तो परदेश में रहो और मैं हंस-हंस कर यहाँ उम्र बिताती रहूं। लगता है तुम्हारे वियोग में मुझे यह उम्र रो-रो कर काटनी पड़ेगी। इस प्रकार की दुःख भरी बातों को सुन कर पति घोड़े पर बैठ जाता है और चलने लगता है। अपने प्रियतम को अकेले जाते देख कर उसे भय लगता है क्योंकि उसे मालूम है कि यहां की नदियां बहुत गहरी हैं, रास्ते भी बड़ी-बड़ी घाटियों में छोटे-छोटे होते हैं। उसे यह भी समझ नहीं आ रहा कि परदेश में वह कहां-कहां भटकेंगे, क्या खाएंगे और क्या पीएंगे।

इस प्रकार एक पत्नी की पति भक्ति को इस लोक-गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया है। पत्नी को अपने पति से अलग रहने का वियोग इतना नहीं है जितना कि उसके बाहर परदेश में कुशलतापूर्वक न रहने का। पत्नी अपने पति की छोटी-छोटी कठिनाईयों को भी बहुत बड़ा समझती है। आखिर उसका पति उसे ढाढस देते हुए कहता है कि प्रिय तू किसी बात की भी चिन्ता न कर मैंने उस ऊंची-ऊंची घाटियों के छोटे-छोटे रास्तों को तथा कम गहरी नदियों को बड़े आराम से पार कर जाना है। इस कविता का अन्तिम भाग इस प्रकार है :—

रोई-रोई काटणी, ओ बालक वरस........
घोड़ जे पीढ़ेया ओ मोया, कि चलेया परदेस,
औखी हुंदियां घाटियां, भिकड़े हुंदे पैन्डे[1],

1. तंग रास्ते।

डुघी[1] हुंदी नदिया तारू[2] ओ हुंदे पखले[3],
किहां करी लंघणा तुसा पार।
केथी तुसां रहणा जी ओ कि केथी तुसा सौअणा,
केथी तुसा खाणा कि ओ केथी तुसा पीणा।
हाउं हासी-हासी काटी लैंघी बालक वरस........

पति उसे ढाढस देता है :—

हौले-हौले हांडणा, ओ गोरिये, लंघी देणी घाटियां
नदियां हुंदी त्वाह्ली[4] कि ओ तारू हुंदे आपणे।
हौले-हौले लंघी जाणा असां नदिया पार.. ......

इस प्रकार इन छिंजोटियों में सर्वत्र प्यार ही प्यार उभरा है।

प्रत्येक मानव ने प्यार को अपने ही ढंग से प्रस्तुत किया है। कहीं किसी को तड़फाया गया है तो कहीं पर स्वयं को जलाया गया है। किन्हीं गीतों में नारीत्व भाव उभरा है तो पुरुषत्व भाव ढीला पड़ गया है। कहीं त्याग ही त्याग है, तो कहीं मोहमुक्त वासना का ही प्रदर्शन हुआ है। यदि वासना है तो फिर वह वासना बन कर रह गई है। यदि आत्मिक प्रेम उमड़ा है तो भौतिक्ता कोसों दूर तक भी दिखाई नहीं देती है।

ग्राम्य-जीवन के इतिहास में इन छिंजोटियों का महत्त्व भी उतना ही है, जितना किसी देश के इतिहास का। इन लोक-गीतों में मानव जीवन के प्रेममयी वह चरीत्र प्रस्तुत हुए हैं जो शायद इसी उद्देश्य से संसाररूपी मंच पर आए थे। वरना, वे

1. गहरी। 2. तैराक। 3. अपरिचित। 4. कम गहरी।

@tankrilipi parul arora mandi

जीवन-पर्यन्त प्रेमाग्नी में ही झुलसते-झुलसते क्यों समाप्त हो गये। क्यों प्यार के एक शब्द पर ही उनका हृदय रुक गया? क्यों दिल की धड़कनें वापिस आ गईं? समाज से बहिष्कृत होने के बाद भी उन्होंने अपना नया समाज बनाया, लेकिन, अपने प्यार को आंच नहीं आने दी। जीवन भले ही मिट गया पर प्यार नहीं छूटा।

अन्ततः इन लोक-गीतों के माध्यम से आंचलिक जीवन के नैतिकस्तर और सामाजिक व्यवस्था पर प्रचुर प्रकाश पड़ता है। इन लोक-गीतों के माध्यम से ही जनमानस के हृदयों की आन्तरिक भावनाओं को मूर्त रूप मिला है। इन लोक-गीतों के संग्रह एवम् अध्ययन से न केवल लोक-साहित्य ही समृद्ध होगा, बल्कि, लोक-साहित्य की श्रेष्ठता को भी बल मिलेगा।

आखिर, जीवन स्वयं सुख-दुःख का ही गीत तो है।

@tankrilipi parul arora mandi

प्रकीर्ण साहित्य

[भाग चार]

@tankrilipi parul arora mandi

प्रकीर्ण साहित्य

मण्डयाली लोक साहित्य में प्रकीर्ण साहित्य का भी बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। अन्य बोलियों की तरह मण्डयाली बोली के लोक साहित्य में न केवल लोक-गीतों और कथाओं की बहुलता है, बल्कि सामाजिक कहावतों, पोलणियों (पहेलियों), विचारों और ढकोसलों इत्यादि के रूप में भी बहुत सा साहित्य बिखरा पड़ा है। सामाजिक कहावतों में सामाजिक जीवन के अनुभूत तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है। विचारों के अन्तर्गत गृह-प्रस्थान विचार, छींक विचार और नीति विचार आते हैं। ढकोसलों में उंट-पटांग और ऐसी बातें कही जाती हैं जो असम्भव सी प्रतीत होती हैं। यहां पोलणियों का भी वही महत्त्व है जो हिन्दी में पहेलियों और संस्कृत में प्रहेलिकाओं का है। इतना अवश्य है कि दूसरी जगहों की अपेक्षा इनकी उत्पत्ति का मुख्य कारण केवल मनोरंजन करना ही रहा है। आज भी गांव में शरद् ऋतु के आरम्भ होते ही पोलणियों का भी सारम्भ बड़े आकषर्ण और आनन्दायक ढंग से होता है।

(क) सामाजिक कहावतें

मण्डी के सामाजिक जीवन में इन कहावतों का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिस तरह हिन्दी में लोकोक्तियों के प्रयोग

से भाषा प्रभावपूर्ण और ज़ोरदार बन जाती है। उसी प्रकार से मण्डयाली में भी इन कहावतों का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा, उपदेशक कहावतों द्वारा भी समाज में सुव्यवस्थित ढंग से रहने और व्यवहार करने के सुझाव दिए गये हैं। यहां कि सामाजिक कहावतों की उत्पत्ति के विषय में निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि इन कहावतों के रचयिता अवश्य ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहे हैं। उन्होंने जन-मानस के मनोवैज्ञानिक अध्ययन द्वारा ऐसे लघु वाक्यों को रचा है जिस से साधारण लोग प्रभावित हो सकें और उन्हें अपने जीवन में उतार सकें। वास्तव में इन सामाजिक कहावतों की उत्पत्ति का कारण यही सम्भव है।

@iankrilipi parul arora mandi

नीचे इसी प्रकार की कुछ कहावतों को प्रस्तुत किया जा रहा है :—

कर चो.लु* रख चो.लु
कर चो.लु पहन चो.लु
कर चो.लु दे चो.लु।

चो.लु शब्द का प्रयोग यहां कमाने के लिए किया गया है। *चो.लु—यहां का एक विशेष तरह से तैयार किया गया घघरा होता था जिसकी लम्बाई ३० गज़ से ले कर ५० गज़ तक होती थी। उसे बनाने के लिए धन की काफी आवश्यकता होती थी। अतः चो.लु बनाने के लिए पहले कुछ कमाओ, फिर उतना कमा लिया तो चो.लु बनाने के लिए खर्च करो और यदि उससे कुछ धन बच जाए तो उसे शुभ कार्य में लगाओ।

भाता री ता एकहे भतकोली़ परखणी हुंआईं।

जिस तरह चावल पकाते समय उसके पक जाने की परख

केवल एक ही चावल के दाने से हो जाती है। उसी तरह किसी विशेष जगह की सभ्यता कैसी है यह बात भी वहां के एक ही व्यक्ति के व्यवहार से जानी जा सकती है।

बाबरू जो ता गुड़ घ्यू लगाहां,
ग्लाबरी जो क्या लगाहां।

मण्डी के खान पान में बाबरू बड़ा ही स्वादिष्ट पकवान है। यह कनक या जौ के आटे में गुड़ या नमक घोल कर विशेष रीति से तैयार किया जाता है। इसे बनाने मे काफी मेहनत की आवश्यकता होती है। लेकिन, जो ग्लाबरी अर्थात् बातुनी व्यक्ति को बातें करने में कुछ भी मेहनत नहीं करनी पड़ती है – वह तो बोलता ही जाता है। अतः अधिक बोलना तो आसान है, परन्तु कुछ करके दिखाना बड़ा कठिन कार्य है।

सुती रा होर मुई रा हुआं एक बराबर।

अर्थात् जब व्यक्ति निंद्रावस्था में होता है तो उसे किसी भी प्रकार का ज्ञान नहीं होता। जिस तरह एक मरा हुआ व्यक्ति होता है – वह भी उसी तरह होता है। अतः उस अवस्था में उसे कुछ कहना या उसकी बातों पर (अक्सर कुछ लोग निन्द्रावस्था में भी बोलते रहते हैं) विश्वास नहीं करना चाहिए।

कुछ भख्, कुछ रख्।

अर्थात् गृहस्थी जीवन की सफलता उसी में है जिस में अच्छा खाया भी जाए और कुछ संचय भी किया जाए ताकि मुसीबत के दिनों में काम आ सके।

हलहले टबरा मूंजो धरती ही दे ।

अर्थात् चंचल प्रकृति का व्यक्ति कार्य शीघ्रता करना चाहता है और जिस कार्य में शीघ्रता की जाती है उसके बिगड़ने की सम्भावना भी अधिक रहती है। अतः प्रत्येक कार्य स्थिरता से करना चाहिए।

खाओ पीओ लोक, मार खाओ डरपोक ।

@tankrilipi parul arora mandi

अक्सर ऐसा देखा गया है कि जो लोग सीधे-साधे और डरपोक प्रकृति के होते हैं उन्हें सभी दबाते फिरते हैं। और जो चुस्त-चालाक और निर्भय होकर खूब खाते-पीते हैं, वह मौज उड़ाते हैं। कायर मत बनो। हमेशा आगे बढ़ने का प्रयत्न करो।

घर-घर माईयां, घर-घर बाबू ।

यदि सभी घर की औरतें, माईयां अर्थात् भिक्षा मांगने वाली और सभी मर्द बाबू बन जाएं तो घर का काम कौन करेगा। अतः सभी को मिल-जुल कर घर-गृहस्थी चलानी चाहिए।

भैंस बैठाई छपड़े, से दूजेयां जो भी छिटांहीं ।

यहां गर्मी के दिनों में भैंस को जहां भी थोड़ा सा पानी दिखाई देता है वह वहीं बैठ कर अपनी गर्मी मिटाने लगती है और अपनी पूंछ से पानी इधर-उधर गिराती रहती है जिस से आते जाते आदमी पर भी कीचड़ पड़ जाता है लेकिन वह तो

स्वयं कीचड़ में बैठी होती है। अतः उसे तो कोई फर्क नहीं पड़ता परन्तु आने जाने वालों पर दाग पड़ जाता है। कहने का अर्थ है कि ऐसे आदमी से हमेशा बचना चाहिए जो दूसरों को बदनाम करते है।

भेड़ क्या जानाहीं, जे केढ़ा हुआं फाफरे रौं साग ।

फाफरे का साग मनुष्य भी खाते हैं। बेचारी भेड़ को यह साग नसीव ही नहीं होता है। अतः वह इसके बारे में कुछ भी नहीं बता सकती है। ठीक उसी प्रकार जो व्यक्ति किसी काम को यदि नहीं जानता है तो उसे, उस कार्य में, राय भी नहीं देनी चाहिए।

नहौंदे-नहौंदे मुतरो, होर खांदे-खांदे मुखरो
तिन्हां रा जतन क्या ।

कहने का अर्थ है कि जो व्यक्ति स्नान करते-करते पेशाव कर दे और कहे कि मैं तो केवल नहा रहा हूं तो ऐसे व्यक्ति को क्या कहेंगे और वह व्यक्ति जो खाना खाते हुए भी इन्कार कर दे कि वह खाना नहीं खा रहा है तो ऐसे व्यक्ति पर विश्वास नहीं किया जाना चाहिए।

चट मंगणी, पट ब्याह ।

अर्थात् भले काम में देरी नहीं करनी चाहिए।

नौ जणी मेरा गिल्लहड़ चको,
तां मैं एक राग गाऊं ।

एक औरत को गिल्ल्हड़ (अर्थात् गले के बाहरी भाग में

निकला हुआ मांस का वृताकार पिण्ड) निकला हुआ था। वह यद्पी गा नहीं सकती थी फिर भी गा सकने की हामी भर रही थी और बहाना लगा रही थी कि जब तक नौ अन्य औरतें मेरा गला नहीं पकड़ेंगी तब तक मैं नहीं गाऊंगी। किसी काम को न करने की इच्छा होते हुए भी दिखावा करना।

★ ★ ★

@tankrilipi parul arora mandi

(ख) पोलणियां [पहेलियां]

पहेलियों का मण्डयाली लोक-साहित्य के प्रकीर्ण साहित्य में बड़ा महत्त्वपूर्ण योग है। अन्य प्रादेशिक लोक-साहित्य की ही भान्ति इन पहेलियों द्वारा भी सामुहिक रूप में बैठ कर आनन्द प्राप्त करना ही है। परन्तु यहां का मनोरम पर्वतीय ग्राम्य-वातावरण शायद ही अन्य प्रदेशों की उपेक्षा करता हो।

घास-फूस से सजी छोटी-छोटी झोंपड़ियों का एक गांव है। पास ही नीम का छायादार पेड़ है। यह पेड़ बहुत पुराना है। थोड़ी दूर हट कर फिर एक खुला प्रांगण है जो गांव वालों का सांझी है। सुन्दर एवं साफ-सुथरे इस गांव में एक सांझी बठक भी है जहां दो चारपाईयां अक्सर पड़ी रहती हैं। जाड़े का मौसम आरम्भ होने तक इस खुले प्रांगण में ढेर सारी लकड़ियां इकट्ठी की जाती हैं। गांव के सभी किसान जब खेतों में सारा दिन जी तोड़ मेहनत करने के बाद घर वापिस आते हैं तो मन्द-मन्द गति से बहने वाली समीर उनके अशक्त शरीर को चुभन सी देने लगती है। वे शाम का भोजन करने के

पश्चात् उन लकड़ियों को जला कर सामुहिक रूप से बैठना ही उन्हें भाता है।

सम्भवतः यही समागम मण्डी के ग्राम्य जीवन की विशेषता है। आग की मीठी-मीठी तपस के बीच में ही इन पोलणियों का आदान-प्रदान आरम्भ हो जाता है। एक प्रौढ़ किसान कह उठता है :—

पोलणी कढोलणी,
दूहीं हाथे देणी, एकी हाथे खोलणी।

पहेली को सुनने वाले सभी उत्तर देने का प्रयत्न करने लगते हैं। बड़ी प्रतियोगिता चलती है। जब ठीक उत्तर देने की सम्भावना कम दिखाई देती है तो पहेली कहने वाला उसे समझाते बुझाते उत्तर के समीप पहुंचाता है कि तभी बीच में ही कोई कह उठता है— "नाड़े री गांढ".........और हास्यरस का वातावरण सा छा जाता है। दिनभर की थकान इन्हीं सभाओं में मिट जाती है। इसी बीच दूसरा किसान एक और पहेली कह उठता है :—

पारा ओरे आया भूंड,
दस जांघा, त्रै मूंड ।।

अर्थात् कोई ऐसी चीज बताओ जिसकी दस टांगें और केवल तीन ही सिर हों ?

सभी इस पहेली को एकाग्रमन से सोचते हैं। कल्पना एवं अनुमान लगाते हैं और फिर उन में से एक झट से कह उठता है— "हल होर हाली"। अर्थात् दो बैलों के सिर और एक हल चलाने

वाले का सिर—तीन हुए सिर। इसी तरह दोनों बैलों तथा हल चलाने वाले की टांगें—दस हुई टांगें।

सच ही शीतकालीन रात्रियों में आग सेंकते हुए, ऐसी सभाओं में इन पोलणियों का रंग खूब जमता है।

यहां नीचे इसी प्रकार की कुछ पहेलियों को प्रस्तुत किया जा रहा है जिसके साथ मण्डयाली भाषा के शब्दों के अर्थ और पहेलियों के उत्तर भी दिए जा रहे हैं :—

पौड़िए-पौड़िए छाप्पर छाया,
फूला वरवर भार नी आया।

—चिट्ठी

सौ[1] जातरू[2], एक गातरू[3]।

—भेड़ों का झुंड

@tankrilipi parul arora mandi

लाल-लाल लहरी, सभे बैठे पैहरी[4]।

—लालटेन

पारली[5] धारा गदेण[6] फूली, रंग-बिरंगे धागे,
माहाराजे रे परौहणे[7] आये, सुत्ती[8] रे लोको जागे।

—प्रातः का सूय

1 सैंकड़ा। 2. यात्री लेकिन यहां यह शब्द भेड़ों के समूह के लिए प्रयोग किया है। 3. जिसने पेट में रस्सी बांधी हो अर्थात् भेड़-बकरियां चराने वाला गद्दी। 4. पहरने वाला। 5. सामने वाली। 6. एक फूल का नाम। 7. अतिथ। 8. सोये हुए।

गासा[1] थे पई लाठ, हेठ[2] मुए[3] दस लाख।

—धानकूट और ओखली

छिल्ले ता छिलका नाहीं,
चुसे ता गुटली नाहीं।

—बर्फ

इतना कर गीठ्ठू[4] गटगट[5] करदा,
हवस[6] मुकाणे[7] जो जली-जली[8] मरदा।

—हुक्का

माव जमी न जमी,
पुतर चढ़ी गया छती।

—धुआं

पंडित जी को राम-राम,
मियां जी को जै।
बारा में से तीह गये,
बाकि कितने रहे।

—ग्यारह महीने

अमीर-अमीर जेबा पाहें[9],
फकीर-फकीर धरती सटाहें[10]।

—श्लेशम, रेशा

1. ऊपर से। 2. नीचे। 3. मरना। 4. आग सेंकने के लिए बना हुआ पत्थर का बर्तन। 5. गड़गड़ का सूचक शब्द। 6. इच्छा। 7. पूरी करने को। 8. जलने की क्रिया। 9. डालते हैं। 10. फैंकते हैं।

ताला पर बेल, बेला पर फूल,
फूल बेला जो खाहाँ ।

—तेल, बाती और प्रकाश
'दीपक'

प्रोहता[1] जो एक कान,
पंडत्याणी[2] जो दो ।

—तवा, कढ़ाई

हल्र करदी, फल्र करदी, गल विच तेरे धागा,
जांघा[3] नाहीं, बांह नाहीं, मूंड[4] कहां ते लागा ।

—झाड़ू

मान्हा[5] रा मड़ा[6], ध्याड़ी[7] जो सूती रा[8],
राती जो खड़ा ।

—पगहा

साता[9] बैहणी[10] रा एकही सराहणा[11] ।

—शहतीर

एक चिड़ी चूड़ेदार,
बच्चे खोड़े[12] नौ हज़ार ।

—बरगद का पेड़

1. यहां (प्रोहेता) पंडित और पंडताईन शब्दों को लिंग के आधार पर लिया गया है। प्रोहेता अर्थात् तवा—जो पुलिंग है और 2. पंडत्याणी अर्थात् कढ़ाई—जो स्त्रीलिंग है। तवे को उठाने के लिए एक कड़ा होता है जबकि कढ़ाई के दो। 3. टांगें। 4. सिर। 5. किसी का नाम। 6. मूर्दा। 7. दिन को। 8. सोया हुआ। 9. सात। 10. बहनें। 11. तकिया। 12. तैयार करना।

@tankrilipi parul arora mandi

चर करे मर करे चिड़ी करे चस,
एक सिपाही तां चले, जे कमर लै कस ।

—चरखा

एसणु भतैसणु, पुढि[1] ज्हानु[2] कैसणु[3] ।

—ऊंट

हेठ[4] आल, आली पर डाल,
डाली पर साग, सागा पर आग ।

—हुक्का

उतड़ू-मुतड़ू, त्रीहीं[5] भाईरा एकही चुतुड़ू ।

—कसमले का कांटा

काली थी कलजोटी थी,
लाल पाणिए न्हाती थी ।
वैरी दुशमणे औंदे[6] थे,
से नांगी हुई के खड़ी जाहीं[7] थी ।

—म्यान और तलवार

मुली सांही[8] डकला[9],
देही[10] सांही भेस[11],
बोलणा ता बोल
नई ता तू भी गया परदेस[12] ।

—रुपया

1. हल्दी। 2. घुटना। 3. किस की। 4. नीचे। 5. तीन भाईयों का। 6. आते। 7. छुपे हो जाना। 8. की तरह। 9. टुकड़ा। 10. शरीर। 11. रूप। 12. विदेश।

ओल्या मोल्या तूं जांघा ता मूंजो भी वोलेयां।

—दरवाजा

मुला[1] री थोड़ी, तोला री भारी,
राती रा सुखण[2], ध्याड़ी[3] जो स्वाईरी[4]।

—रजाई

वार छलाका पार छलाका,
बिच भर गम्भर पाका।

—मक्खन निकालना

छुण-छुण डब्बी, छुण-छुण हार,
मेरी डब्बीया लख हज़ार।

—डोडी और दाने

पारली धारा थे आया वामी,
आपु छोटा दाड़ी लाम्बी।

—जौ, यव

एसणु भतैसणु, वत्ती खाला कैसणु[5]।

—प्याज़

मुठी पर मुठ, बुझण ता बुझ
नईता[6] एते[7] उठ्।

—गन्ना या कमाद

1. मूल्य में। 2. रात को जिसका सुख हो। 3. दिन को। 4. सुलाई हुई। 5. किस की है। 6. नहीं तो। 7. यहां से।

@tankrilipi parul arora

लोहे रा जंगला, कांचा[1] रा बंगला,
भीतर बैठी राणी[2] मंगला।

—लालटेन

टुंडु[3] बांधे, मुंडु[4] बांधे, सिर थया[5] जुगती[6],
मुईरा[7] चलाई रा ज्युंदा[8], देखो मोयो ऐसा हुगती[9]।

—मृत भैंसे की खाल से बनाई गई तैरने के लिए विशेष नाव (मशक)

एक दूंगी, सभी रे घरा चींगी[10]।

—नरसिंगा, एक लोक वाद्य यंत्र।

चार चिड़ी चव्वकण लगी,
दो खड़ी दो नाचण लगी।

—गाय के स्तन

चार जिदे पावे वह पलंग भी नाहीं,
आठ जिदी[11] ईस्त्री[12] वह पुरुष भी नाहीं,
सोला[13] जेस रे[14] चेले वह महंत भी नाहीं,
लस्कर[15] जिदा बहुत वह बाशाह[16] भी नाहीं।

—रुपया
चार चव्वनी, दो अठ्ठनी, सोलह आने और अधिक पैसे, धेले, पाईयां।

1. शीशा। 2. रानी। 3. पैर। 4. सिर। 5. रखा। 6. आहिस्ते या आराम से। 7. मरा हुआ। 8. जीवित। 9. योजना। 10. जोर से चिल्लाना। 11. जिसकी। 12. स्त्री। 13. सोलह। 14. जिसके। 15. बहुत अधिक। 16 राजा।

जगमग लकड़ी, जगाणे[1] वाला कौन,
भाभी चली पेवके[2] हटाणे वाला कौन।

—बन्दूक और उससे
निकली गोली

चार मेरे हिलकणु-जुलकणु[3],
चार मेरे खटणऊ[4],
दो मेरे सुकी रे लकड़ु[5],
एक मेरा भमकाऊ[6]।

—गाय और उसके अंग

हाडकु मुंडकु सट्टे नाला,
आप्पु[7] कोही[8] डाला।

—आकाश बेल

हाऊं गई थी, मूंजो दित्ता था[9],
मैं आ गई, से मैं तेथी[10] रखेया।

—बिछौना

@tankrilipi parul arora mandi

पारली धारा थे आया कट्टू,
छै जांघा एक जट्टू[11]।

—तराजु

कालु सुतीरा, द्वारू[12] दितिरा[13]।

—रीठे

1. सुलगाने वाला। 2. मायके। 3. चलने-फिरने वाले। 4. कमाने वाले। 5. सूखे हुए लकड़ की तरह। 6. झूलने वाला। 7. आप। 8. चढ़ना। 9. दिया था। 10. वहां। 11. चोटी। 12. दरवाजा। 13. दिया हुआ।

डाला वे जल भादरीया,
दरधाना तेरा नांव[1],
बारा पांगे[2] बारा[3] नांव,
पात-पात के न्यारे नांव।

—महीनों के नाम

काला हांडु लाल भात,
खाई गया गड़पनाथ।

—हंजीर (फेगड़ा)

वह आई, वह गई।

—दृष्टि

हरी थी मन भरी थी, लाख मोतिए जड़ी थी,
राजा जी के बाग में, मुज़रे लई खड़ी थी।

—मक्की

एक द्वारू[4] सादुए भरीरा[5]।

—मुंह में दांत

डर-डर के डुबकी खाये,
खाली जाए भर के आये।

—घड़ा

कटोरे में कटोरा, बेटा बाप से भी गोरा।

—नारियल

1. नाम। 2. टहनियां। 3. बारह। 4. लकड़ी का छिलका। 5. भरा हुआ।

निली गांठी जौ वान्हे[1], भ्यागा[2] उठी चुहे खांदे[3] ।

—तारे

बुभा[4] एसा पोलणिया बुभा,
दो धार एक गुफा ।

—नाक

छमक छट्टी छमक धागे, फूल बड़े वास न ग्रावे ।

—सेहरा

धरत कामे, धरतोड़ कामे,
बैठा राजा, पाणी मांगे ।

—ग्राटे की चक्की
(घराट)

तांग बड़ांमेया[5] टबरा[6], तेढ़े-मेढ़े[7] बछाण[8] ।

—मक्की के छिलकों का
बना हुग्रा गोल विछौना

एक कोह्या[9] डालाग्रो[10], दो बैठे भालाग्रो[11] ।

—ग्रादमी ग्रौर जूते

दो बैह्णियां एक धारा वार, एक धारा पार,
कधी नी मिलदी ग्रापु मंभार[12] ।

—ग्राँखें

1 बांधना । 2. सुबह । 3. खाते हैं । 4. मालूम करना । 5. न सुलझने वाला जाल । 6. परिवार । 7. वेतरतीव ढंग से बुना हुग्रा । 8. बैठने के लिए तैयार की गई वस्तु । 9. चढ़ा । 10. वृक्ष पर । 11. देखने के लिए । 12. ग्रापस में ।

@tankhlipi parul arora mandi

ग्रोगा-मोगा[1] पात्तर[2] सिउणी[3] जोगा[4] ।

—चील के पत्ते

दुरा थे[5] ग्राई बेल, ग्रन्दर छुट्टी खेल[6] ।

—चक्की

एक जबरी[7], सभीए[8] रगड़ी[9] ।

—सील ग्रौर पीसने के
लिए गोल पत्थर

चपा भर चीज़ न सोधी न पूठी[10],
बुझणा ता बुझ नईंता इथि थे[11] उठ ।

—ग्रौरतों के केश संवारने
के लिए लकड़ी की
विशेष कंघी

एक दाणा[12] ज़लेया[13], सारा घर भरेया[14] ।

—दीपक

एक रूख तेजो कोह्णे[15] रा दुःख ।

—केले का वृक्ष

केल् हेढ मेला ।

—'सलोहे' एक रेंगने
वाला कीड़ा

लगे तो कैसा मज़ा ग्राए ।

—सुरमा

1. लम्बा-मोटा । 2. पत्ता । 3. सूई की नोक वाला । 4. की तरह । 5. दूर से । 6. सारे शरीर का हिलना । 7. बुढ़ी । 8. सब ने । 9. रगड़ना । 10. उल्टी । 11. यहां से । 12. किसी गोल वस्तु की एक इकाई । 13. जलना । 14. भर गया । 15. चढ़ने का ।

अा कन्हैया जा कन्हैया पी कन्हैया हुक्का ।
घरा-घरा रे टुकड़े खांदी[1] फेरी भी कन्हैया भूखा ।

—घराट चक्की

एक वावा रे दो रखवाल़े,
दुहें[2] लम्बे दुहें काल़े ।

—मूच्छें

मेरा भेड़ु कन् मरोड़ु[3], अन्दर खूंडा बाहर जोड़ ।

—'तरडो' जंगल में पैदा होने वाली एक बेल का कन्द

सीस नगर[6] से चोर भागा, कानपुर[7] में पकड़ा गया,
हाथरस[8] में फैंसला हुआ, नाखूनपुर[9] में मारा गया ।

—जूं

सुक्का[10] पाया, सिन्ना[11] काढेया[12] ।

—घड़ा

चिड़ुए-मिड़ुए पई वगार[13],
दो घोड़े एक सवार ।

—मुर्दा

एक अनोखा देखा धागा,
बात चीत में दौड़ा भागा ।

—टेलीफोन

---

1. खाता है । 2. दोनों । 3. मरोड़ना । 4. खोलना । 5. दोनों । 6. सिर । 7. कान । 8 हाथ । 9. नाखुन । 10. सुखा हुआ । 11. गीला । 12. निकाला । 13. काम करने का भार दिखाना ।

चार खड़ियां[1] चार फेटियां[2] चार सुरगा[3] देणियां ।
रंग तोते बोलदे[4] हुण[5] फौजा अवणियां[6] ।

—वेदी (मण्डप)

सर-सर तो सर्प नहीं, फर-फर तो पंछी नहीं,
भांत-भांत के फूल लगे, फिर भी वृक्ष नहीं ।

—सेहरा

थूक लाई मरोड़ेया[7], ध्यान लाई घसोड़ेया[8] ।

—सूई-धागा

धारा परे थे आया कोकड़ा,
से बोलदा मेरे पेटा चोपड़ा ।

—लकड़ी का बना परात के आकार का बर्तन

जाग्घा[9] चकी[10] पाणी[11] ।

—जूती

एक गाय सारी ध्याड़ी[12] चरदी,
राती जो गोहा[13] नी करदी ।

—पैसा

चार भाउ एकी जाग्घे[14] मुतराहें ।

—गाय के थन

---

1. खड़ी हुई । 2 लम्बी पड़ी हुई । 3 स्वर्ग । 4. बोलते हैं । 5. अब । 6. आयेगी । 7. मरोड़ना । 8. घुसाना । 9. टांगें । 10. उठाना । 11. डालना । 12. दिन । 13. गाय का गोबर । 14. टांगें । 15. पेशाब करते हैं ।

@tankrilipi parul arora mahdi

बाग नी बगीचा नी बाड़[1] काहे को दिया,
झांक कर क्या देखता है तेरे बाप का क्या लिया ।

—मछली

चंदरा सुरजा लगी लड़ाई,
एक छोरी[2] गई छुड़ाई[3] ।

—ताला और चाबी

एक जीव अन्न खांदा[4], पाणी[5] कधी[6] नी पींदा[7] ।

—अनाज का कीड़ा 'कूण'

जानी चढ़दी[8] जांदी[9], लेपरे[10] टरदे[11] जांदे[12] ।

—बांस (वैंहज)

नीली थाली[13] जे पौंदी[14] नींही[15] ।

—आकाश

चिफली[16] खलाह[17] पकडोंहन्दी[18] नी ।

—सांप

धुड़[19] जंघे[20] धुड़ नल,
राती जो दौड़दे[21] दाढ़ी जल ।

—चूहे

---

1. सीमा बन्द करना । 2. लड़की । 3. छुड़ाना । 4. खाता है । 5. पानी । 6. कभी भी नहीं । 7. पीता है । 8. चढ़ती है । 9 जाती है । 10. खाल का गिरना । 11. गिर जाना । 12. जाते हैं । 13. थाल । 14. पड़ती । 15. नहीं है । 16. फिसलन वाली । 17. छड़ी । 18. पकड़ में आने वाली नहीं । 19. छोटे । 20. टांगें । 21. दौड़ने वाले ।

न्हूंसे[1] दिती द्रुभ[2] सौहरा जमेंया[3],
पताला दिती छाल[4] न्हूंसे थमेया[5] ।

—दहीं, मखन और मथनी

एक छोहरी से बाड़ देन्दी[6] जाहीं[7] ।

—सूई-धागा

बुझो सवे खपरी,
पारलिया[8] छावां मूंड खलारी[9] बैठिरी[10] ।

—वगड़े घास

ध्याड़ी[11] जो भार थी राती जो ल्यार थी[12] ।

—एक रस्सी जिस पर अवसर कपड़े टांगे जाते हैं । दिन को उस पर कपड़े रहते हैं और रात को कपड़े बिछा लेते हैं ।

एक लिम्वड़ी[13] से सभी जो चिमड़ी[14] ।

—मिर्च

वणा[15] जांदी[16] ता घरा बखा[17] देखदी ।
घराओ[18] आंवदी[19] ता वणा बखा देखदी ।

—कुल्हाड़ी

एक पंद लपेटी, लपेटी नी मुकदी[20] ।

—रास्ता

---

1. बहू । 2 घास का छोटा तिनका । 3. जन्मा । 4. डुबकी लगाना । 5. संभाला । 6 देती है । 7. जाती है । 8. सामने वाली धारा । 9. खुला हुआ । 10. बैठी है । 11 दिन को । 12. नंगी थी । 13. लालची । 14 चिमट जाना । 15. जंगल । 16. जाती है । 17. की तरफ । 18. घर को । 19. आती है । 20. खत्म होती है ।

@tankrilipi parul arora mandi

दो टाटम टाटे, दो सुकियां टाटां,
दो चिलकण[1] तारे, एक मखियां मारे।

—**गाय के कान, सींग,**
आँख और पूंछ

एक छोहरी, तेसा जो एक हाथ दो जांघा लोड़ी[2]।

—**लाठी**

पांच कुदणु कुदल लगे[3], अणी वलासु[4] नचण लगी.
भादरू मियां खिचण लगा, आपणा खल्हड़ु[5] भरण लगा।

—**हाथ, जीभ, गला, पेट**

एक छोहरी सारी ध्याड़े बकदी[6] रहीं[7]।

—**जीभ**

धारा परे थे आया गण गणांदा[8],
बाभी आगिए[9] रोटी पकांदा।

—**शहद की मक्खी**

दो घोड़े एक सवार, एक वार एक पार।

—**चुल्हा**

घुरकणी वाछी घुरकणी गाए,
एक ओरे जो सादणी, दूजी परे जो जाए।

—**मथनी**

---

1. चमकते हुए। 2. चाहिए। 3. नाचने लगे। 4. जीभ। 5. चमड़े का बना हुआ थैला। 6. बकना। 7. रहना। 8. गुन-गुनाता हुआ। 9. बिना आग के।

सुरगा[1] वजी ढोलकी, पताला लगेया व्याह,
याणे स्याणे[2] पुछदे लगे, वाभी[3] बीजे[4] हुआ क्या।

—**जंगली छुछी**

एकी वावा रे दुई[5] लड़के,
कधी नी आपु मझा[6] देखे लड़दे,
अगे पीछे चलदे, सभी जो प्रयासा[7] करदे।

—**चांद और सूर्य**

टीभलु टई पात बड़ा विन्दु[8] नहीं।

—**रोटी**

वेंहज[9] धडेंज का मुआ[10],
पहाड़िया खुरड-खुरड[11] के मुआ[12]।

—**तकली**

वाभी वाहे फूल खिले, सभी रे मूंडा प्रयाल्हे[13] चले।

—**तारे**

चांदी ही चांदी सटेया[14],
फेरी भी केसिए[15] नी चकेया[16]।

—**बर्फ**

पारा थे आया अकरा, तिने नाका कने चकेया बकरा।

—**आग और चिमटा**

---

1. स्वर्ग में। 2 छोटे बड़े। 3. बगैर। 4. बिजली गिरना। 5. दो। 6. आपस में। 7. प्रकाश। 8. छोटा निशान। 9. बांस। 10. सुई। 11. रगड़-रगड़ के। 12 मरा। 13 ऊपर। 14. गिरा। 15. किसी ने नहीं। 16. उठाया।

@takrilipi parul arora mandi

खड च जमेया खड़कनु, पियु-पियु पुकारदा,
अम्मा दा मैं कम कमादा, बापु मिंजो मारदा ।

—ऊन पींजने का तुंबा

संगल सप न संगण सोई,
तेस बराबर तंद[1] नीं बजांदा[2] कोई,
सिहां बाघाओं से खान्दा[3],
तेजो नीं खांदा कोई ।

—मच्छर

काला से कावा सांही, चिट्टा से दूधा सांही,
सायला[4] से तोते सांही, नी बुझे मेरी पोल्हणी,
तेसरा मुंह खोते सांही ।

—मोर

चोर गया चोरी करदा तेजो जान्हा नहीं ।
म्है[5] ल्यादी चोरी कने, तेजो लिंगटा[6] नहीं ।

—सांप और मेंढक

बाबा रणियां, साठा गजा रा चोग,
पैन्हदा होर लान्दा तणियां ।

—छोलदारी

इतनीक जुगणी इतना कर पेट,
चल मेरी जुगणिए मंडी-सुकेत ।

—टेलीफोन

1. एक वाद्य यंत्र जो मुंह से बजाया जाता है । 2. बजाने वाला । 3. खाता है ।
4. हरे रंग का । 5. भैंस । 6. पूंछ ।

भरीरे कुएं मंझा मारे डुबकी,
मना रा हाल सुनाए चुपकी ।

—दवात और कलम

पारा थे आया तातम-ताता,
बाबा पुतरा रा एकहे नाता ।

—नाई और प्रोहित

हरणा वे हरणा, तुझ कजली वण[1] चरना,
बिभडुए[2] दा पाणी पीणा, ता त्रपडुएच[3] मरना ।

—उस्त्रा

ढक जिन्हां रे योगे-मोगे, पातर जिन्हारे सुईया जोगे,
फल जिन्हा रे राजा जोगे, बागर[4] करे सभीयो नरोगे[5] ।

—चील का पेड़

बिल्ली री फुहंद[6] हाथा, बिल्ली कोही[7] गासा[8] ।

—पतंग

नदी किनारे दीप जले, जो अन्धे को भी सूझे,
ऐसा ज्ञानी ज्ञान करे, जो कोई मन की बुझे ।

—नाड़ी

चार हडियां नौ लख आन्दरा,
मेरी पोल्हणी बुझणी ता बुझ नई तूं पुतर बांदरा रा ।

—चारपाई

1. काला वन । 2. छोटा तालाब । 3. चमड़े की एक थैली का नाम । 4. हवा ।
5. निरोग । 6. पूंछ । 7. चढ़ी । 8. ऊपर ।

lolankhupi parul arora mandi

पीपल डूबे सणे[1] कुमलिए[2], हाथी छलमल नहाए,
घड़ा न डूबे ग्रालिया[3], चिड़ी तिहाई[4] जाए ।

—**ग्रोस**

एक धागा से कुल्ल जाईके लागा ।

—**सड़क**

धारा परा थे ग्राई इक रसड़ी[5],
तेसा जो हड्ली[6] ना पसली[7] ।

—**जोंक**

ऐथों वोवो[8], तैथों वोवो[9] दई जुराणेया दुखा[10],
वारा वाटी सेरो पक्की फिर भी सिर रूखा[11] ।

—**'बगड़े' (एक विशेष प्रकार का घास)**

@tankrilipi parul arora mandi

छावुंग्रा छवीड़ा[12] ग्रापु पईरा नहौंदा,
फूहंट[13] थैईरा[14] बीड़ा[15] ।

—**लकड़ी का बनाया गया चमच**

वार धार पार धार मंझ भर मदान[16],
ग्रागे ग्रगे छोहरू चले, पीछे चले ज्वान[17] ।

—**सूप**

1. साथ में । 2. कोंपल । 3. छोटा तालाब । 4. प्यासी 5. रस्सी । 6. हड्डी । 7. पसली । 8. घास काटने वाली । 9. घास काटने की दराती । 10. दिल का दुःख । 11. सूखा । 12. लकड़ी का चमच । 13. पूंछ । 14. रखा हुग्रा । 15. पानी के किनारे । 16. मैदान । 17. नवयुवक—लेकिन यहां ग्रर्थ मोटे चावलों के लिए प्रयोग किया गया है ।

काली नथ, वाहेया पटाका चाली हथ ।

—**बन्दूक**

एक बकरी, डंगे हेठ[1] ग्रफरी ।

—**रोटी**

चार जांघे चलदी, दो दिये वलदे[2],
किड़ मुन्डे मेकदा[3], लोक तमासा देखदे ।

—**मोटर**

लकपकी तलवार ना मिलदी मुल्ले[4]
ना मिलदी ध्वार[5] ।

—**जीभ**

बती कुटण कुटदे लगे[6],
कोकला राणी नाचदी लगी[7],
घुघतु मिया[8] घुटदा लगया ।

—**दान्त, जीभ, गला**

पारली धारा डोडण फूली,
रंग विरंगे धागे,
ग्रासा रे राजे पोलणी दित्ती,
सब्हे लोग जागे ।

—**सूर्य उदय होना**

तक तक तई, होरी सभीरा, राजे रा नई ।

—**ताऊ**

1. नीचे । 2. जलते । 3. बजना । 4. मूल्य चुका कर । 5. उधार । 6. बत्तीस दान्त । 7. जीभ । 8. घुंडी ।

उपर झक्कड़-माकड़[1], हेठ चाकु[2],
हेठ झप-झप[3], हेठ स्णु-ध्णु, हेठ हड़प्प[4]।

—मुंह

लमझमंगा होरिये चकेया लटा-फटा,
बाबे चकी आमां।

—तराजु और तोल

तेसे रांडे पादेया, स्वरगा[5] सुणे[6] घरनाव[7],
कुल्लु रे काम्मे द्ययो-देवते, मंडी रे काम्मे कौ[8]।

—बन्दूक दागनेकी आवाज़

पांजे भाईये गुड्डा चकेया[9],
जाई रखेया हरिद्वार[10],
हरिद्वार थे धक्का लगाया,
पहुंचाया समुन्दरा पार[11]।

—ग्रास

तोता मैना तीतर बटेर[12],
इन्हा सभी जो ल्या घेर,
मरोड़-मराड़ के गुच्छा किता,
आखिरा मंजा लोहू पीता[13]।

—पान

सौ पुतरां री इको मां, जिस तो डरे सारा जहां[14]।

—सपनी

---

1. मूंछें। 2 दांत। 3. जीभ। 4. घुंडी। 5 स्वर्ग। 6. सुनाई देता है। 7. आवाज़। 8. कौवे। 9 उठाया। 10. होठों पर। 11. मुंह के अन्दर कर दिया। 12. सभी प्रकार के पान के मसाले। 13. पान का लाल रंग का रस। 14. संसार।

नदी मंझा बाबा न्हौंदा,
मैं मारी लत[1] बाबा गान्दा।

—कटोरा

माँ पतली पतंग, पुत लुव[2] जिया,
माँ गई न्हौन पुत डुबी गया।

—रस्सी और डोल

तिन आखरा[3] रा मेरा नौं,
उल्टा सीधा एक समान,
खाणे रे मौके आवहां काम।

—चमच

पहले सी मैं लाड-लडिक्की[4],
सौहरे जाई के हाऊं पई गई फिक्की,
उन्हें[5] कित्ता होर ब्याह,
मूं जो दित्ता गलों लाह।

—सलीपर, जुती

ल्यौंदा[6] तूजो मुल्ले कुड़े, बनाया तूजो धी कुड़े,
खांदी पींदी घिसी गई, होया तूजो की कुड़े।

—कड़छी

★ ★ ★

(ग) विचार

मण्डी के पारिवारिक जीवन में इन विचारों का बड़ा व्यवहारिक स्थान है। वर्तमान पीढ़ी भले ही इन विचारों को अर्थहीन समझे, परन्तु बुजुर्ग अभी भी इन विचारों को प्रयोग में

---

1. टांग। 2. गोलाकार बर्तन। 3. अक्षर। 4. बहुत प्रिय। 5. उस ने। 6. ले कर आना।

@tankrilipi parul arora mandi

लाते हैं। यह विचार विभिन्न पक्षियों की बोलियों के रूप में, गृह-प्रस्थान विचार के रूप में, छींक विचार के रूप में और नीति विचार के रूप में यहां के लोक-साहित्य में उपलब्ध हैं।

कहावतों और पहेलियों की भान्ति ही यह विचार भी दीर्घकालीन अनुभवों पर ही रचे गये हैं जिन का आधुनिक युग में भी उतना ही महत्त्वपूर्ण स्थान है।

[नीति विचार]

जे कोई खरी गल तुसा रे देखणे मझा आवे,ता तेसा जो सीखणे रा भ्यास सभी जो करणा चाहिए।

अर्थात् अच्छी बात सभी को सीखनी चाहिए।

जे आदमी जेसा कदरा रा हो, तेसरी तिधी मुजब इज्जत कराएं।

@tankrilipi parul arora mandi

अर्थात् जैसा व्यक्ति हो उसके साथ उसी प्रकार का व्यवहार भी करना चाहिए।

जे गल गलाणे रे लायक न हो, तेसा गला जो मुहां थे बिल्कुल नी काढा।

अर्थात् पहले तोलो, फिर बोलो।

आपणे मितरा री येहे पछाण हुआंई, जे स्यों औखीरे वेला काम आवांहें।

अर्थात् मित्र विपत्ति के समय ही काम आता है।

* * *

(घ) ढकोसले

मण्डयाली लोक-साहित्य में उपलब्ध प्रकीर्ण साहित्य के अन्तर्गत कुछ ऐसे वाक्यों को दोहराया जाता है जो व्यवहारिक दृष्टी से असम्भव से प्रतीत होते हैं। इन्हीं बातों को ढघोंसले कहा जाता है। सम्भवतः यह शब्द हिन्दी का विकृत शब्द है।

पर्वतीय क्षेत्र होने के नाते यहां एक स्थान से दूसरे स्थान तक उच्चे-उच्चे पहाड़ों से हो कर जाना पड़ता है। तब एक व्यक्ति दूसरे से कहता है—

"भाई, रास्ता लम्बा जान पड़ रहा है। कोई गप्प मारो अर्थात् कोई बात करो जिस से रास्ता हंसी-खुशी में कट जाए।" दूसरा इन्हीं ढकोसलों को कहना आरम्भ करता है :—

ममेला रा सुती रा चुरागा आई जाग।

अर्थात् मण्डी की तहसील करसोग में दो गांव हैं। एक ममेल और दूसरा चुराग, लेकिन दोनों में लगभग सात-आठ किलोमीटर का अन्तर है। और रास्ता भी चढ़ाई का ही है। ऐसे में यह बात कितनी अस्वभाविक प्रतीत होती है कि व्यक्ति ममेल में सोया हुआ चले और चुराग में उसकी नींद खुले।

एक हरडे छेहां खच्चरा पर चलाईरी।

अर्थात् हरडे यानि हरड़ का लगभग वज़न १० ग्राम से से अधिक नहीं होता है। क्या यह सम्भव है कि एक हरडे को छः खच्चरें उठा कर ले जा रही हों।

मसडु[1] रे पैरा गईरी व्याड़ी[2], तेत सुतीरा[3] हाथी।

1. मच्छर। 2. पैरों का एड़ी की ओर से फटना। 3. सोया हुआ।

अर्थात् मच्छर के फटे हुए पांव की दरार में विशाल काया वाला हाथी सो रहा है।

खादीरी[1] भूज्जी[2] लगी रे लौंगा रे ढकार।

अर्थात् सब्जी तो पतरों की खाई है लेकिन डकार इस तरह के लगा रहे हों जैसे लौंग खाये हों।

रोगी रे[3] गई रे संभाला[4], से कोही रा[5] डाला।

अर्थात् रोगी को पूछने के लिए गये तो वह बिस्तर पर न हो कर वृक्ष पर चढ़ा हुआ है।

नकटेया[6] नाक टुकेया[7] बोले छांव हुई।

अर्थात् जब नाक-कटा पहले ही है तो उसका नाक कहां से काटा जाएगा और कहां से उसकी छांव होगी।

जा घराट, लैओ[8] आटा,
गया घराट लौन्दा आटा।

@tankrilipi parul arora mandi

अर्थात् चक्की में आटा पीसने तो जाया जा सकता है। पर स्वयं चक्की कैसे आटा ला सकती है।

चक वरसेला[9], जा सवेला[10]।

इस ढकोसले के पीछे एक छोटी सी घटना बनाई गई है जिसे सुनाने से भी समय बीत जाता है। एक दरिद्र ब्राह्मण अपनी निर्धनता के कारण अत्याधिक परेशान था। उसे एक युक्ती सूझी। यहां पहले जब राणा हुआ करते थे तो उनकी

1. खाई। 2. सब्जी। 3. रोगी के पास। 4. कुशलता। 5. चढ़ा हुआ। 6. नाक कटा। 7. काटना। 8. ले जाना। 9. लकड़ी का चिन्ह। 10. खुराक आदि का प्रबन्ध।

यादगार में दस-बारह फुट लम्बी और एक सवा फुट के लगभग चौड़ी लकड़ी पर उस मृत राणा का शरीर अंकित कर एक विशेष स्थान पर गाढ़ दिया जाता था। सुबह-शाम वहां पर राणा के नौकर दीपक इत्यादि जला दिया करते थे, और वर्ष में एक बार श्राद्ध मना दिया जाता था। उस अंकित लकड़ी को वरसेला कहा जाने लगा।

एक दिन ब्राह्मण ने शाम के समय जबकि घर में आग तक जलाने के लिए लकड़ियां नहीं थीं, वहां जाकर अपने आप में ही प्रार्थना करने लगा कि हे महाराज, मैं तो आपके राज्य में बहुत दुःखी ब्राह्मण हूं—कुछ मांगने आया हूं। फिर स्वयं ही उत्तर दे कर बोलने लगा—"तो हे ब्राह्मण तुम मेरे पास क्यों आए हो, क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकता हूं ?"

इस प्रश्न का उत्तर भी स्वयं ही दे कर पुनः बोला—"महाराज, आप तो विधाता हैं और मैं दास। मेरी एक अर्ज़ है कि इतनी सर्दी में भी मेरे पास न खाना बनाने के लिए लकड़ी है, न सेकने के लिए। इस लिए आप से प्रार्थना है कि मेरी कुछ सरकार के खाते से मदद की जाए।"

"ठीक है ठीक है, जा तू एक वरसेला यहां से उठा ले और आनन्द से खाना बना कर स्वयं भी खा और बच्चों का भी पेट भर।" यह शब्द भी स्वयं ही उस निर्धन ने कहे और फिर मृत राजा का धन्यवाद कह कर कि जैसे आपकी कृपा बहुत-बहुत मेहरबानी, एक मनपसन्द लकड़ी उखाड़ी और चलते बना। इस सब स्वगत नाटक को राणा का नौकर सुन रहा था जो तेल डालने यहां आया था और चोर जान कर किसी पेड़ की ओट में छिप गया था। शीघ्र ही सूचना वर्तमान राणा के पास पहुंची। ब्राह्मण को बुलाया गया। उक्त प्रकार से नाटक करने का कारण

पूछा तो ब्राह्मण कहने लगा—"हज़ूर, मैं कभी भी ऐसा घृणित कार्य न करता पर क्या करूं स्वयं आपके दादा जी ने मुझे बुलाया और उनकी आज्ञा से ही मैंने यह किया। अब आप ही सोचिए हज़ूर कि क्या मैं उनकी आज्ञा को टाल सकता था।

वर्तमान राणा की समझ में पहले तो कुछ भी नहीं आया फिर अपने मंत्रियों के कहने पर उसे पागल करार दे कर जेल खाने में बन्द कर दिया। लेकिन, चतुर ब्राह्मण वहां भी राणा-दादा से बातें करने लगा—

"महाराज, आपके मरने के बाद अन्याय कैसा। आपके न्याय की धाक तो सारे संसार में थी लेकिन, आपके पोते न हम लोगों का जीना कठिन कर दिया है। देखिए न, आपने लकड़ी दी और मैंने ली। लेकिन अब बिना कसूर के आपके पोते साहब मुझे इस जेलखाने में बन्द किए हुए हैं। अब आप ही दया कीजिए।" इस पर भी ब्राह्मण स्वयं ही उत्तर देने लगा—

"देख ब्राह्मण, मेरे पोते ने जो तुझ जैसे परम पवित्र भगवान् के भक्त को सताया और चोर ठहराया है, इस का बदला मैं शीघ्र ही लूंगा और यदि तुम्हें एक सौ स्वर्ण मुद्राएं दे कर प्रसन्न नहीं किया तो एक महीने में सारा राज-काज एक बार फिर अपने हाथ ले लूंगा। बस, थोड़ा इन्तज़ार कर।"

राणा के गुफिया लोगों ने यह ख़बर भी सुन ली और बात राजा तक पहुंच गई। फिर तो कहना ही क्या राणा ने शीघ्र ही नौकरों को हुकम दिया कि उस ब्राह्मण को आदर सहित हमारे यहां लाया जाए। हमारे दादा ने उसे एक सौ स्वर्ण मुद्राए देने का बचन दिया है। इस प्रकार वह दरिद्र ब्राह्मण धनवान् बन गया।

@tankrilipi parul arora mandi

मण्डयाली शब्दावली

[भाग पांच]

मण्डयाली शब्दावली

आं

आंग (विशे०)—इकाई, एक संख्या ।

अ

अलोकणा—क्रि०) ग्रहों आदि के प्रकोप से बच्चे के लिए सिर पर तांबे के पैसों को घुमा कर फेंक देना ।

आ

आखे—(सं०) एक विशेष प्रकार का कांटेदार पौदे में पाये जाने वाला पीले रंग का मीठा फल ।

आदरा—(सं०) अद्रक ।

आन—(सं०) अन्न, अनाज़ ।

आपू—(सर्व०) अपने-आप, स्वयं ।

आसा जो—(सर्व०) हमें, हमारे लिए ।

आसे—(सर्व०) हम सब ।

उ

उख़ल—(विशे०) ओखली ।

उपराओ—(क्रि०विशे०) ऊपर की ओर ।

उमल़ा—(विशे०) उल्टा, उल्टी बात ।

उम्मेद—(विशे०) उम्मीद, आशा ।

ए

एंकलु—(सं०) चावल के आटे की बनाई गई रोटियां ।

@tankrilipi parul arora mandi

एढ़ा—(क्रि०विशे०) ऐसा, इस प्रकार।
एव्वण—(विशे०) गंदी आदतों वाली छोटी बच्ची।

ओ

ओटा—(सं०) बरामदा, मकान का सब से निचला बरामदा।

औ

औखत (सं०) औषधि, दवा।

कं

कंध्यारी—(सं०) कुमकुम पात्र
करड्डु—(सं०) रोटियां रखने के लिए बनाया गया बांस का बर्तन।
कांगरी—(सं०) किगरी, आग सेंकने के लिए बनाया गया मिट्टी का बर्तन।
कांग—(विशे०) कान को अप्रिय लगने वाला शोर।
कांध (सं०) दिवार।

क

कठ्याई—(सं०) चावल मापने का बर्तन।
कठ्यार—(सं०) जमीन की देखभाल के लिए बनाया गया विशेष घर।
कठ्ठे—(सर्व०) के लिए।
कट्ठे—(विशे०) इकट्ठे, मिल कर, साथ बैठ कर।
कठोबरू — (सं०) निचली मंजिल का बन्द कमरा।
कठोलण (सं०) शाकाहारी।
कड़ोह्लु—(सं०) कंगन, वाजूबंद।
कतीरा—(सं०) कैंची।
कवेल—(क्रि०विशे०) वेमौके, अनुपयुक्त समय।
कधोरा—(विशे०) जो ठीक नहीं, बुरा।
करज—(सं०)ऋण, उधार लेना
कलथीचड़ा—(सं०) कोलथ की दाल के साथ पक्के हुए चावल।
क्वालू—(सं०) पहाड़ की चढ़ाई।

क्वाही—(विशे०) सीधी चढ़ाई।
काकड़ी—(सं०) ककड़ी, खीरा, गले की नाली।
कांवा—(सं०) लकड़ी के धुएं से बनी हुई कालिख।
कालका— (विशे०) पिछले कल का।
कालख़—(विशे०) कालिमा, काले रंग की परत।
काल़जा—(सं०) कलेजा, हृदय
कीलणी—(सं०) छोटी कुदाली
कुड़मणी—(सं०) वर या वधु के घर की औरतें।
कुणहा—(सर्व०) कौन है।
कुणा—(सं०) कोना, किनारा।
कुनाल़ा—(सं०) आटा गूंथने के लिए बनाया गया लकड़ी का बर्तन।
कुलार—(सं०) दिन का भोजन, लंच।
कुल़ज—(सं०) कुल देवता।
कूमल़ी—(सं०) कोंपल।
केढ़े—(सर्व०) कैसे।
केभे—(सर्व०) कब।
केस—(सर्व०) किस।
केस जो—(सर्व०) किस को।
कोहड़—(सं०) कुष्ट रोग।
कोतका— क्रि०) किसी वस्तु से अचानक आँख में चुभन लगना।
कोहणा—(क्रि०) चढ़ना।

ख

खंदोह्लु—(सं०) फटे-पुराने कपड़ों का बना हुआ ओढन और बछावन।
खजरे—(सं०) खजूर के पेड़ की घटिया किस्म।
खज्जरखोपा—(सं०) खजूर प्रकृति का भूमि के अन्दर पाये जाने वाला फल।
खपरा—(विशे०) बूढ़ा, वृद्ध व्यक्ति।
खप्पण— (विशे०) शरारती लड़की।
खप्पी—(विशे०) नटखट, शरारती लड़का।
खफण—(सं०) कफन।
खरम्ला—(सं०) खुले मुंह का बर्तन।
खसम—(सं०) पति।

@tankrilipi.parul arora mandi

खाणा—(क्रि०) खाना ।
खाख—(सं०) मुंह ।
खुरडना—(क्रि०) खुरचना ।
खुरढना—(क्रि०) खुजलना ।
खुसक—(विशे०) शुष्क प्रवृति का, निर्दयी ।
खोसला—(विशे०) जिस के दांत टूट गए हों ।

ग

गचन्हल—(सं०) तंग गली ।
गचल—(सं०) सीरा ।
गज्जर—(विशे०) संध्यावेला, सांझ ।
गमसुदुआं—(विशे०) घुटकर, घुटन से भरा हुआ गला ।
गल्ला-बाता—(क्रि०) बात-चीत ।
गलगोजू—(सं०) बांस की बनी साधारण छोटी बांसुरी ।
ग्वाल़ु—(सं०) ग्वाला ।
गाभरू—(सं०) बेटा, पुत्र ।
गाल—(विशे०) गाली ।
ग्रागड़—(विशे०) बिजली चमकना ।

गुमला—(विशे०) गुनगुना पानी ।
गूम्बर—(सं०) घास में पाये जाने वाला कांटा ।
गोछा—(सं०) अंगोछा, कांछा, लंगोट ।
गौधणा—(क्रि०) पांव से गूंथना ।

घ

घचीमणा—(क्रि०) जोर से आलिंगन करना ।
घड़ोलु—(सं०) मिट्टी का बना पानी लाने का बर्तन ।
घ्वाड़ना—(क्रि०) खोलना ।
घ्योर—(सं०) मैदे से तैयार किया गया विशेष पकवान ।
घराट—(सं०) पानी से चलने वाली आटा पीसने की चक्की ।
घरसाठणा—(क्रि०) फिसलना ।
घीयु—(सं०) घी ।
घूरट्ट—(सं०) दाल व आटा आदि पीसने की घरेलु चक्की ।

@tankritibi parul arora mandi

घेड़—(सं०) शादी आदि के अवसर पर खाना खाने वालों की कतार ।
घेपणा—(क्रि०) घेरना ।

च

चंगेर—(सं०) बांस की बनी बहुत चौड़ी टोकरी ।
चंदरा—(विशे०) चालाक, धोखे बाज ।
चकणा—(क्रि०) उठाना ।
चकणी देणा—(क्रि०) वहकाना
चगोतरा—(सं०) अमलीय फल ।
चठ्ठा—(सं०) वह लकड़ी जो चौखट आकार में एक दूसरे के ऊपर रखी जाती हैं ।
चबारू—(सं०) खिड़की, जो आदमकद ऊंचाई से ऊपर बनाई जाती है ।
चमारढ (सं०) चमड़े का काम करने वालों का स्थान विशेष, जिस स्थान पर समान अस्त-व्यस्थ हो कर पड़ा हो ।

चरड्याह्ला—(विशे०) जिस का शरीर खुजली से खराब हो गया हो, मूर्खतापूर्ण जिद्द करने वाला ।
चाके—(सं०) मकान पर डाले जाने वाले सलेट ।
चाक—(सं०) वेणी पर लगाये जाने वाला आभूषण ।
चामंड़ु—(सं०) पतीला ।
चिखा—(सं०) चिता ।
चिगंणा—(क्रि०) चिल्लाना, चीखना ।
चिट्टा—(विशे०) सफेद, शुभ ।
चिलड़ु—(सं०) चावल के आटे की बनाई जाने वाली कागज़ की तरह पतली चपातीयां ।
चीकड़—(सं०) कीचड़, गन्दा पानी ।
चीमू—(सं०) शहतूत ।
चूड़ना (क्रि०) पानी का चोना
चेड़—(सं०) प्रतिलिपि ।
चेड़ना—(क्रि०) उतारना, नकल करना, खाल उधेड़ना ।

चोड़ा— (सं०) छप्पर से पानी के गिरने का नाम ।

चोभड़ु—(सं०) गन्दे पानी का छोटा तालाब, पोखर ।

चोल़ी—(सं०) अंगिया ।

चोल़ू—(सं०) बहुत बड़ा घाघरा ।

चौल़—(सं०) चावल ।

च्युल़—(सं०) फर्स साफ करने के चिथड़े की बनाई गई पोटल ।

छ

छऊ—(सं०) कुल्हाड़ी ।

छड़ोलु—(सं०) छोटी टोकरी ।

छप्पड़ा—(सं०) गन्दे पानी का तालाब जहां पशु बैठते हैं ।

छाल़—(क्रि०) छलांग ।

छाह—(सं०) लस्सी ।

छिलणा— (क्रि०) छिलका उतारना ।

छीके मंभोलु— (सं०) दुःख के कारण विस्तर पर अस्थ-व्यस्थ पड़े रहना ।

छेकण—(सं०) भेट के लिए भोजन ।

छेकणा— (क्रि०) कपड़े का फाड़ना ।

छेड़—(सं०) ध्वनी, आवाज़ ।

छेलु--(सं०) भेड़ का बच्चा ।

छोट्टी—(क्रि०) पेशाव करना स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होने वाला शब्द ।

@tankrilipi parul arora mandi

ज

जंपरी —(सं०) अज्ञात स्थान, स्वर्ग या नरक ।

जगोणा –(क्रि०) पालना ।

जट्टू—(सं०) चोटी ।

जट्ठुत्तर— (सं०) जेठ का लड़का ।

जर्मध्याड़ा— सं०) जन्म दिन ।

जनीत्रु—(सं०) वरयात्री ।

जल़णा—(क्रि०) आग में जल जाना ।

जह्ल़ना—(क्रि०) भुंभलाना, क्रोधित होना ।

जह्रीरा—(विशे०) बिमार, ज्वरग्रस्त ।

जाई—(सं०) बेटी, पुत्री ।

जातरा—(सं०) मेला ।

जिथी—(अव्य०) जहां ।

जिमठिरा—(विशे०) मुरझाया हुआ ।

जीऊ –(सं०) जी, तबीयत, शरीर की हालत ।

जुकणा –(क्रि०) दवाब देना, पीटना, मुट्ठी से मारना ।

जुराणा—(सं०) जूते, ठेंगे पर

जूट्टे—(सं०) जूते, रंगहीन चमड़े के जूते ।

जे—(अव्य०) यदि, अगर ।

जेढ़े— (अव्य०) जैसे, जिस प्रकार ।

जेस—(सर्व०) जिस ने ।

जेथी—(सर्व) जहां ।

झ

झड्यांघ—(विशे०) झिड़की देना, डांटना ।

झमाई— (क्रि०) उवासी लेना ।

झमाखणा— (क्रि०) झप-काना ।

झमीरडी—(सं०) गलगल सा छोटे आकार का अमलीय फल ।

झल़— (विशे०) आग को प्रज्वलित करना (यह केवल लकड़ी से निकलने वाली आग के लिए ही प्रयोग किया जाता है ।)

झल्ल—(विशे०) क्रोध आना, झुंझलाहट ।

झिखणा—(क्रि०) खिझना, नाराज़ होना ।

झोल़— (सं०) लस्सी को उबाल कर बनाया गया पदार्थ विशेष ।

ट

टण—(विशे०) ठंडक, चुभन देने वाली सर्दी ।

टणेपरा—(विशे०) जिसे कम सुनाई दे, मूर्ख ।

टब़ल्हाखण—(क्रि०) देखते ही रह जाना, आश्चर्य चकित होना ।

टमख्या— (विशे०) शरारत करना ।

टब्बर—(सं०) पुश्तों से चले आ रहे सम्बंधी जो या तो एक ही मकान में रहते हों या अलग ।
टाटरी—(सं०) गंजापन ।
टाटा—(विशे०) जो बोल न सके ।
टाहला—(सं०) कमरे की छत्त और छप्पर के बीच का भाग ।
टीप—(सं०) जन्मकुण्डली ।
टपाकड़ा—(सं०) छप्पर से पानी बूंद-बूंद चोना ।
टुखना—(क्रि०) कट जाना, घाव लगना ।
टुम्बल—(विशे०) झुक कर ।
टोकणा—(क्रि०) रोकना, टोकना ।
टोलणा—(क्रि०) ढूंढना, खोजना, पता लगाना ।
टोटका—(सं०) टुकड़ा, छोटा भाग, कमी ।
टौणा—(विशे०) सुनी-सुसाई बात को अनसुना कर देने वाला ।

ठ

ठगणा—(क्रि०) ठगना, धोखा देना ।
ठसक—(विशे०) अहमान, रोब देना, हकुमत दिखाना ।
ठोकणा—(विशे०) डालना, अन्द रकरना, चुभाना ।

ड

डफ़र—(विशे०) बुद्धिहीन, अकलमन्द ।
ड्वार—(सं०) गुफा ।
डबरू—(सं०) शादियों में सब्जी बांटने के काम लाये जाने वाला पीतल का बर्तन ।
डामर—(सं०) पेट ।
डाह्म—(क्रि०) आग से जलने के बाद की पीड़ा, अग्निदाह ।
डायण—(स०) डायन ।
डुघा—(विशे०) गहरा पानी ।
डोलणा—(क्रि०) किसी तरल वस्तु को बर्तन से गिरा देना ।

@tankriipi parul arora nandi

डोहरी—(सं०) खेत ।
डोंडकबूतर—(विशे०) जिसे स्थिति का ठीक पता न चल सके, बुद्धिहीन ।

ढ

ढंख—(सं०) बहुत ही ढलवान-दार स्थान ।
ढवाण—(सं०) ओढ़न ।
ढाया—(क्रि०) गिरा देना ।
ढासण—(सं०) आसन ।
ढीसणा—(क्रि०) पीटना, मारना ।

त

तड़के—(अव्य०) सुबह रात्री का अंतिम पहर ।
तलौंसा—(सं०) तालू ।
ता—(अव्य०) तो ।
ताता—(विशे०) गर्म ।
ताप—(सं०) ज्वर, बुखार ।
तिन्हाओ—(सर्व०) उनको ।
तीथी—(अव्य०) वहां ।
तीधीजो—(सर्व०) उसको ।
तीरी—(सं०) दीवार में बनी छोटी सी अलमारी जो प्रायः खुली रहती है ।
तुध—(सर्व०) तूने ।
तुसे—(सर्व०) आप ।
तुसाजो—(सर्व०) आपको ।
तुहणा—(क्रि० मुंह में डालना, घुसेड़ना ।
त्रड़ा—(सं०) जड़ें ।
त्रड़खणा—(क्रि०) क्रोधित होना, मचलना ।
त्रढ़ा—(सं०) सामान ।
त्रयाहूं—(सं०) लोहे की तीन छड़ियां, जिस पर बर्तन रख कर नीचे से आंच देते हैं ।
त्रमैढ़ा—(सं०) तांबे की गागर
त्राण—(विशे०) हिम्मत, कार्य करने की क्षमता ।
त्राटणा—(क्रि०) पीटना, मारना ।
त्रकवाण—(सं०) तीर-कमान ।
त्रै—(विशे०) तीन की संख्या ।
ते—(सं० कारक) से ।
तेढ़े—(अव्य) वैसे ।
तेस—(सर्व०) उस, उसने ।
तेसजो—(सर्व०) उसको, उसे ।

तैंहतू—(सं०) कड़ाई आदि खुरचने की छड़ी नुमां कड़छी ।
तोपणा—(क्रि०) ढूंढना, तलाश करना ।
त्वाड़—(सं०) उलटी, कै, मतली ।
त्वाड़ना—(क्रि०) कै करना, मतली करना, उल्टी करना ।
त्वाह्ला—(विशे०) कम गहरा पानी ।

थ

थाले—(अव्य०) नीचे ।
थाह्म—(सं०) थम्ब, खम्बे ।
थिपू—(सं०) बड़ा रूमाल, जिसे मुख्य रूप से ग्राम्य औरतें काम-काज के समय सिर पर बांधती हैं ।
थेगचा—(विशे०) बेढंगे आकार का ।
थैणा—(क्रि०) रखना, संभालना ।
थोबड़ा—(सं०) मुखड़ा, मुंह, चेहरा ।
थोहल—(सं०) ढेर, गंदी चीजों का ढेर ।
थोहड़ा—(विशे०) कम ।

द

दांदे—(क्रि०) दान्त लगाना ।
दांवां—(सं०) पगहा, पशु बांधने की रस्सी ।
ददौहरा—(सं०) पति का दादा ।
दसणा—(क्रि०) बताना, दिखाना ।
दवाल—(सं०) मरने के उपरांत दस दिन के लिए खाने-पीने की रस्म ।
दाकड़—(सं०) मैल की परत ।
देहल—(सं०) प्रवेश द्वार पर लगी चोखट का निचला भाग ।
दोहड़—(सं०) ऊन का बना ओढ़न ।
दोवरा—(सं०) पशु बांधने के लिए बनाया गया अलग स्थान ।

@tankri lipi parul arora mandi

द्वाला—(सं०) देवालय, मन्दिर ।
द्वात—(सं०) स्याही का बर्तन, दवात ।

ध

धूंखला—(सं०) धुआं ।
धमुक्कड़—(सं०) मुक्का ।
धाड़ा—(विशे०) शोर ।
धूड़—(सं०) धूल ।
धुव्वल—(सं०) चावल से तैयार की गई देशी घटिया शराब ।
ध्वाणा—(क्रि०) धुलवाना, धोना ।
ध्याड़े—(सं०) दिन, समय (बहुवचन) ।

न

नंग-धड़ंग—(सं०) बिलकुल नंगा, नंगे शरीर ।
नगंदे—(सं०) रजाई या इसी प्रकार के मोटे वस्त्रों के लिए दी जाने वाली सिलाई ।
नड़ान—(सं०) ननद ।
नड़्त्तर—ननद का लड़का ।
नथोगा—(सं०) जिसको माप तोल का ज्ञान न हो ।
ननौहरा—(सं०) पति का नाना ।
नमूंएं—(सं०) गलगल ।
नरेढ़ना—(क्रि०) अंगड़ाई लेना ।
नरेल—(सं०) नारियल ।
नलोसू—(सं०) नमकीन पानी रखने के लिए लकड़ी का बनाया गया बर्तन ।
नसवाल—(सं०) बरामदे को बन्द करके बनाया गया कमरा ।
नसदरा—(विशे०) ऐसा व्यक्ति जिसे शर्म-लाज न हो, लज्जाहीन ।
नानसु—(सं०) पति की नानी ।
निबल—(सं०) स्वच्छ आकाश ।
नीरसू—(सं०) चन्दन इत्यादि घीसने का विशेष पत्थर ।
नौणी—(सं०) मक्खन ।
न्योंदरा—(क्रि०) विवाह आदि शुभ अवसरों पर सगे-

तेंहतू—(सं०) कड़ाई आदि खुरचने की छड़ी नुमां कड़छी ।

तोपणा—(क्रि०) ढूंढना, तलाश करना ।

त्वाड़—(सं०) उल्टी, कै, मतली ।

त्वाड़ना—(क्रि०) कै करना, मतली करना, उल्टी करना ।

त्वाह्ला—(विशे०) कम गहरा पानी ।

थ

थाले—(अव्य०) नीचे ।

थाह्म—(सं०) थम्ब, खम्बे ।

थिपू—(सं०) बड़ा रूमाल, जिसे मुख्य रूप से ग्राम्य औरतें काम-काज के समय सिर पर बांधती हैं ।

थेपचा—(विशे०) बेढंगे आकार का ।

थैणा—(क्रि०) रखना, संभालना ।

थोबड़ा—(सं०) मुखड़ा, मुंह, चेहरा ।

थोहल—सं०) ढेर, गंदी चीज़ों का ढेर ।

थोहड़ा—(विशे०) कम ।

द

दांदे—(क्रि०) दान्त लगाना ।

दांवां—(सं०) पगहा, पशु बांधने की रस्सी ।

ददौहरा—(सं०) पति का दादा ।

दसणा—(क्रि०) बताना, दिखाना ।

दवाल—(सं०) मरने के उपरांत दस दिन के लिए खाने-पीने की रस्म ।

दाकड़—(सं०) मैल की परत ।

देहल—(सं०) प्रवेश द्वार पर लगी चोखट का निचला भाग ।

दोहड़—(सं०) ऊन का बना ओढ़न ।

दोघरा—(सं०) पशु बांधने के लिए बनाया गया अलग स्थान ।

@tankrilipi parul arora mandi

द्वाला—(सं०) देवालय, मन्दिर ।

द्वात—(सं०) स्याही का बर्तन, दवात ।

ध

धूंखला—(सं०) धुम्रां ।

धमुक्कड़—(सं०) मुक्का ।

धाड़ा—(विशे०) शोर ।

धूड़—(सं०) धूल ।

ध्रुव्वल—(सं०) चावल से तैयार की गई देशी घटिया शराब ।

ध्वाणा—(क्रि०) धुलवाना, धोना ।

ध्याड़े—(सं०) दिन, समय (बहुवचन) ।

न

नंग-धड़ंग—(सं०) बिल्कुल नंगा, नंगे शरीर ।

नगंदे—(सं०) रजाई या इसी प्रकार के मोटे वस्त्रों के लिए दी जाने वाली सिलाई ।

नड़ान—(सं०) ननद ।

नड़ूत्तर—ननद का लड़का ।

नथोगा—(सं०) जिसको माप तोल का ज्ञान न हो ।

ननौहरा—(सं०) पति का नाना ।

नमूंएं—(सं०) गलगल ।

नरेढ़ना—(क्रि०) अंगड़ाई लेना ।

नरेल—(सं०) नारियल ।

नलोसू—(सं०) नमकीन पानी रखने के लिए लकड़ी का बनाया गया बर्तन ।

नसवाल—(सं०) बरामदे को बन्द करके बनाया गया कमरा ।

नसदरा—(विशे०) ऐसा व्यक्ति जिसे शर्म-लाज न हो, लज्जाहीन ।

नानसु—(सं०) पति की नानी ।

निंबल—(सं०) स्वच्छ आकाश ।

नीरसू—(सं०) चन्दन इत्यादि घीसने का विशेष पत्थर ।

नौणी—(सं०) मक्खन ।

न्योंदरा—(क्रि०) विवाह आदि शुभ अवसरों पर सगे-

संबन्धियों को सामूहिक रूप से ग्रामंत्रित करने जाना।

न्यहालणा— (क्रिo) प्रतीक्षा करना।

न्हारा—(संo) ग्रन्धेरा।

न्ह्वारी—(संo) सुबह की चाय, ब्रैक फास्ट।

प

पछतावा— (विशेo) पश्चाताप।

पछयाणणा— (क्रिo) पहचानना।

पछोलण—(संo) चावल की मांड से तैयार की गई सब्जी।

पतरोड़ु—(संo) कचालू के पत्तों से बनाया गया विशेष पकवान, जो इस प्रदेश में बहुत ही लोकप्रिय है।

पटड़ा—(संo) पटरा, लकड़ी का तख्ता।

पटरालणा— (क्रिo) चपत लगाना।

पत्याणा—(क्रिo) पुचकारना, प्यार करना, ग्रपनी ग्रोर मिलाना।

पटाकणा (क्रिo) पीटना, घूंसे देना।

परेथणा— (क्रिo) फि ल जाना, गिर जाना।

परोणा—(क्रिo) पिरोना।

परौहणा— (संo) ग्रतिथि, पाहुना।

परौल़—(संo) घर का मुख्य दरवाज़ा।

पल़ीता—(संo) दियासलाई, माचिस।

पल़—(संo) सफेद बाल।

पाछरना—(विशेo) बहकना।

पातर—(संo) पत्ते।

पाथर—(संo) पत्थर।

पारली—(ग्रव्य०) उस पार की।

पासे—(ग्रव्य०) किनारे, पास की।

पींघ—(सं०) झूला।

पीछ—(सं०) चावल की मांड।

पीसण— (क्रि०) पिसाई के लिए तैयार किया गया ग्रनाज़।

@tankrilipi parul arora mandi

पुठकणी— (विशे०) नटखट बच्ची, शरारती लड़की।

पुला—(सं०) घास का छोटा गट्ठा।

पुर—(स०) मंजिल विश्राम-स्थल।

प्रगड़—(सं०) सांझ का या सुबह का प्रकाश।

प्रेहेज—(क्रि०) परहेज करना।

प्रासा—(सं०) प्रकाश।

प्राह्होणा—(सं०) ग्रतिथि।

पेड़ु—(सं०) ग्रनाज रखने के लिए बांस का बनाया गया बड़ा बर्तन।

पैड़ी—(सं०) सीढ़ियां, पौड़ियां।

पोलड़ी—(सं०) विशेष प्रकार की जनाना चप्पल।

पौड़ा—(सं०) घर की ऊपरी मंजिल का बरामदा।

पौं-बांदणा — (क्रि०) पैर बांदना।

पौणा—(क्रि०) गिरणा।

प्होई—(सं०) दुल्हा-दुल्हन की ग्रारती उतारने वाली।

प्योका—(सं) पिता का घर।

फ

फसी—(क्रि०) फंसना, काबू ग्राना।

फफड़ा— (क्रि०) नखरा करना।

फिचड़ा— (सं०) ग्राँखों के किनारे जमा हुग्रा पानी ग्रौर मैल।

फीमड़—(सं०) सभी प्रकार के ग्रनाजों को उबाल कर बनाया गया भोजन।

फूकणा— (क्रि०) जलाना, भस्म कर देना।

फूखणा— (क्रि०) ग्राग से ग्रचानक जल जाना या स्वयं जलना।

ब

बंगां—(सं०) चूड़ियां।

बकड़वादी—(विशे०) ग्रधिक बकवास करने वाला, बातूनी।

बड़ीऊं—(सं०) बिनौला।

बछ्याण—(सं०) बिछावन।

बट्रू—(सं०) खमीरा डाल कर पकाई गई रोटियां ।

बटलुहीं—(सं०) शादियों इत्यादि में खाना पकाने के लिए काम में लाया जाने वाला कांसे का बर्तन ।

बेदण—(विशे०) दर्द, पीड़ा ।

बवेसू—(सं०) पति की बुआ ।

बल्हद (सं०) बैल ।

बागर—(सं०) हवा, वायु ।

बाछु—(सं०) गाय का बछड़ा ।

बाझीकट्ठे—(विशे०) बिना अर्थ के ।

बातू—(सं०) काले रंग का विशेष पत्थर जो दाल आदि पीसने के काम लाया जाता है ।

बावरू—(सं०) एक मीठा पकवान ।

बालू—(सं०) रेत ।

बास—(विशे०) गन्ध ।

बासणा—(क्रि०) बोलना, पशु-पक्षियों की आवाज़ें ।

बासतु—(सं०) नींव का पहला पत्थर ।

बासला—(सं०) हींग ।

बाहणा—(क्रि०) बीज बोना, चोट करना, मारना ।

बाहड—(विशे०) प्रारम्भ, शुरूआत ।

बाहलना—(क्रि०) पागल हो जाना, अधिक शरारती होना ।

बिलंगण—(सं०) कपड़े सुखाने के लिए बान्धी गई रस्सी ।

बीण—(सं०) बेणी ।

बीहण—(सं०) धनिया ।

बुजातत्रा—(सं०) वर यात्रा ।

बुधू—(विशे०) मूर्ख ।

बुरी (क्रि०) बहुत याद आना ।

बुसार—(सं०) हल्दी का आटा ।

ब्रंज—(सं०) गोभी आदि डाल कर पकाए गए विशेष प्रकार के चावल ।

ब्रीचड़ा—(सं०) बड़ियों के साथ पकाए गए मसालेदार चावल ।

बेदण—(विशे०) दर्द, पीड़ा ।

बेहड़ा—(सं०) राजा की दासियों का महल, बड़ा आंगन ।

@tankrilipi parul arora mandi

बैटकु—(सं०) बैठने के लिए बनाया गया कपड़े का बिछौना ।

ब्याली—(सं०) रात का भोजन, डिनर ।

भ

भखाणा—(क्रि०) जलाना, सुलगाना ।

भगणा—(क्रि०) भाग जाना ।

भड्डु—(सं०) मांस आदि बनाने के लिए कांसे का बर्तन ।

भलेखा—(क्रि०) धोखा लगना, ठीक पहचान न हो सकना ।

भाण्डे—(सं०) बर्तन ।

भावें—(अव्य०) चाहे ।

भाया—(सं०) सखि के लिए सम्बोधन शब्द ।

भास—(सं०) राख ।

भिख्ख—(सं०) दिन भर में एक समय केवल रोटियां ही खाना ।

भितका—(सं०) भीतर का, यहां जाति प्रथा का गहरा प्रभाव होने के कारण ब्राह्मण, क्षत्रीय, राजपूत भीतर की जाति के मानते हैं और हरिजन को बाहर की जाति कहते हैं ।

भूवका—(सं०) बौछार ।

भूभल—(सं०) गर्म-गर्म राख ।

भूल्ले—(क्रि०) भूलना ।

भ्रावजी—(सं०) भावज, देवर की पत्नी ।

भ्वार—(सं०) बुहार ।

भ्याग—(सं०) सवेरा ।

भ्यागड़ा—(सं०) सुबह के समय गाये जाने वाले गीत ।

भ्याखणा—(क्रि०) हैरानी में एकटक देखना ।

म

मंझ—(अव्य०) बीच ।

मंझभरा—(अव्य०) बीच में ।

मंझआड़ा—(सं०) बांस की चीज़ें बनाने वाला ।

मकोल—(सं०) चूना ।

मड़भख्ण—(सं०) मुर्दों को खाने वाली स्त्री, एक प्रकार की गाली।

मड़ा—(सं०) मुर्दा।

मठ्ठा—(सं०) लड़का।

मधरा—(सं०) विशेष प्रकार की स्वादिष्ट सब्जी।

मधाणु—(सं०) दही लगाने का डंडा।

मरोड़ा—(क्रि०) मसलना, मरोड़ना।

मरेखणा—(क्रि०) टेढे मेढ़े होना।

मल़ेख—(सं०) शिकवा, गिला।

मसां-मसां—(विशे०) कठिनता से।

मसाकड़ा (सं०) केंकड़ा।

मलेड़ा—(सं०) खमीरा।

मांजरी—(सं०) तृण की बनाई हुई बिछावन।

मांजा—(सं०) चारपाई।

मांडणा—(क्रि०) पांव से गूंथना।

मांदला—(सं०) आंगन के बीच रखा गया तुलसी के पौधे का गमला।

मिनके—(सं०) मेंढक।

मूंजो—(सर्व०) मुझे।

मुकाणा—(सं०) खत्म करना, समाप्त।

मूछणा—(क्रि०) गूंथना।

मुतरना—(क्रि०) पेशाब करना, मूत्रणा।

मुनारा—(सं०) शकल, सूरत, चेहरा।

म्रोह्लण—(सं०) पकी हुई सब्जी।

म्ल्यूड—(सं०) मैल का ढेर।

म्यालठ—(सं०) आग से जलती हुई लकड़ी।

मलौहरा—(स०) पति का मामा।

र

रजीपुजी—(विशे०) तृप्त हो कर।

रड़काट—(सं०) बेमतलब घूमने वाला।

रडाणा—(क्रि०) चिल्लाना।

रमड़े—(विशे०) बिमारी से आराम मिलना।

रांड—(सं०) विधवा।

@tankrilipi parul arora mandi

रागस—(सं०) राक्षस।

रानक—(सं०) बड़े मेंढक।

राहड़—(क्रि०) मसालों का घी में भूनना, सब्जी को घी में पकाना।

रिढ़ी—(सं०) पहाड़ी।

रिड़कना—(क्रि०) बिना मतलब के घुमना।

रेल़—(सं०) बिमार के लिए पकाई गई पीने के लिए मूंग की दाल।

ल

[illegible]कोली—(सं०) बिना खिड़की की छोटी अलमारी।

[illegible]टींघा—(क्रि०) लंगड़ाते हुए चलने की क्रिया।

[illegible]ोखणा—(क्रि०) मूर्खता से देखते ही रह जाना।

[illegible]पोचणा—(क्रि०) गुप्त रूप से किसी चीज़ को खाना।

[illegible]ाड़ा—(सं०) पति, वर, दुल्हा।

[illegible]प—(सं०) चमच।

लीरां—(सं०) चिथड़े।

लिंघटा—(सं०) पूंछ।

लुकणा—(क्रि०) खुजलना।

लुगड़ा—(सं०) दूध मिले पानी में पकाए गए चावल।

लुची—(सं०) मैदे की बनी विशेष कागज़नुमा चपातियां जो घी में बनाई जाती हैं।

लूण—(सं०) नमक।

लेखणा—(क्रि०) काम-क्रीड़ा करना, सहवास करना।

लोसटी—(सं०) लाल रंग की मिट्टी, जो प्राय दिवार पर पोती जाती है।

लोहणा—(क्रि०) उतारना।

लोहाखणा—(क्रि०) हैरानी में एकटक देखते रहना।

लौंग—(सं०) नाक पर पहनने का एक आभूषण।

ल्याओणा—(क्रि०) लाना।

ल्याणी—(सं०) आंगन साफ करने वाली।

ल्वाही - क्वाही—(अव्य०) उतराई और चढ़ाई।

ल्हीखा—(सं०) जूं के अण्डे।

ल्हुखणा—(क्रि०) छुप जाना, गायब होना।

ल्हेसण—(सं०) किसी वस्तु पर लेपन किए जाने वाला द्रव्य पदार्थ।

व

वान—(सं०) खुला बरामदा।

स

संगड़ा—(विशे०) तंग, सकीर्ण।

संगाह—(सं०) सीढ़ी, पौड़ी।

सकोणा—(क्रि०) सूखाना।

सगड़—(सं०) अंगीठी।

सगोतरू—(सं०) बैंगन।

सगोती—(सं०) मैंदे से बनी चपाती जिसे यहां विशेष ढंग से तैयार करते हैं।

सटणा—(क्रि०) गिराना।

सतोकड़—(सं०) सदा सोये रहने वाला।

सतुंनिंधिरा—(सं०) आधी नींद से जागा हुआ।

सबेला—(अव्य०) सायंकाल।

सरग—(सं०) आकाश।

सरतोड़ा—(सं०) बिन व्याही पत्नी से उत्पन्न लड़का।

सलेखम—(सं०) श्लेषम्, रेशा।

सलुणा—(सं०) स्वादिष्ट नमक जिसे ग़रीब लोग सब्जी की जगह प्रयोग करते हैं।

सलोणा—(विशे०) सलोना, सुन्दर।

ससतोणा—(क्रि०) चैन की सांस लेना, विश्राम करना, थकान दूर करने के लिए आराम करना।

@tankrilipi-parul-arora-mandi

सांघा—(विशे०) चिल्लाहट, जोर से बोलना।

साक—(विशे०) रिश्ते-नाते, सम्बंधी।

साउगी—(अव्य०) साथ।

साफा—(सं०) पगड़ी।

साल़णा—(क्रि०) बिछाना, पलस्तर करना।

सालूणा—(सं०) सब्जी।

सालू—(सं०) लाल रंग का दुपट्टा।

सिखणोत्रु—(सं०) सीखने वाला, किसी काम को सीखने वाला बिल्कुल नया विद्यार्थी।

सिरकी—(सं०) बांस की तिल्लियों से बना दरवाजे पर लटकाए जाने वाला पर्दा।

सीडा—(सं०) पानी में उबाल कर बनाई गई गेहूं की कचौड़ियां।

सीढ़ि—(सं०) मृतक के लिए बनाई गई अर्थी।

सील—(सं०) छोटी शिला, पत्थर का समतल टुकड़ा।

सुकपाल—(सं०) वर के लिए बनाई गई खुली पालकी।

सुकीरा—(विशे०) सुखा हुआ।

सुखाला—(सं०) आसान।

सुझणा—(सर्व०) दिखाई देना।

सुथण—(सं०) जनाना सलवार जिसकी कटाई यहां विशेष ढंग से होती है।

सुमल़ा—(विशे०) ठीक।

सुल़टा—(विशे०) जो उल्टा नहीं हैं।

सुहाणा—(विशे०) सुहावना।

से—(सर्व०) वह।

सेओं—(सर्व०) वह, विशेष रूप से पत्नी पति के लिए इस शब्द का प्रयोग करती है। बड़े जनों के लिए आदर सूचक शब्द।

सेपूबड़ी—(सं०) मास की दाल से विशेष ढंग से तैयार की गई बड़ियां।

सेल़ा—(विशे०) ठंड, सर्दी।

सेला—(सं०) ऊन के मोटे-मोटे धागों से तैयार की गई दरी।

सोख़—(विशे०) प्यास।

सौकण—(सं०) पति की दूसरी विवाहिता।

सौखा—(विशे०) आसान।

स्वाड़—(सं०) घर के पास सब्जी आदि उगाने के लिए बनाई गई जगह।

स्यापा—(क्रि०) मातम करना, मरने पर रोने की प्रक्रिया।

स्याल़—(सं०) सर्दी ।

ह

हंघड़ना—(क्रि०) नींद लेना, सोना ।

हघ्वाह्‌लड़—(सं०) अधिक बार शौचादि करने वाला ।

ह्‌वारू—(सं०) कांसे का बर्तन विशेष ।

हा—(क्रि०) है ।

हाऊं—(सर्व०) मैं ।

हाक—(क्रि०) आवाज़ लगाना ।

हाकणा—(क्रि०) गिराना ।

हाकम—(सं०) स्वामी, पति, अफसर ।

हाख़—(सं०) एक आँख ।

हागणा—(क्रि०) लघुशंका करना ।

हांडणा—(क्रि०) चलना, चलते रहना ।

हासणा—(क्रि०) हँसना ।

हिणकणा—(क्रि०) जानवरों की आवाज़ पैदा करना ।

हिरख्याह्‌ला—(विशे०) ईर्ष्यालु ।

हिलणा—(क्रि०) हिलना ।

हीक—(सं०) छाती ।

हीरख़—(विशे०) ईर्ष्या ।

हीसणा—(क्रि०) बुझ जाना ।

हीलण—(सं०) भूकम्प ।

हेठ—(अव्य०) नीचे ।

हेसी—(सं०) शहनाईवादक ।

होच्छा—(विशे०) दकियानुसी विचार का आदमी, घटिया बात करने वाला ।

होतल़ा—(सं०) जो तुतला कर बोलता हो ।

होर—(अव्य०) और, अन्य ।

@tankrilipi parul arora mandi

शुद्धि-पत्र

क्रम	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१.	छ	1	उच्चा	ऊँचा
२.	छ	9	उपलब्धी	उपलब्धि
३.	4	15	या	और
४.	4	17	३, १५, १८०	५, १५, १८०
५.	5	4	बीचों-बीज	बीचों-बीच
६.	5	19	हमरीपुर	हमीरपुर
७.	5	19	कुल्लु	कुल्लू
८.	5	20	या	और
९.	7	2	भाषा-शास्त्रीयों	भाषा-शास्त्रियों
१०.	8	1	मण्डाली	मण्डयाली
११.	8	12	तराईयों	तराइयों
१२.	10	1	मण्डाली	मण्डयाली
१३.	12	15	णा	ण
१४.	13	22	चबुतरा	चबूतरा
१५.	14	4	इन	ये
१६.	14	5	आए देखे गए हैं	लाये गए हैं
१७.	14	10	तराज़ु	तराज़ू
१८.	15	15	बचारी	बच्यारी
१९.	15	19	लगूया	लगूरा
२०.	18	14	गाईया	गाइयाँ

क्रम	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१.	21	1	कढ्ढे	कट्ठे
२२.	21	24	एवे	एबे
२३.	21	24	वगते	बगते
२४.	22	2	उपर	ऊपर
२५.	22	21	में	×
२६.	26	8	प्रसन्नीए	प्रशंसनीय
२७.	26	13	काय	कार्य
२८.	27	4	को	में
२९.	27	11	साहित्यतिक	साहित्यिक
३०.	28	16	कुल्लु	कुल्लू
३१.	29	19	प्रसन्शनीय	प्रशसनीय
३२.	30	24	पुनरुथान	पुनरुत्थान
३३.	41	12	को	×
३४.	48	13	वद्य	वैद्य
३५.	59	15	इर्ष्या	ईर्ष्या
३६.	147	6	उच्चे-उच्चे	ऊच्चे-ऊच्चे
३७.	150	20	गुफिया	खुफिया

@tankri lipi parul arora mandi

पारुल अरोड़ा,
मकान क 138 / 5
पैलेस कॉलोनी,
मण्डी (हि.प्र)175001
9805379777

PARUL ARORA @TANKRILIPI
@tankrilipi parul arora mandi